

जवाहर-जीवनम्

(काव्यम्)

[जेलरु कृत हिन्दी-टीमोपेतम्]



रचयिता
रामशरण शास्त्री



सम्पादक :
ब्रह्मदेव शास्त्री



प्रकाशक :
सेवक-संघ, वरनाला (संगरूर), पंजाब

सर्वाधिकार लेखक के अधीन

प्रकाशक :

सेवक-सघ,

घरनाला (मगरूर), पंजाब

प्रथम संस्करण : २०००

वि० सवन् २०२३, शक सवन् १८८८

मूल्य .

सजिल्द : ७-००

अजिल्द : ५-००

मुद्रक

उद्योगशाला प्रेस,

किंगमधे, दिल्ली-६

आमुखम्

गुरुद्वार पण्डित रामारण जी शास्त्री ने जब एक दिन प्रकम्भान्
 आकर अपनी सर्वप्रथम काव्यकृति 'जवाहर-जीवनम्' की पाण्डुरिपि देखने को
 दी, तो उन्हें एक कविम्प में पाकर आश्चर्य ही हुआ। संस्कृत के एक विद्वान्
 के रूप में तो वे पहले से ही परिचित थे।

कोई व्यक्ति अपने प्रथम प्रयास में ही यदि दूध कोटि का काव्य—
 गाय-काव्य, शृंगार काव्य, महाकाव्य विज्ञान की क्षमता पा जाता है, तो यह
 मानना होगा कि उसमें एकाएक किसी नैसर्गिक प्रतिभा का उदय हुआ है,
 उसकी मानसिक स्थिति महत्मा उन्नीत हुई है, उसका चित्त किसी धार
 समाहित हो गया है, अथवा किसी महान् कर्मा या वेदना से उसका हृदय
 द्रवित होकर छन्दो में स्थापित हो उठा है।

गृह्य आन्मीक का सापस-हृदय भी कभी कर्मा विगलित हो छन्दो
 में प्रवाहित हो उठा था। वेदना का ब्रह्मी पुण्य प्रतपन आदि-काव्य के नाम
 से आस्तात हुआ। निश्चय ही काव्य, कला अथवा सगीत का उन्म मुक्त या
 विनास की भूमि नहीं, वह वेदना की मर्मस्पर्शी ही है।

प्रस्तुत काव्य की प्रेरणा भी कवि की स्वीकारोक्ति के अनुसार कोटि-
 कोटि भारतीयों के हृदय-हार, राष्ट्र के नरुंधार और ममस्त विश्व के परम-
 प्रिय, लोक-नायक प० जवाहरान नेहरू का एकाएक निरोपान और उज्ज्वल
 कवि-नाम की पीछा ही है।

भारत का जो एक महायुग अभी-अभी पार हुआ है, उसने महामा
 गांधी, भगवान् विनय, स्वामी दयानन्द, रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानन्द,
 प० मदन माहून मानवीय, विश्वकवि रवीन्द्र, बागी धरविन्द, देग रत्न राजेन्द्र,
 राष्ट्र-मण्डक लीहपुम्प पटेल, अनुपम सेनानी मुनायचन्द्र बोस आदि जैसे
 बनेक पुण्य श्लोक विभूतिया अवतरित हुईं। इन अनेक नामों के साथ जन-
 प्रिय पण्डित जवाहरान नेहरू का नाम भी उज्ज्वलतम नक्षत्रों की ही भाँति
 इतिहास के पृष्ठा पर उदा दिपना रहेगा। ऐसे पुण्य चरितों को अपने समर्थ
 स्वर, सगीत और भाषा में गाकर कौत-मा व्यक्ति घन्य न होगा ? ऐसी
 पावन स्पृहा वाले गायक, जिनकी कृतिषों में हम अपने युग-युद्धों का दर्शन

और सान्निध्य प्राप्त कर सकते हैं, अवश्य ही हमारे आदर और प्रेम के पात्र रहेंगे ।

'जवाहर-जीवनम्' का गायक अपने प्रथम प्रयास में ही ऐसा सुन्दर, प्राञ्जल और प्रौढ काव्य देने में समर्थ हुआ है, इसके लिए वह स्नेह और धन्यवाद का पात्र है । उसका सम्बन्ध राष्ट्र के प्रति पुनीत भावना, सस्कृत के प्रति एकान्त निष्ठा और अपने चरित नायक के प्रति असीम श्रद्धा है । काव्य के (तथा कथित) उत्तम गुणों—छन्दो, अलंकारों, चमत्कारों की ओर उनका कोई विशेष आग्रह नहीं दीखता और सम्भवतः इसीलिए उसकी काव्य कृति में सरल सवेदन-शीलता, सहज प्रेषणीयता और निर्बाध रसोपलब्धि अकुण्ठित रूप में विद्यमान है । जो सुधी जनो की सूक्ष्म दृष्टि काव्य के स्थल विशेषों की भाषितता, विदग्धता, अलंकारिता और अर्थ गरिमा तक भी अवश्य जायेगी, ऐसा विश्वास है और काव्य के उच्च गुणों का प्रस्तुत कृति में अभाव है, ऐसा भी नहीं कहा जा सकेगा ।

यहाँ 'जवाहर-जीवनम्' काव्य का सर्वांगालोचन मेरा अभीष्ट नहीं है और न मैं इसके लिए सक्षम ही हूँ, किन्तु पाठकों के दिग्दर्शन मात्र के लिए इसके कुछ मार्मिक स्थलों सन्दर्भों का उल्लेख कर देना उचित समझता हूँ ।

'जवाहर-जीवनम्' में कवि धर्म और सस्कृति के पवित्र पृष्ठाधार पर पण्डित नेहरू की जीवन यात्रा अंकित करता है । इसमें नेहरू परिवार के पूर्व-पुरुषों का काश्मीर से दिल्ली आगमन पश्चात् आगरा-प्रयाग में उनका प्रवास, ५० मोतीलाल जो का वर्चस्व, आनन्द-भवन वर्णन, जवाहर-जन्म आदि से लेकर उनके महा प्रस्थान तक की घटनाओं का रोचक, इतिवृत्तात्मक चित्रण है ।

कवि की रचना-शैली पर वाल्मीकि-ध्यास जैसे आप्त कवियों का ही प्रभाव विशेष रूप से लक्षित है और काव्य का अधिकांश उन्ही की आप्त शैली में, अनुष्टुप छन्दों में प्रणीत हुआ है । हाँ, कहीं-कहीं काव्य का रूप महाकवि कालिदास और वाण की रागिमा में भी स्नात होकर निकला है—और वहाँ वह अर्पित कमनीय हो उठा है ।

स्थल-विशेष पर कवि के भाव स्वतः ही अनुष्टुप की लघु सीमा को ध्वन्यवृत्त कर अपने अनुरूप समर्थ भाषा और अभिव्यक्ति का विस्तार पा गया है । इन स्थलों पर कवि का रूप 'हर्ष चरित' के राजीवदान एव 'कादम्बरी' के कल्पनावन के मत्नीय कवि वाण के समान ही अपना वैभव पा गया है ।

इस सन्दर्भ में 'कमला-परिणय', 'इन्दिरा प्रियदत्तिनी' और 'स्वर्गारोहणम्' के अध्याय द्रष्टव्य हैं ।

काव्य के प्रारम्भ में मगलाचरण के रूप में भारत-माता की वन्दना करता हुआ कवि इसकी सम्पूर्ण आध्यात्मिक, प्राकृतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और राजनैतिक विभूतियों को नमन करता है । 'जवाहर-वन्दनम्' का उत्तरार्द्ध बहुत ही सुन्दर कविता है ।

इसी प्रकार 'काश्मीर-सुपमा' की कुछ पक्तियाँ सचमुच ही काव्य की नैसर्गिक शोभा से मण्डित हो उठी हैं —

“ वहन्तमनिलैर्मन्दैर्दहन्त मदनानलैः ।
 पूजितं पुष्पयार्णवश्च केकी कोकिल-वृजितम् ॥
 रम्योद्यानैः पयोयानैर्गानैस्तानैश्च गूजितम् ।
 फल फुल्लैश्चलदलैः मलिलै कल-कलायितम् ॥ ”

और लगता है—निम्नलिखित कुछ पक्तियाँ जैसे कवि-कुल-गुरु कालिदास की उपमा-समृद्ध निरुपम पक्तियों से उपमित होने की आकुल-उत्कण्ठ ही रही हो :—

“ शूर-गौरव-नीरं हि गौर-वाटीर-वीरभम् ।
 शुभ्रं क्षीराग्नि-हियक्षीरं हंसं मानस-तीरजम् ॥
 स्वल्प-बुद्धिरहं जातो लोपने चातिदुस्तरे ।
 परमत्राफलोऽप्येवं भविष्यामि प्रशंसितः ॥
 चरित्रगौरवेषु च प्रयासः सकलो मम ।
 दन्तभंगोद्दिनागानां श्लाघ्यो गिरि-विदारणे ॥”

जवाहर-जन्म की कथा एक जन-श्रुति पर आधारित है । इस प्रसंग में कवि ने बड़ी ही कुशलता से एक ब्रह्मगीत तपस्वी का उत्क्रमण और श्री जवाहर के रूप में उसका अवतरण अक्तिन किया है :—

“जातो जवाहरो योगी राजग्रह-समन्वितः ।
 मुक्तारनैः (मोती लालैः) ममुदभूतो मणिरूपो जवाहरः ॥”

प० मोतीलाल नेहरू और स्वर्णा रानी का राजा दिनीप और मुदक्षिणा के रूप अवन भी बहुत ही समीचीन है । कवि ने वाग्मिदि, व्याम, पालिशम प्रभृति महारवियों द्वारा निर्दिष्ट धार्मिक भर्मादाओं का पुनरागमन

कर अपने लोक नायक के प्रादुर्भाव को कठिन तपस्वर्या और पुण्य सचय का ही फल उदघोषित किया है —

“ गुरोर्धेनु वशिष्ठस्य दिल्लीपो नन्दिनी यथा ।
अहनिशमन्वगच्छन्मोतीलालस्तथैव हि ॥

प० नेहरू का बाल्य जीवन जिस धार्मिक और सांस्कृतिक पृष्ठ भूमि पर समृद्ध हुआ—उसका उल्लेख करने हुए कवि ने लिखा है

जानो जगद्गुरुऽस्माक प्रियो विरय प्रकाशक ।
कृतोपरीत सस्कार धारणं सम्भार धारक ॥

पर माता स्वरूपा तु जगद्गुरु-परायणा ।
गमा नयति ग्नातार्थं ससगार्थं दिने दिने ।
प्रभु भक्ति रता नि य दान पुण्य व्रता शुभा ॥”

राष्ट्र शोक' अध्याय में कवि अपनी तीव्रतम सचेदना के सघात में जैसे घूर्णनाव से उत्प्रेरित हो एक अकल्पित ऊचाई पर पहुँच जाता है। उसने सभी पूर्वापह सभी वास्थाएँ निष्ठाएँ विखर गयी हैं। वह जैसे अपने समस्त धार्मिक साम्प्रदायिक सामाजिक और जातीय पक्षपात के शृङ्खल से मुक्त एक निष्पक्ष दृष्टा साधी और भोक्ता के रूप में एक महा विभीषिका का लोमहृषक चित्र आत रहा है—यहाँ उसका स्वर एक रम सिद्ध कवि का है और वह महानायक की भाषा बोल रहा है —

हा पुत्र । पुत्रि । क्वयि स्व हा धावनाथ । पादिमाम् ।
यद् तान । स्वमा । मात वर गता मम यान्धरा ॥
रक्ष मां पादि मां वृद्धां दीना शरदमागताम् ।
गुरुणाभवतासार्था दीराणामपि वेदिनाम् ॥
नागद्वारे गुरद्वारे श्रद्धाभक्ति समन्विताम् ।
गिरिना मरिचद्वु चापेतामूपावुपागिराम् ॥

..

किं शोको दीन पावोऽपि किं धर्मोऽधर्ममाधिन ।
किं पन्थ कुपथ पात विगीशोऽनीशानां गत ॥
किं राम हृत्त गुरो सुदन्वीर्यद्वारा गिरा ।
इको गुदमन्द गर्पे दुराचार प्रवर्तका १ ॥

‘स्वर्गारोहणम्’ में कवि की वेदना चरम परिणति पर है। दिन्ती से दूर रहने हुए भी जैसे उसने अपनी अन्तर्दृष्टि में सम्पूर्ण दृश्यावली का प्रत्यक्ष किया है और जैसे लक्ष लक्ष हृदयों में विरोधा दृशा, उसने उस परम दुःख को आत्ममान् किया है। यहाँ उसकी नेत्रनी सर्वाधिक घन्य हुई है। उसका कविमानस शोक-मकुल मानव लोक में बटकर उस दिव-लोक की भी परिदृशा करता है, जो मानव-बण्डों की समवेत बन्दना-स्वर में स्पृष्ट हो अधु-पुष्पों की वर्षा करता है और जहाँ करण-कानर मेघों का अन्तर एक मुद्-गभीर छदन स्वर में गूँज उठा है :—

“ जवाहरोऽमरो नित्यं पितृव्योऽप्यमरोऽस्मि वै ।
इति घोषमृगैर्देवैर्वर्षणं त्वष्ट्रं कृतम् ॥
आश्रामनाथं लोकाणां मत्तिलास्युज्ज्वलं कृतम् ।
मेवैर्गैर्जनव्याजेन नादो रोदनजः कृतः ॥”

‘अद्वाञ्जनय.’ में विश्व के मनोपियों, चिन्तकों, नेताओं और महापुरुषों के निदलन श्रद्धा मद्गद् उद्गार हैं, जो स्वयं अमर वाच्य के अन्त हैं। कवि ने उन्हें मात्र अपनी भाषा का शृंगार बर्णित कर मम्मूख रखा है।

कोई भी महत्चरित स्वयमेव महाकाव्य होता है और उसका सम्यक्-रूपेण पिनेरा भी कोई महाकवि ही हो सकता है। मुद्-मन्नद और व पाण्डव-सैन्य-ममूह के बीच मशय-विमूढ अर्जुन को भगवान् कृष्ण ने क्या उपदेश दिया, इसका अभिज्ञान और व्याख्याता महर्षि व्यास जैसे व्यक्ति ही हो सकते हैं। इसी प्रकार, पण्डित नेहू जैसे चरित का बाह्य आचरण और ऐतिहासिक घटनाओं का चित्रण उनका दुष्कर न भी हो, किन्तु ऐसे व्यक्ति के आन्तर जीवन का अन्त उनका मुख भी वही है। उसी स्वयं की निन्ती ‘मेरी कहानी’ की मार्मिकता महान्-मे महान् कवि के लिए भी स्वर्ग की वस्तु है। ऐसा मजन वाच्य विश्व साहित्य में भी कितने विरल हैं! तो, इस दृष्टि में ‘जवाहर-जीवनम्’ का मूल्यांकन कवि के प्रति अग्याय होगा। वह हमारे अभिनन्दन का पात्र इसलिए भी है कि वह इस साधु प्रयाग में अप्रसर हुआ है और अप्रत्या-शीत रूप में मजन भी।

आना है, कवि का यह श्रद्धा-पुष्प गुरुजनों एवं गृहद्वारों को जवस्य ही पुनरित करेगा और ममृत्त-माहित्य के नन्दन-वन में उसमें इस निधु-उन्मेष का मधुर आनाक सदा अम्तान रहेगा ! शीत शम्

दिन्ती,

वातिक पूर्णिमा, २०२३ वि०

विषय-सूची

विषय		पृष्ठ
ग्रामुखम्	...	३
आशीर्वादाः	...	१०
सम्पत्तयः	...	११
आत्म-निवेदनम्	...	१३
सादर-संगर्षणम्	...	१६
जवाहर-जीवनम्		
१. वन्दे भारत-मातरम्		३
२. गान्धेयकम्	..	६
३. जवाहर-वन्दनम्	.	७
४. अवतरणिका	८
५. आनन्द-भवन-वर्णनम्	...	१४
६. जवाहर-जन्म		१७
७. बाल्य-वैभवम् प्रवृत्तयश्च		१८
८. कमला-परिणयः	..	२२
९. फारमोर-सुपमा	...	२६
१०. स्वराज्यान्दोलनम्	...	३६
११. जयतु नगरे	...	४०
१२. आहुतय		४४
१३. विजय-पर्व		४६
१४. प्रधान-मन्त्रिन्वम्		४६
१५. राष्ट्र शोक	.	५१
१६. कर्णधारः	.	५५
१७. स्वर्गरोहणम्	...	६०
१८. इन्दिरा प्रियदर्शिनी		६७
१९. विश्वात्मा	...	७२
२०. पद्माम्बुजलयः	..	७७
२१. मन्य-सारः	..	८१

परिशिष्टम्		पृष्ठ
१ ग्रन्थ-निर्माण-वृत्तम्	...	८४
२. विञ्चिदात्म-परिचयः	...	८६
३. आभार-प्रदर्शनम्	...	८६

चित्र-सूची

१. सादर-समर्पणम्
२. नेहरू-बाल दिवस
३. उपनीतो जवाहर
४. मोतीलालो नेहरू
५. कमला-इन्दिरा-जवाहरदत्त
- ६ गांधी-जवाहरी
- ७ कॅनेडी-जवाहरी
- ८ शान्ति-नेतार
- ९ अन्तिम-दर्शनम्
- १० महयोगी महानुभावा
आवरणम्



कुछ सम्मतियाँ

श्री रामशरण शास्त्री जी द्वारा लिखित "जवाहर-जीवनम्" नामक संस्कृत काव्य के कतिपय महत्वपूर्ण स्थलों का मैंने निरीक्षण किया। प्रस्तुत काव्य राष्ट्रनायक स्व० श्री जवाहरलाल नेहरू के जीवनचरित के आधार पर लिखा गया है। मुमगुर शैली और प्राजल भाषा ने यह बहुत ही प्रशंसनीय प्रयास किया है। उन्हें इस प्रयास के लिए बधाई देना है।

डा० मंडन मिश्र,

दिल्ली

महामंत्री, अ०भा० संस्कृत साहित्य-सम्मेलन एवं

६ अगस्त, १९६६

निर्देशक, अ०भा० संस्कृत-विद्यापीठ, दिल्ली



मैंने श्री प० रामशरण शास्त्री का लिखा "जवाहर जीवनम्" नामक ग्रन्थ पत्र-पत्र पढ़ा, चित्त प्रसन्न हुआ। श्री जवाहरलाल जी का चरित्र भरल संस्कृत गद्य-वचनों में निखकर शास्त्री जी ने संस्कृत भाषा की तो सेवा की ही है, देश की सेवा भी की है, इस पुस्तक को पढ़कर संस्कृत के छात्र भी प्रेरणा प्राप्त कर सकते हैं। आशा है यह पुस्तक सम्मान प्राप्त करेगी।

दिल्ली

परमेश्वरानन्द,

११ ८-६६

महामहोपाध्याय—साहित्य-व्याकरणाचार्य



मैंने श्री प० रामशरण शास्त्री-विरचित संस्कृत काव्य "जवाहर जीवनम्" का अनुशीलन किया। राष्ट्र-नेत्रा स्वर्गीय जवाहरलाल नेहरू के चरित्र को महाकाव्य की शैली से प्रस्तुत करने वाला यह ग्रन्थ बड़ी मनोहारी शैली में लिखा गया है। मुझे और सरल संस्कृत में पठित नेहरू का यह जीवन-चरित्र संस्कृत-प्रेमियों को अवश्य ही रचिवर होगा, इसमें सन्देहावकाश नहीं है। इन दोनों के साथ स्थान-स्थान पर प्रवाहमयी प्राजल संस्कृत गद्य का भी इनमें प्रयोग है, जो चरित्र-वर्णन तथा विशिष्ट प्रसंग-वर्णन में शीघ्र उतारन कर देता है। मुझे विश्वास है कि विद्वत्समाज में "जवाहर जीवनम्" का सम्मान होगा। इसके द्वारा संस्कृत भाषा के प्रचार में भी योग मिलेगा।

रिजयेन्द्रनाथ,

दिल्ली १०-८-६६

रीडर, हिन्दी-विभाग,

दिल्ली-विश्वविद्यालय



सत्यमेव जयते

शुभाशीर्वादाः

राष्ट्रपति भवन

नयी दिल्ली-४

दिनांक १३ अगस्त, १९६६

प्रिय श्री शास्त्री,

आपका पत्र मिला, मुझे यह जान कर प्रमन्नता हुई कि आपने हमारे स्वर्गीय प्रधानमन्त्री श्रीजवाहरलाल नेहरू के सम्बन्ध में श्री "जवाहर-जीवनम्" नाम का संस्कृत काव्य लिखा है और उसे आप प्रवाहित करने जा रहे हैं। मुझे इसमें संदेह नहीं कि आपके काव्य का संस्कृत जाननेवाले लोगो द्वारा विस्तृत अध्ययन होगा। शुभ कामनाओं सहित,

भवदीय,

स० राधाकृष्णन्

•

उपराष्ट्रपति, भारत, नई देहली

अगस्त २२, १९६६

प्रिय महोदय,

आपका पत्र दिनांक १९ अगस्त, १९६६ का प्राप्त हुआ, धन्यवाद। मुझे यह जान कर खुशी हुई कि आपने स्व० प्रधानमन्त्री श्रीजवाहरलाल नेहरू के जीवन पर संस्कृत काव्य लिखा है। मैं आपके काव्य की सफलता के लिए हार्दिक शुभ कामनाएँ भेजता हूँ।

—जाकिर हुसेन

•

२८ अक्टूबर, १९६६ ई दिन शुक्रवार को श्रीमान् कविरत्न पण्डित रामशरण शास्त्री जी ने श्री "जवाहर-जीवनम्" पुस्तक की टाइटिल लिपि दिखायी जिसको पढ़ कर आपके विशेष गुरुपार्थ पर हर्ष हुआ। आशा है देश विदेश के मनीषी जन इसका हार्दिक अभिनन्दन करेंगे।

स्वामी अच्युतानन्द, परमहंस, उदासीन

गीता भवन—बरनाला

•

श्री रामशरण शास्त्री ने नेहरू जी पर सस्कृत में बुद्ध पद्यमय रचना है। मैंने कही-नही से उगे देना है। अच्छा प्रमाण मुबोध सस्कृत में किया मुझे विद्वान्त है कि इस रचना का आदर होगा। मैं शास्त्री जी के प्र. को बधाई देता हूँ।

नई दिल्ली,
१०-८-१९६६

प्रभाशपीर शास्त्री
एम० पी०

भारत के भूतपूर्व प्रधान-मंत्री पंडित श्री जवाहरलाल जी की जीव-मस्कृत में लिख कर प्रकाशित करने का श्री रामशरण शास्त्री जी का उच्च श्लाघा-योग्य है। इस आदि कात की भाषा की उन्नति का यह पग आपव योग्यता प्रकट करता है।

श्री मैथी साहित्य,
८ आश्विन, २०२३ वि०

श्री सतगुरु
जगजीत सिंह जी महाराज

श्रीयुक्त प० रामशरण जी शास्त्री द्वारा विरचित 'जवाहर जीवनम्' नामक काव्य मुबोध एव सरल सस्कृत में पद्यमय देखने का अवसर मिला। यत्र तत्र अनुशीलन से सुन्दर मालूम हुआ। उनके साथ हिन्दी भाषा में अनुवा. भी उपादेय है। सस्कृत साहित्य की इतिहास-श्रु. खला में यह भी एक कड़ी का कार्य करेगा।

राजपण्डित डा० गोस्वामी गिरिधारीलाल शास्त्री
एम ए, पी एच डी ज्योतिषाचार्य
प्रधानपण्डित—धिरला मंदिर, नई दिल्ली ६

Raj Bhavan
Srinagar

19th Sept 1966

Shri Ram Sharan Shastri
Ramashram,
Barnala (Sangroor),
Punjab,
Dear Sir,

I am desired by the Governor Dr Karan Singh to send you his good wishes for your 'Jawahar Jeevanam' that you have written in Sanskrit

Yours faithfully,

sd/Jalal Din,

Secretary to the Governor

आत्म-निवेदनम्

या देवी सर्वभूतेषु विद्यारूपेण संस्थिता ।
नमस्तम्यै नमस्तम्यै नमस्तस्यै नमोनमः ॥

२८ मई, मन् १९६४ को राजकीय उच्चविद्यालय, बरनाला में प्रधाना-
ध्यापक श्री सदानन्द जी ने प्रातःकालीन दैनिक सभा (उम दिन की शोक-
सभा) में आपनिव आकस्मिक वज्राघात पर कुछ कहने का आदेश दिया ।
खड़े होते ही बचानक मेरे मुँह से यह पंक्ति निकली—“हर लिया तूने जवाहर
हे हरे ! अब घरा में क्या घरा है रह गया !” तब मैं निरन्तर मन में भाव
प्रगट करने की टींग उठनी रही । पर अवसर न मिलने से—“मन ही मन पीर
पिरीचै करै ।”

आगे प्रीम्नावकाश अगस्त मास में, छोटे भाई श्री राम लालजी शर्मा,
एम० ए० के यहाँ चैल (शिमला) में १५-१६ दिन ठहरने का अवसर मिला,
तभी अपने हादिक उद्गारों को इन शब्दों के रूप में प्रकट कर सका हूँ ।

अपनी शक्ति, सामर्थ्य, योग्यता एवं परिस्थिति को जानते हुए भी अप्र-
लिखित विशेष आपारों के आश्रय से छत्माहूँ दिखा रहा हूँ—

१—जिम महापुरुष ने अपने भाषण एवं लेखन की समस्त क्षमता राष्ट्र
की स्वाधीनता प्राप्त करने के लिए समर्पित करदी, उन्हीं के विषय में कुछ
लिखने में मैं क्यों सकोच करूँ ?

२—श्री प० जवाहर लालजी का पञ्जाब में सर्व-प्रथम बन्धन मेरे जन्म-
ग्राम जैतो में ब्रकाली-आन्दोलन में हुआ था, तभी स—बाल्य-काल से ही मेरे
मन में उनके प्रति श्रद्धा-भक्ति के संस्कार चले आ रहे थे ।

३—माँ-बाप, बहिन-भाई तथा प्रिय स्वजन बन्धुजों द्वारा तोतली बोली
बोलनेवाले अबोध बालकों के बोलने पर सब प्रबुद्ध लोग रुचिपूर्वक सुनते एवं
प्रसन्न होते हैं । इस आधार से भी मैं अबोध इस रचना-कार्य में प्रवृत्त हुआ
हूँ । पाण्डित्य या कवित्व का अधिकार न होते हुए भी पण्डितो तथा विज्ञ
कवियों के धरणों का उपासक बनने की मेरी हादिक अभिलाषा आरम्भ से ही
रही है ।

४—माँ सुर-भारती के नन्दन-वन में इधर-उधर घूम फिर कर वहाँ के सुभसौरभ पूरित सुमन-गुच्छों से पावन जीवन पवन को प्राप्त कहेँ तथा पूज्य समर्थ विद्वानों के चरणों में निवेदन कहेँ कि वर्तमान महा-पुष्टयो के जीवन-चरित्रों को अमर वाणी सम्कृत में लिखकर जहाँ उनके जीवन-प्रवाह द्वारा भावी समाज को सत्प्रेरणा के अञ्जलि श्रोत दें वही पर संस्कृत-पद्योनिधि में भी कुछ अमूल्य रत्न भर जायें । निरन्तर महा नदियों के सम्मिलन से ही रत्नाकर का लोक-उपकारी रूप बना रह सकता है । वेद, उपनिषद्, ब्राह्मण, दर्शन-शास्त्र, पुराण, स्मृति, धर्म, नीति, अर्थशास्त्र, ज्ञान-विज्ञान एवं अन्य महत्त्वपूर्ण ऐहिक तथा आध्यात्मिक मार्ग-प्रदर्शक विषयों का मूल-स्थान संस्कृत कल्प-वृक्ष ही है ।

पुराण पुष्टोत्तम भगवान् श्री रामचन्द्र जी के समकालीन अथवा बाद के ऋषि-महर्षियों ने उनकी अथवा उनसे सम्बन्धित कल्याण-प्रद गाथाओं की गरमू बहाकर, त्रिभुवन पावनी, मुहावनी, मनभावनी सरस सुर-भारती के चमत्कारों द्वारा ही विश्व को अमृत-कलश दिये । नन्द-नन्दन आनन्द-कन्द भगवान् श्री कृष्ण चन्द्र के पवित्र चरित्रों एवं तत्सम्बन्धी आख्यानों की कालिन्दी की शीतल मन्द मुगन्धित तरंगों की भगिमाओं का स्वरूप भी देव वाणी संस्कृत द्वारा ही आज तक ससार को त्रिविध-तापो एवं पंच-क्लेशों से मुक्ति दिला रहा है ।

महाभारत एवं अन्य पुण्यलोक ऋषि-महर्षि, भक्त, दूर-वीर, दानी नरेशों तथा पवित्र-चरित्र पतिव्रता वीरागनाओं के महिमा-रस की सुर-सरिता भी सुर-वाणी द्वारा ही बहाकर ऐहिक एवं पारलौकिक लक्ष्य-लाभ का मार्ग निर्देश किया गया है ।

अश्वघोष, कविकुल-गुरु कालिदास, वाण, भारवि, माघ, दण्डी, मम्मट, उद्वट, बंध्यट, पण्डितराज जगन्नाथ तथा अन्य प्रातर्वन्दनीय स्वनाम-धन्य महाकवियों ने गद्य-पद्य-मय प्रवाह से माँ सरस्वती की स्निग्ध ऊर्मियों के उत्तुंग वक्रान्तों से उद्विगत हितावह सौंदर्यों में न केवल भारत को ही अपितु विश्व के सहृदय मनीषियों को आकर्षण आह्लादित होने का अक्षय भाण्डार दिया है । यही नहीं, संस्कृत वाणी के समुद्र से अनेकों भाषाओं के घन-मण्डलों ने उठ-उठ कर विश्व के विभिन्न क्षेत्रों में सदा सुखद अमृत-वर्षा की है । तब फिर राम-मागधिक ऋषि-स्वरूप पण्डित-मण्डल भी इधर से उदासीन न रहे, यह भी मेरे प्रयास का निवेदन प्रकार एवं उद्देश्य है । रोप रही—दृष्टिकोण या विचार-माध्यम की दान । तो यह तो त्रिकात में भी असम्भव है । कुछ हितैषी गुरुजनों ने श्री प० अवाहरलायजी से धार्मिक, राजनैतिक तथा सामाजिक मत-

भेद होते हुए भी मुझे यथावगर सुभाव दिये, किन्तु उन मज्जनों में मेरा यही विनम्र निवेदन है कि -गिल्ली-डण्टे के खेल में रम मग्न बालक को द्वितीय माना पिता कई प्रकार के अवगुण बनाकर उससे निवृत्त होने तथा द्विनावह गृह-कार्य में प्रवृत्त होने को कहते रहते हैं। परन्तु वह बालक तो अपने खेल के घुन में ही मस्त-रमरीन रहना है। इसी प्रकार इस अपने खेल में मुझे आकर्षण है। पर, हाँ, मेरा यह उद्योग खेल होते हुए भी समाजघानी दृश्यसन जुए का खेल नहीं है।

मेरी इस रचना में व्याकरण, छन्द, अलंकार, गुण एवं अन्य काव्य-लक्षणों के अन्वेषी विद्वत् समाज को तो केवल निराशा ही मिलेगी। अन्त में एक बार पुनः पूज्य सहृदय वृद्ध विद्वत् समाज में शुभाशीर्वाद की कामना करते हुए, बड़े सकीचमें उनके चरणों में उपस्थित होने का माहस कर रहा हूँ, क्योंकि "खद्योतस्तु विकम्पते प्रचलितु मध्येऽनितेजस्विनाम्।" इति शम्।

नमोऽस्तु सर्वदेवेभ्यः

—रामशरण शास्त्री





परस्पर

“मैं इस यात्र के प्रति भी जागरूक हूँ कि मैं भी सभी की तरह उस अटूट शृंखला की एक कड़ी हूँ जो इतिहास के उपाकाल से युगो-युगो से चली आ रही है। यह शृंखला मैं तोड़ना नहीं चाहता क्योंकि मैं इसे धरोहर मानता हूँ और इससे प्रेरणा प्राप्त करता हूँ। अपनी इस इच्छा के साथ और हमारी महान सांस्कृतिक विरासत के प्रति अर्दाजलि के रूप में मैं यह अनुरोध करता हूँ कि मेरी मुट्ठी भर भस्मी इलाहाबाद की गंगा में प्रवाहित की जाय, जो गंगा में प्रवाहित होकर उम महासमुद्र में जाय, जो हमारे देश के पाँच पर्यारता है।”

—जवाहरलाल नेहरू

सादर-समर्पणम्



या देवी सर्वभूतेषु शक्तिरूपेण मम्यिता ।
शुद्ध-विद्या गुण घामा रमावत् रम्य मम्पदा ॥
वसानुवृत्ता कल्याणी सर्व-जीव मुखावहा ।
प्रधान मन्त्रिरूपेण देश पावन तत्परा ॥
कमला-जवाहराधारा मारा भारत-धारिणी ।
निरय मत्यगता कीर्तिरिन्दिरति गति प्रदा ॥
तस्यै ममर्प्येते चेतत् 'श्री जवाहर जीवनम्' ।
शास्त्रिणा रामपूर्वेण शरणेनातिभावन ॥

नेहरू-बाल-दिवस



क्षमा, प्रेरणा और वल्लभ की पवित्र मूर्ति, लेखक की पूज्य माता श्रीमती हरदेवी थडालु-सेवक पडोसी परिवार के बच्चों को गोद में लिये हुए।



श्रीमती इन्दिरा देवी, धर्म-पारमी विलास श्री मिलवती रामजी, लोक-सेवक औपधान्य, बन्नामा (बैठी हुई मायें) एण्डिज जी के जन्म-दिन पर बाल-दिवस के उपलक्ष्य में प्रेम में बच्चों को भोजन करानी हुई। आप गदा बच्चों तथा विद्वानों की सेवा में थडा-भक्तिपूर्वक तत्पर रहती है।

जवाहर-जीवनम्

•

वन्दे भारत-मातरम्

शख-चक्र-गदाधारामुज्ज्वला सौम्यरूपिणीम् ।
अमलाद्गुमलाभामा वन्दे भारतमातरम् ॥१॥
शखेन म्वर-मंयुक्ता, चक्रेण गति-शालिनीम् ।
गदया शक्ति-सम्पन्ना वन्दे भारतमातरम् ॥२॥
कमलै कोमला हृद्या हामिनी सुमनोहराम् ।
मुवामा च विकामागा वन्दे भारतमातरम् ॥३॥
गुण्या पुण्या शौर्यरूपा, दिव्या वन्द्या मुसकृताम् ।
लक्ष्मी मरस्वती दुर्गा वन्दे भारतमातरम् ॥४॥

अर्थ—शख चक्र, गदा, पद्म को धारण करने वाली, उज्ज्वल सौम्य रूप वाली तथा निर्मल कान्तिवाली भारत माता को नमस्कार करता हूँ ।

शख से वेदादि अनन्त शब्द ब्रह्मवाली, चक्र में सदा ही अनन्त गति-सामर्थ्य-सम्पन्न, गदा से अमिन शक्ति-युक्त भारत माता का नमस्कार करता हूँ ।

कमल में कोमल, हृदय को मुग्ध, प्रमन्न, मनोहर, मुवमना और खिले हुए अर्गोवाली भारत माता को नमस्कार करता हूँ ।

अच्छे गुणों वाली लक्ष्मी, पुण्यों वाली मरस्वती और शौर्य वाली दुर्गा, दिव्य, वन्द्य और श्रेष्ठ भारत माता को नमस्कार करता हूँ ।

मुजला मुफला शस्य-श्यामलामतिगौरवाम् ।
 सुमुक्ता-मणि-सम्पन्ना वन्दे भारतमातरम् ॥५॥
 ज्ञान-शौर्यं-चरित्रादियुवतं पुत्रैरुपासिताम् ।
 धृत्यादि-गुण-धर्मा हि वन्दे भारतमातरम् ॥६॥
 मुबुद्धा मुजिना स्वामिदयानन्दान्विता बुधाम् ।
 रामकृष्णविवेकादिरामतीर्थैः मुधाम्बुदाम् ॥७॥
 लाल-पाल-दयालैश्च राजेन्द्रैरतिरजिताम् ।
 सठाकुरा सपाटेला वन्दे भारतमातरम् ॥८॥
 मालवी-मोदमधुरा, टण्डनैरतिमण्डिताम् ।
 आज्ञाद-भक्त-दत्ता हि वन्दे भारतमातरम् ॥९॥
 मोती-जवाहरैर्ऋद्धा गान्धिना तिलकान्विताम् ।
 सारविन्दा स-मुभापा वन्दे भारतमातरम् ॥१०॥
 अनेक-शास्त्र-सयुक्ता वेदधर्मानुमोदिताम् ।
 मुमाहित्या सेतिहासा वन्दे भारतमातरम् ॥११॥

अर्थ—अच्छे जल, पत्र और खेती से हरित, अति प्रतिष्ठित, अच्छे मोती-मणियों से सम्पन्न भारत माता को नमस्कार करता हूँ ।

ज्ञान, शौर्य, चरित्रादि युक्त, पुत्रों से उपासित, धृत्यादि गुण-धर्म-सम्पन्न, भारत माता को नमस्कार करता हूँ ।

भगवान् बुद्ध, जिन, स्वामी दयानन्द मे गौरवान्वित, आत्मज्ञान से आलो-जिन, रामकृष्ण परमहंस, विवेकानन्द तथा रामतीर्थ के अप्सृत से अभिविचित भारतमाता को प्रणाम करता हूँ ।

श्री लाला लाजपतराय, विपिनचन्द्र पाल, रवीन्द्रनाथ ठाकुर और वल्लभ-भाई पटेल मे पूर्ण शोभित भारत माता को नमस्कार करता हूँ ।

श्री प० मदनमोहन मालवीय जी के यज्ञ मे मधुर, श्री पुरुषोत्तमदास टण्डन जी से अलङ्कृत, श्री चन्द्रशेखर आज्ञाद, भक्तगिह और दत्त वाली भारत माता को नमस्कार करता हूँ ।

श्री प० मोतीलाल, जवाहरलाल, गांधीजी, निगल, सरविन्द और मुभापा जी की महानता मे सशुद्ध भारतमाता को नमस्कार करता हूँ ।

अनेक शास्त्र-सयुक्त, वेद-धर्मानुमोदित, अच्छे पाहित्य और इतिहास-युक्त भारत माता को नमस्कार करता हूँ ।

विज्ञोद्योगमहाभागैः राधाकृष्णन् महोदयै ।
 पूज्या दर्शनतत्त्वज्ञा वन्दे भाग्यमातरम् ॥१२॥
 शास्त्रिणा रक्नवीरेण धीरेणातिमनस्वना ।
 पूजितामजिता नित्यं वन्दे भारतमातरम् ॥१३॥
 मवस्तूरा मस्वरूपा मविजया स सरोजिनीम् ।
 सकमलामिन्दिरायुक्ता वन्दे भाग्यमातरम् ॥१४॥
 विनोवावामनेनात्र त्याग-वैराग्य-शोभिनाम् ।
 सर्वोदयेन-सन्तुष्टा वन्दे भाग्य-मातरम् ॥१५॥
 गंगा-मरुस्वती-पूता कालिन्दी-मुविभूषिताम् ।
 हिमालय-त्रिरीटा हि वन्दे भाग्यमातरम् ॥१६॥

अर्थ—महाभाग राधाकृष्णन् महोदय जैसे विद्वानों व सहयोग मे विश्व-
 वन्द्य, दर्शन-विद्या की आदि जननी भारत माता का नमस्कार करता हूँ ।

अति मनस्वी, धीर थी लाल बहादुर शास्त्री द्वारा पूजित और अनुशा से
 सर्वथा अजेय भारत माता को नमस्कार करता हूँ ।

माना कम्पूखा, स्वरूपरानी, विजयात्रयमी, सरोजिनी, कमला तथा इंदिरा
 जैसी मातृ शक्ति-युक्त भारत माता को नमस्कार करता हूँ ।

पूज्य वामनम्पी श्री विनोवा द्वारा त्याग-वैराग्य ने मानिन, सर्वोदय मे
 सन्तुष्ट भारत माता को नमस्कार करता हूँ ।

गंगा, मरुस्वती, यमुना से पवित्र और विभूषित, हिमालय के मुकुट वाली
 भारत माता को नमस्कार करता हूँ ।



श्रीगान्ध्यष्टकम्

मत्स्य-व्रत धर्म-रत अहिमा-धन-साधनम् ।
 विश्व-वन्द्य महात्मान गान्धिन प्रणमाम्यहम् ॥१॥
 समृद्धे गौरदेशेऽपि गत्वा कौपीन-धारिणम् ।
 धृतोपवस्त्रं सामान्यदेश-वेश-विभूषितम् ॥२॥
 समयमेनोपवासंश्च कृशमात्मवल परम् ।
 गौरेयैर्दुर्जय नित्य सत्याग्रह-परायणम् ॥३॥
 अन्ला-रामादि-भेदेषु, निर्भेद गतमत्सरम् ।
 दीनानाथ-महायार्थं सर्वथा विहितत्वरम् ॥४॥
 जातिवर्ण-विभेदाना नीचोच्चाना भयप्रदम् ।
 वैपम्य नाशयित्वा तु सर्व-जीवाभयप्रदम् ॥५॥
 बलेश हरिजनाना वै हरणार्थं दृढव्रतम् ।
 कृत्वा वाम तदा तेषु, तेषामुद्धार-तत्परम् ॥६॥
 विरला-वन्धुनदृशं श्रद्धा-भक्ति-ममन्वितम् ।
 उन्नेतु मुबुदुम्बं हि तेषा गृहमुपागतम् ॥७॥
 राष्ट्र-पितर विश्व-हित विरत जीवतापत ।
 ज्ञानवृद्ध सदाबुद्ध गान्धिन प्रणमाम्यहम् ॥८॥

अर्थ—मत्स्य-व्रत, धर्मरत, अहिमा-धन से साधनवान्, विश्व-वन्द्य श्री
 महात्मा गांधी का प्रणाम करता हूँ ।

समृद्ध इण्डिया में जाकर भी, भारतीय वेशभूषा, सामान्य बहुर और
 कौपीन को धारण करने वाल, समय से उपवासों से शरीर से निर्बल भी, बल-
 वान्, अग्रजों से दुर्जय, महात्मा-परायण, अन्ला रामादि भेदों से निर्भेद निर्मत्सर
 दीन भ्राताओं से महायत्न के लिए सर्वथा दीपना करने वाले नीच-ऊँच, जाति-
 वर्ण विभेदों से भयप्रद, विपमता को नष्ट करने सर्वजीव अभयप्रद, हरिजनो
 के बरतों का हरने के लिए दृढ़-व्रत, उनकी बरती में रह कर उनके उद्धार से
 लगे, श्रद्धा-भक्ति ममन्वित विरला बन्धुओं के अन्धे मुबुदुम्ब को उन्नत करने के
 लिए उसका भयन (विरला जाउग) में आत वाले, राष्ट्र के आध्य, विश्व हितपी,
 जीवा का सब प्रकार के बल दने में विरत, ज्ञान से वृद्ध तथा सदा आत्मा को
 जानने वाले महात्मा गांधी का प्रणाम करता हूँ ।

श्रीजवाहर-वन्दनम्

भारताराति-विध्वन-कारकं क्लेश-हारकम् ।
 कृष्णा-विजयाग्रज वीर कमलाकर-धारकम् ॥१॥
 जवा(पा) कुसुम-सकाश मोतीलालात्मज हरम् ।
 लाल स्वरूपा-सम्भूत वन्दे लाल जवाहरम् ॥२॥
 बाल-लील वृद्धशील यौवने जब-भावनम् ।
 धृतोत्माह कृतोद्योग वन्दे लाल जवाहरम् ॥३॥
 दीनाधीन विश्व-बन्ध सर्व-भूत-मुहूर्त्तमम् ।
 सत्याग्रह सत्यव्रत वन्दे लाल जवाहरम् ॥४॥
 सदा सदानन्द-कर अमदानन्द-हाकम् ।
 गौरैयानाचार-हर वन्दे लाल जवाहरम् ॥५॥
 बालाना शिशु-लीलाना पठता बल-शालिनाम् ।
 पितृव्य-पदवी-यात वन्दे लाल जवाहरम् ॥६॥
 जवाहरो जयत्वद्य बाल-सौम्य-विधायक ।
 हरो हरिजनोद्धारो रक्षक क्षण-दायकः ॥७॥

अर्थ—भारत के शत्रुओं के विध्वंसक, पाप हर, कृष्णा और विजया क
 अग्रज, कमला के स्वामी, जवा (पा) कुसुम के समान दीप्तिमान, मोतीलाल के
 दु ल हर गुपुन माता स्वरूपा के लाल श्री जवाहरलाल को नमस्कार करता हूँ ।

बाल-लीला प्रिय, वृद्धों के समान अनुभव-शील, यौवन में प्रगतिशील भावना
 वाले, उत्साही और उद्योगी जवाहरलाल को नमस्कार करता हूँ ।

दीनों के अधीन, विश्वबन्ध, सर्व जीव-प्रिय, सत्य-आग्रह और सत्यव्रत
 जवाहरलाल को नमस्कार करता हूँ ।

सत्पुरुषों को सदा आनन्द देने वाले, दुष्टों के सुख को हरने वाले, तथा
 अग्नेजों के अनाचार हर जवाहरलाल को नमस्कार करता हूँ ।

शिशु लीला करने वाले और अध्ययनरत बलशाली युवका के चाचा बने
 जवाहरलाल को नमस्कार करता हूँ ।

बाल मुनदाता, सर्व दु ल हर, हरिजनोद्धारक, रक्षक, आनन्ददाता जवाहर
 को जय हो ।

जकार तु जगन्नाथात् वासुदेवाद्धि वाक्षरम् ।
 हरं हरि-हरान्नीत्वा रक्षकोऽभूज्जवाहर ॥८॥
 गौरा हि राक्षसा नित्य पीडयन्ति महीमिमाम् ।
 दृष्ट्वा सुर-पुरं हित्वा रक्षकोऽभूज्जवाहर ॥९॥
 धृत्यादीन् धर्म-नियमान् मनुराज-निर्दिशितान् ।
 गान्ध्युपदिष्टान् गृहीत्वैव रक्षकोऽभूज्जवाहरः ॥१०॥
 गान्धी-गीता-रहस्य वै श्रुत्वाऽहिंसा प्रदर्शिते ।
 सत्याग्रह-महायुद्धे रक्षकोऽभूज्जवाहर ॥११॥
 रूसामेरिकनामभ्या वगैर्द्वय विभाजितम् ।
 जात विश्व-विनाशाय रक्षकोऽभूज्जवाहर ॥१२॥
 ब्रिटेना फ्रांसदेशीया मिश्रा युद्धाय तत्परा ।
 स्वेजास्ये विषये तत्र रक्षकोऽभूज्जवाहर ॥१३॥
 परीक्षणमाणविक माणव-विनाशनम् ।
 प्रतिक्षण रण मत्वा रक्षकोऽभूज्जवाहर ॥१४॥

अर्थ—जगन्नाथ से ज, वासुदेव से व तथा हरि-हर से हर वर्ण लेकर
 जवाहर भारत के रक्षक बने ।

अंग्रेज राक्षस नित्य इस भूमि को दुःखी करते हैं, यह देख सुरपुर को छोड़
 जवाहर भारत के रक्षक बने ।

श्री मनुराज-निर्दिशित, गौरी जी द्वारा उपदिष्ट, धृत्यादि धर्म-नियमों को
 ग्रहण कर श्री जवाहर भारत के रक्षक बने ।

अहिंसा-निर्दिष्ट सत्याग्रह के महायुद्ध में गांधी-गीता के रहस्य को सुन कर
 श्री जवाहर भारत के रक्षक बने ।

रूस और अमेरिका नाम के बड़े दुर्ग दो वर्ग विश्व विनाशक बन रहे थे,
 तब श्री जवाहर विश्व के रक्षक बने ।

ब्रिटेन, फ्रांस तथा मिश्र के लोग स्वयं नहर के विषय में युद्ध-तत्पर थे, तब
 श्री जवाहर विश्व-रक्षक बने ।

अणु शक्ति के परीक्षण को मानव-गन्तव्य-विनाशी तथा प्रतिक्षण मुझे-
 लादक जान श्री जवाहर विश्व-रक्षक बन ।

अथ गाथारम्भः

अवतरणिका

दिल्ल्यामतिविद्यालाया यावन रतिभावनम् ।
शासनमभवत्पूर्वं मुमुद प्रतिभावनम् ॥१॥
फर्स्वगियरस्तन राजामून्नय-नोचन ।
धृत्यादि-धर्मसम्पन्नः योग्य-वर्ग-विरोचनः ॥२॥
एकदा शुभ-वेलाया काश्मीर गतवानयम् ।
देशाटन ज्ञानवाना प्रण-रक्षण-लक्षणम् ॥३॥
अलौकिक हि मौन्दर्यं तत्रत्यमनिशोभनम् ।
दृष्ट्वाभूमोहित स्वर्ग्यं यथैन्द्र नन्दन वनम् ॥४॥
काश्मीर-मुपमा वक्तुमक्षमोऽस्मि समागत ।
अशेतापि किमश्विला शृ खला स्वर्गमन्तते ॥५॥
चतुर्दशाना विद्याना रत्नानामय गुन्दरम् ।
स्थान चानुपम गम्प पुष्पोदक-गगन्वितम् ॥६॥
नद्यद्रि-भरित भूरि, तटागोदर-भस्वितम् ।
उद्यानोद्रेक-हरितं कला-नीगल-पेक्षलम् ॥७॥

अर्थ—पहले अति विशाल दिली में प्रेम, मुक्त तथा प्रतिभा का देने वाला यवन राज्य था । वहाँ पर न्याय दृष्टि से देखने वाला, धृत्यादि धर्म-सम्पन्न, योग्य धर्म में विभूषित, श्री फर्स्वगियर राजा था । एक दिन शुभ वेला में वह काश्मीर गया, क्योंकि देशाटन ही शासक के जन-रक्षात्मक प्रण की रक्षा का लक्षण है । स्वर्ग में इन्द्र के नन्दन वन के समान वहाँ के सौन्दर्य को देख राजा मोहित हो गया ।

इतने सक्षय में स्वर्ग की मन्तान काश्मीर की मुपमा को अर्थ से भी वर्णन नहीं कर सकता, सारी की ता बात ही क्या है । चतुर्दश विद्या

विद्वद्भिर्मनवैश्चापि ज्ञान गौरव मण्डितम् ।
 सस्कृतै सस्कृतेनैव फारसी-सरसी कृतै ॥८॥
 आयुर्वेदेतिहासादि ज्योति शास्त्र-विशारदै ।
 काव्य साहित्यममज्ञैर्नीतिधम भूतै शुभै ॥९॥
 मवलैविपुलाकारैर्देव - लक्षण - लक्षितै ।
 महोत्साहैमहोदारै षण्डितैरतिमण्डितम् ॥१०॥
 ऋषिणा कश्यपेनैव कृत मव समृद्धिमत् ।
 काश्मीरसज्ञामभजत काश्यपारय पुर पुरा ॥११॥
 अमदानदमन्दोहै पूरितो नर भूषण ।
 विद्वत्प्रिय फरुखोज्य रत्नान्वेषणतत्पर ॥१२॥
 तत्र दृष्ट्वा महाप्रज्ञ राजवीलारयपण्डितम् ।
 नादर प्रतिपूज्याह भगवन् । दिनय मम ॥१३॥
 य वा नाथ मया सार्द्धं गन्तुमहति साधव ।
 सिन्धी प्रति यथाशक्तिपूजयिष्यामि मधुश ॥१४॥

तथा रत्नो वा अनुपम सुन्दर स्थान पुण्य फलो से भरपूर रम्य तदिया पवतो
 वाता नालावा भागा ग गीतन उदवा बहुजता न हरित वाता कौगन से
 मनात्तर गस्कृत ग पस्कृत फारसी म सरग विद्वान् मानयो द्वारा ज्ञात गौरव
 ग अनकृत आयुर्वेद इतिहास ज्योतिष वाणिशास्त्रो म विगार क काव्य
 साहित्य ममन नीति धम के धारो ग शुभ वनवात विगान आहार वात ऐव
 लक्षणा ग मया त महा उत्साही महा उत्तर पण्डिता म कसकृत काश्मीर था ।
 कश्यप ऋषि द्वारा मवमृद्धि मया न कमाया हुआ यह पहल कश्यपपुर नाम ग
 प्रसिद्ध था फिर काश्मीर नाम ग बाला जाने लगा ।

विगार ज्ञान म समृद्धि म पूरित विद्वत्प्रिय नर भूषण फरुखजियर रत्ना की
 शास्त्र म मया रक्षता था । वहाँ पर उ ज्ञान मनापन राज वीर पण्डित को दया
 गान्तर पूजाकर का शि त भगवन् । मरी दिनय मुन भाप मस्तनुभाष मने
 माथ सिन्धी चले ह माथ । मे आगरी हर प्रकार म पूजा करुगा ।

यह प्रकार यवन राज द्वारा पूशित गस्कृत गदिनय आगत्रिन थी
 राज वीर पण्डित का मीर म सिन्धी आगव । कुम्पा (नहर) क विगार

एवं यवनराजेन सत्कृताः पूजिता भृशम् ।
 आमन्त्रिताः सविनय काश्मीरादागता इह ॥१५॥
 कुल्यास्तीरे कृतावासा भास्वरे राजमन्दिरे ।
 नैहरू पदवीभाजो जाना विध्व-विभूषणाः ॥१६॥
 राजकौलाः पूर्वप्रस्थाः श्रीमन्त पूज्यपण्डिताः ।
 फारसी-संस्कृताभिज्ञा विद्या-वैभव मण्डिता ॥१७॥
 लुप्तकौलोपनामा हि नैहूरिति विधुताः ।
 फारस्या नहरप्रस्था कुल्यास्तीरे निवासतः ॥१८॥
 लक्ष्मीनारायणस्तेषा वंशे जातः सुबुद्धिमान् ।
 वाक्कीलो यावने राज्ये सभाया कम्पनीकृत ॥१९॥
 भ्रष्टे विभवसम्भारे कथञ्चित् कार्य-माधकः ।
 सुयोग्यः काल-मर्मज्ञो, मोतीलाल-पितामह ॥२०॥
 गगाधरस्तस्य पुत्रो यो दिल्लीया कोट-पालकः ।
 चतुस्त्रिंशद्वर्षोऽन्पायुर्गो वनेऽमरता गतः ॥२१॥
 नष्टा परम्परा तेषा परिवारस्य विप्लवे ।
 राज्याधिकार-पत्राणि विप्लुतानि तदैव हि ॥२२॥

सुन्दर राजमहल मे निवास करने से विश्व विभूषण पण्डित, नैहरू पद स
 सुशोभित होने लगे । फारसी-मस्कून विशेषज्ञ, विद्या वैभव-मण्डित, श्रीमान्
 पूज्य पण्डित पहले कौल उपनाम से प्रसिद्ध थे । फारसी में नहर नाम से कही
 जाने वाली कुल्या के तट पर निवास से कौल उपनाम लुप्त होकर नैहरू नाम
 से प्रसिद्ध हो गये ।

उसी कुल में हुए सुयोग्य बुद्धिमान् श्री लक्ष्मीनारायण जी को ईस्ट
 इण्डिया कम्पनी ने यवन राज-दरवार में अपना वकील नियत किया था ।
 उनकी सन्तान श्री मोतीलाल के पितामह कारणवश वैभव नष्ट होने पर किसी
 तरह कार्य चलाते रहे । उनके पुत्र दिल्लीके कौलवाज श्री गगाधर जी चौतीस
 वर्ष की अल्पायु में ही स्वर्ग सिंवार गये । इस प्रकार उनकी सामन परम्परा मन्
 १८५७ की आरति के समय समाप्त हो गयी और राज्याधिकार-पत्र भी लो
 गये । तब यह परिवार सब कुछ आर्ति में छोड़ कर आगरे आ गया ।

विप्लवे गत-सर्वस्वो दिल्ली त्यक्त्वागरे गत ।
 कुटुम्बैर्वहुभि साकं विप्लवाप्नुष्ट वैभवैः ॥२३॥
 तेषा वशे पुण्य-भूमौ मोतीलालस्त्वजायत ।
 विद्या-वैभव-सम्पन्न शौर्योत्साह-समन्वितः ॥२४॥
 अभिवक्ता सदुद्योगी विजेता राज-समदि ।
 रूपवान् गुणवान् वारमी वाक्कील-बुल-कीलव ॥२५॥
 सफलोवनी शुभाचारो मित्र-मण्डल-सत्कृत ।
 उदारो विविधाधारः प्रभावी लोक-नायक ॥२६॥
 पूर्वमग्रेजभक्तो हि विलासी बहु-गौरव ।
 पश्चाज्जवाहरोद्योगैरतिमात्र जनप्रिय ॥२७॥
 वशीधरनन्दलालावग्रजी यौवन गती ।
 स्वर्गते पितरि चाथ मोतीलालस्त्वजायत ॥२८॥
 आगरावास-काले द्वावग्रजी कृत-पौरुषी ।
 पालयामासतुरेव गृह विप्लव पीडितम् ॥२९॥
 वशीधरो नियुक्तस्तु न्यायभागेऽधिकारिभिः ।
 नन्दलालोऽप्यमात्योऽभूद्राज्ये खेतडी नामके ॥३०॥
 दशवर्ष कृत तत्र कार्यं सम्यक् मुधीमता ।
 न्यायस्याध्ययन कृत्वा वाक्कील आगरे गतः ॥३१॥

अर्थ—उनके पवित्र वंश में—विद्या वैभव सम्पन्न, शौर्य उत्साह-युक्त, अभि
 वक्ता, सदुद्योगी, राज-महा विजेता, रूप-गुणवान्, वारमी, वकीलों के समूह
 को कीलने वाले, सफल, धनी, शुभाचार, मित्र मण्डल सत्कृत उदार, विविध
 आधारवान्, प्रभावी लोकनायक, पहले अग्रेज भक्त विन्दासी अत्यंत आत्माभि
 मानी तथा बाद में श्री जवाहर के उद्योगों से अति लोकप्रिय श्री मोतीलाल जी
 हुए । वशीधर तथा नन्दलाल जी जवान हो चुके थे, तब पिताजी के स्वर्गवास
 के कुछ दिन बाद श्री मोतीलालजी का जन्म हुआ । आगरावास काल में दोनों
 बड़े भाई उद्योग में विप्लव पीडित कुटुम्ब की पालना करते रहे । तत्कालीन
 सामन्तों ने श्री वशीधर जी को न्यायाधिकारी बनाया तथा श्री नन्दलाल जी
 खेतडी राज्य में मन्त्री बन । बुद्धिमान् श्री नन्दलाल जी ने दश वर्ष वहाँ बड़ा
 अच्छा कार्य किया, फिर कानून पढ़कर आपसे मैं बालक करने लगे ।

हीन-शक्तिं यवनराज्यमवलोक्य महानयम् ।
 कुटुम्बः प्रयागमचलत् पुण्यतीर्थं सदा शुभम् ॥३२॥
 मोतीलालोऽवमत्तत्र नन्दलालमुपाश्रितः ।
 लालितः पालितस्नेन वात्सल्येनाग्रजेण वै ॥३३॥
 मर्वेपामनुजो मोतीलाल मम्बद्धित मुग्धम् ।
 पितामह्याम्नन म्वाके प्रेम्णा सलापिनो मुदा ॥३४॥
 समर्थन्तु कृतोद्वाहः कार्य-साधन-नत्पर ।
 तस्य पत्नी तदाधारा तदाचारा तपस्विनी ॥३५॥
 घृति-शमा-दया-युक्ता पतिव्रत-परायणा ।
 पितृ-देवातिथीनाञ्च पूजने दत्तजीवना ॥३६॥
 सर्वहिता धर्मरता नित्य लोक-उपकारिका ।
 स्वरूपा शुभ-रूपा हि सदैवामृत-भाषिणी ॥३७॥

अर्थ—सब यवन राज्य को निर्वल जान, यह महान् कुटुम्ब सदा शुभ, पवित्र तीर्थ प्रयाग की ओर चला । प्रयाग में थी मोतीलाल जी थी नन्दलाल जी के पास प्यार-दुःखार में पोषित होते रहे । सबसे छोटे थी मोतीलाल जी दादी की गोद में स्नहपूर्ण लोरियो से पलकर बढ रहे थे । कार्य-ममर्थ होने पर उनका विवाह पति की ही आधार मानने वाली, ऊन्ही के निमित्त वाचार वाली, तपस्विनी, घृति, क्षमा, दयायुक्त, पतिव्रत-परायणा, पितृ-देव अतिथियो के पूजन में मर्मपिन-जीवन, मर्व हितैषो धर्म में रत, नित्य लोक-उपकारिणी, शुभ तथा सुन्दर रूपवाली, अमृत-भाषिणी स्वरूपा रानी स हो गया ।



आनन्द-भवन-वर्णनम्

कारित मोतीलालेन प्रयागेऽतिमनोरमम् ।
आनन्द-भवन रम्य प्रामाद सर्वमाधनम् ॥३८॥
अनेकागार-द्वारंश्च शोभित यान-भूषितम् ।
कूपोद्यान-तटागैश्च क्रीडा-क्षेत्रं समन्वितम् ॥३९॥
योरुपीयैश्च सम्भारैर्महर्षैरतिरजितम् ।
अश्व-मोटर शालाभिर्वद्धितञ्चातिशोभितम् ॥४०॥
बहुभिर्दाम-दासीभि साधितञ्चाति वेतने ।
आग्नैरध्यापकै-नर्सै डॉक्टरैरतिसेवितम् ॥४१॥
घनिकंगुणिभिश्चन्द्रैरनिवैभवरोचितम् ।
मल्लैः मगीत-वारंश्च नटैर्भट्टै सुभाषितम् ॥४२॥
धेनूना महिषीणाञ्च दधि-दुग्धं मुभोजनम् ।
वविभि मुन्यैर्विज्ञै कृत-माहित्य-मम्मृतम् ॥४३॥
विद्वेषकैः वतावारैश्चाटुवारैश्चमल्लृतम् ।
मणि-मुक्तरत्नैकैश्च धन-धान्यैः सुपूरितम् ॥४४॥
दैवज्ञैर्वैद्य-वयैश्च नीतिज्ञैर्नायकैर्नतम् ।
तक्षयभिः वार-वारैश्च-स्वर्णवारैरलकृतम् ॥४५॥

अर्थ—श्री १० मोतीलाल जी ने प्रयाग में अति मनोरम, रम्य, भव्य सर्व माधन-सम्पन्न अनेक भवन तथा द्वारों से शोभित, विविध यान-भूषित, कूप, उद्यान, तटाग और क्रीडा-क्षेत्रों में अलकृत, बहुसुख्य योरोपीय सामान से सुन्दर, अश्व मोटरशालाओं से मज्ज दृष्ट बट्टेनन दाम दासी, अनेक अध्यापकों, नर्सों एवं डॉक्टरों से शक्ति, घनिक, गुणी तथा विशेष श्रेष्ठ व्यक्तिगणों के राजवैभव से विभावित, मल्लों, मगीतकारों, नटों तथा भट्टों की सुक्तियों से सुभाषित, गो-भैरों के दधि-दूध-निर्मित पदार्थों से सुन्दर भोजन-मुन, ववि विज्ञ, वयावार लोको से रचित माहित्यममल्ल विद्वेषकों, वतावारों एवं चाटुकारों से समलकृत, अनेको मणि मुक्ताएँ धन धान्योममल्ल, विद्वान्-दैवज्ञ, वैद्य तथा नीतिज्ञनायकों से

सूदमिष्टान्न-कारेश्च कृत-भोज्यादि-सयुतम् ।
चतुरैर्भोजकैर्नित्य कृतातिथ्य मुमंगलम् ॥४६॥
राजतैर्होमपात्रैश्च भाण्डागारैर्निनादितम् ।
अत्युत्तमैरलकारैर्गन्धैरभिर्वाद्धितम् ॥४७॥
चत्वरैर्यज्ञशालैश्चातिथिशालैर्न्युपासितम् ।
घृतावतैस्तैश्च पूर्णैश्च विद्युद्दीपैश्च दीपितम् ॥४८॥
चन्दनागुर-गन्धीभिर्दिव्यैर्घूपै मुवामितम् ।
मुचिर्नैर्मूर्तिमद्भिश्च प्रकीर्णैश्चित्रितम् ॥४९॥
स्वर्पाकारिते पाठैर्वेद-मंत्रैस्तु गुजिनम् ।
विद्वद्भ्यो दीन हीनेभ्यो दत्तैर्दानैस्तु मस्तुतम् ॥५०॥
सारिका-शुक-मायूर-हम-कोकिल-कूजिनम् ।
वालाना नरनारीणा पृथगागारैः सुगुम्फितम् ॥५१॥
स्नान-भोजन-शय्याना शालाभिर्न्युपशालितम् ।
स्वर्पा, विजया, कृष्णा मङ्गमल सजवाहरम् ॥५२॥
इन्दिरा-वाल लीलाभिलिप्स्यैर्लम्बित-लोचनम् ।
लीलामु वाल-वालाना दोलान्दोलन दोलितम् ॥५३॥
कृतोपकारैरद्वारैर्वृद्धै पूज्यैर्मुदेक्षितम् ।
विषदि-दत्त-माहाग्यैरार्यैर्भेद्रे शुभेष्वितम् ॥५४॥

नमस्कृत, स्वामी, राज तथा स्वर्णकारों से अलकृत, सूदो तथा हनवाइया स बने सुन्दर भोजनों से मुवामित, नित्य ही चतुरभोजकों द्वारा कृत आतिथ्य से मुमंगल, चादी मोने के भाण्डागारा से निनादित, अत्युत्तम जनर्घ्य अलकारों से अति-वाद्धित, अनुपप, यज्ञशाला तथा अतिथिशालाओं में उपासित, घृत, तैल एवं विद्युत्-दीपा से सुदीपित, चन्दन, अगर की सुगंधवाती दिव्य घूपों में मुवासित, सुन्दर चित्र एवं मूर्तियांवाल प्रकीर्णों में चित्रित मानास्वर्पा द्वारा आयाजित वेद मन्त्रों के पाठों में सुगुजिन, विद्वान तथा दीन हीनों को दिये दानों में स्तुत, सारिका, शुक, मोर, हंम तथा कोकिल स्वरो से कूजित, बाल, नर एवं नारियों के पृथक् पृथक् भवनों में सुगुम्फित, स्नान, भोजन तथा शयनागारों से सुशोभित, स्वर्पा, विजया, कृष्णा, मङ्गला तथा जवाहर से मङ्गल, इन्दिरा की बाल-लीलाओं तथा सुत्य-गीता से नयनानन्द, बच्चे वच्चियों के खेलों में कूलों के

मगलोचित-गीतैश्च गुह्यभि कृत-मगलम् ।
 अगना-मगलैर्गनैस्तावैश्चानेक-रजनम् ॥५५॥
 रगाना रगितैरगैस्तोरणैरतिरजितम् ।
 उत्तोलितपताकाभिर्वहुभिर्महदुन्नतम् ॥५६॥
 आगतागत लोकाना समूहैरतिमोहितम् ।
 अभियोग जयार्थं वै भूपैर्भूयोऽभिलक्षितम् ॥५७॥
 जानि-देश-ममाजाना हितकारिभिराश्रितम् ।
 राजनीत्या पीडिताना जनाना दृढमाश्रयम् ॥५८॥
 कारागार-गतानाञ्च पदचादुच्चसहायकम् ।
 चन्द्र-सूर्ये-निभ नित्य ताराणामिव भास्वरम् ॥५९॥
 पवित्र घवलाकार सार भारत-भूमिजम् ।
 आनन्द-भवन भव्य रम्य वाग्म्यमतिप्रियम् ॥६०॥
 रजवं सूचिनाग्द्वेष मालाकारैरुपाश्रितम् ।
 ग्रन्थागारै र्वर्षधिर्जन-गौरव-गभितम् ॥६१॥
 पुनस्तु मोनीलालेन दत्त देश-हिताय वै ।
 स्वराज्य-भवन जात प्रसिद्धमतिमुन्दरम् ॥६२॥

भूतने मे क्यायमान, कृत उपकारो मे उदार पाए हुए पूज्यदंडो द्वारा प्रकृतता मे दृष्ट विगतियों मे दी मद्रापनाओ के कारण भद्र आर्पजनी द्वारा शुभ काम-नाओं मे चाहा हुआ, मगलोचित गीता मे गुह्यतरो द्वारा कृत-मगल, अगनाओ के मगल-गीता की गानो मे यदृक्ता रजन, अनेक रगा मे रगे तोरणो से मुन्दर, ठगर उद्ग रही उन्नत पताकाओ मे महदुच्च, घात जाने जाने मोह-नामूरो से अति मोहित, अपने अपने मुहदमी मे विजय के लिए भूरा से बारम्बार देना गया, जानि-देश ममात्र के हितकारियों मे आश्रित, राजनीति-पीडित लोगों का दृढ आश्रय, कारागार मे मुक्त लोगों का अर्पणा मद्रापक, चन्द्र सूर्ये की रसा करन वाया, ताराओ-या भास्वर पवित्र घवलाकार, भारत-भूमि का सार, रम्य, भव्य, वाग्म्य, अतिप्रिय, पारो, दर्शो तथा वागम्यो द्वारा उपाश्रित एव वर्षधिष घन्थागारो के ज्ञान-गौरव के गभित, आनन्द भवन बनाया । बाद मे यह उठी के द्वारा देसहित मे दिग्गज पर स्वराज्य भवन के नाम मे प्रसिद्ध हुआ ।

बाल जवाहर.



कृतोपवीत-सस्कार : आर्य सम्भार-धारक

पटचत्वारिंशद्वेकीनविंश विजय-वत्सरे ।
मार्गशीर्षे कृष्णपक्ष्या मध्यरात्रे शुभप्रह् ॥
आस्नेपापाकर्वं लग्न सचन्द्रेष्वस्मितेगुरौ ।
वातो जवाहरो वीर मर्वं मद्गुण भूषण ॥
उक्त हि बृहत्पाराशरे राजयोगाध्याये
दिनार्द्धाच्च निशार्द्धाच्च परसाद्धदिनाडिका ।
शुभावेना तदुत्पन्न राजास्यात्तत्समोऽपिवा ॥



भागीरथो महाभागो वासवीश कुल वंशज ।
खवादास वि लीदेवु धारा भाग्यवीरव ॥

जवाहर-जन्म

इत्थमानन्दमवासे सर्व-माधन-शोभने ।
 सम्बन्धो मोतीलालो यापयामाम वामरान् ॥६३॥
 तयोः सुखेन वसतो सर्व-माधन-भुजतो ।
 अभावः सन्ततेरामीत् दिलीपे नृपती यथा ॥६४॥
 यथा दिलीप म्वाचार्य मदारो गतवान्मदा ।
 तथैव मोतीलालोऽयमगच्छद्वि तपस्विपु ॥६५॥
 नित्यान्वेपण-मलग्न श्रद्धा-भक्ति-समन्वितः ।
 मदा सदार पुत्रार्थी मदाचार-परायण ॥६६॥
 श्रुत्वैवदा जने क्वापि तपस्यन्त तपस्विनम् ।
 वृक्षान्दमदृश्य हि सर्व-लोकातिग मुनिम् ॥६७॥
 एषणा-त्रयमुत्क्रान्त दिव्यशक्ति-ममन्वितम् ।
 तुर्यावस्था-रत नित्य ब्रह्मलीन मदा शुचिम् ॥६८॥
 मोतीलालोऽवगम्यैव मदार श्रद्धयान्वितः ।
 प्रतिक्षण शुभाचारः पुत्रेच्छुरर्चयदृषिम् ॥६९॥

अर्थ—इस प्रकार आनन्द-भवन सब प्रकार के साधनों से सुशोभित था । श्री मोतीलाल जी स्वरूपारानी के साथ सब साधनों में युवन आनन्द भवन में कुछ ऐ वाम करते थे, परन्तु जिस प्रकार राजा दिलीप को मन्त्रान का जभाव था, जिस प्रकार पुत्रार्थी दिलीप स्वधर्मपत्नी मुदक्षिणा के साथ अपन गुरु श्री वशिष्ठ जी के आश्रम में गये थे, उसी प्रकार श्री मोतीलालजी भी धर्म पत्नी स्वरूपा सहित, पुत्रार्थी, सदाचार परायण, नित्य जिज्ञासु, तपस्विता के आश्रमों में जाते थे ।

एक दिन मोतीलाल जी ने वहीं पर तपस्या रत, वृणाच्छद, सर्व-लोकोत्तर, अदृश्य, तपस्वी, एषणात्रय से परे, तुर्यावस्थारत, दिव्यशक्तियुक्त, ब्रह्मलीन, सदा शुचि, मुनि को लोका म मुना । इस प्रकार जान कर धर्मपत्नी सहित, श्रद्धापूर्वक प्रतिक्षण ध्यानपरायण, पुत्रेच्छु मोतीलाल जी ऋषि की

गुरोधेनु वशिष्ठस्य दिनीपो नन्दिनी यथा ।
 अहनिशमन्वगच्छन्मोतीलालस्तथैव हि ॥७०॥
 सेवयामास तावद्धि यावत्तुष्टोऽभवन्मुनि ।
 उवाच कथमायात किमर्थमिह तिष्ठसि ॥७१॥
 वद सर्व मनोराज्य यदर्थं तपमि स्थित ।
 आनन्दभवन काम्य त्यक्त्वारण्यमुपागत. ॥७२॥
 मोतीलालस्तदाश्वस्तस्तुष्टो लब्ध-मनोरथः ।
 निवेदयामास स्वार्थं महान्त पुत्र-रूपिणम् ॥७३॥
 भगवन् सर्वंविज्ञोऽसि यदर्थन्त्वागतोऽस्म्यहम् ।
 पुत्रार्थी, लब्ध-सर्वार्थम् न गृहं शान्ति दायकम् ॥७४॥
 पश्येयमिति कृत्वैव पादाश्रितमवेहि माम् ।
 जीवन सुवनाधीनमिति मे निश्चित मतम् ॥७५॥
 ऋषिराह समाधिस्थ भो भो सेवापरायण ।
 नास्ति ते सन्ततेर्योग गच्छावास यथासुखम् ॥७६॥
 पुन प्रसादित प्राह ऋषिरत्फुल्ल-लोचनः ।
 ब्रजावामं पूर्णव्रत साधयामि तवेप्सितम् ॥७७॥

पूजा में रत रहने लगे । जैसे गुरु वशिष्ठ कीधेनु नन्दिनी की सेवा में महाराज
 दिलीप रहते थे, उसी प्रकार मोतीलाल जी भी दिन रात ऋषि के प्रसन हो-
 कर सेवा में लगे रहे । तब मुनि ने प्रसन्न होकर कहा—तुम यहाँ क्यों आ-
 हो ? किसलिए बैठे हो ? अपनी इच्छा बताओ जिसके लिए सर्व-सुख काम
 आनन्द भवन को छोड़ बन में आ तपस्या में लगे हो ।

तब आश्चर्य, सन्तुष्ट तथा लब्ध-मनोरथ मोतीलाल जी ने अपने
 पुत्र रूपी महान स्वार्थ को निवेदन किया । भगवन् आप सर्वज्ञ हैं, जिसलिए
 मैं आया हूँ आप सब जानते ही हैं, मैं पुत्रार्थी हूँ । गय कुछ होते हुए भी घा-
 को शान्तिदायक नहीं समझना, इसीलिए आप मुझे अपने चरणों में उपस्थित
 समझें । क्योंकि मैं अब पुत्र के बिना जी नहीं सकूँगा यह मेरा निश्चित मत
 है । तब ध्यान लगा कर मुनि जी बोले—ऐ मेवक ! तुम्हारे समान योग नहीं
 है इसलिए पर आज्ञा आराम करो । फिर प्रसन्न किये हुए ऋषि ने कहा—
 तुम्हारा व्रत पूरा हुआ, पर क्या जा, तेरी इच्छा पूरी करूँगा । यह सुन कर

श्लुक्तो मोतीलालो हि मस्वरूपो गृह गत ।
 परेद्युर्लक्षितः पीरंस्तापमो गतजीवनः ॥७८॥
 तदातो दशमे मासे स्वरूपा सुपुत्रे सुतम् ।
 नवाम्बरे शुद्धश्रुती, शुभलग्ने शुभग्रहे ॥७९॥
 जातो जवाहरो योगी राज्य-ग्रह-ममन्वित ।
 मुक्ता रत्नः (मोतीलालं) समुद्भूतो मणिरूपो जवाहरः ॥८०॥

बाल्य-वैभवम् प्रवृत्तयश्च

जातो जवाहरोऽस्माक प्रियो विश्व-प्रकाशकः ।
 कृतीपवीत-मन्वारः आर्ष-सम्भार-धारकः ॥८१॥
 अधीत-विद्यो हिन्द्युर्दु-ससृष्टेर्ग्लिश-प्रचारक ।
 माता-स्वरूपा-संस्कारैः रजितस्त्यक्त-भारत ॥८२॥
 आग्लभूमि गतोऽभ्येतुं हैरो-विद्यालये पुरा ।
 वाक्कीलविद्या सगम्य पुन भारतमागत ॥८३॥
 मोतीलालप्रभावेण पूर्वं सर्वसुखान्वितः ।
 लब्ध-विद्यो-गुणाधार सर्व-सम्पदुपसृष्ट ॥८४॥
 तपस्विवरदानेन लोकाराधन तत्पर ।
 कारागारे तपस्यार्थमुवास परमोज्ज्वलः ॥८५॥

मोतीलाल स्वरूपा के साथ घर चले गये । अगले दिन लोगो ने वहाँ पर उस तपस्वी को निर्जीव देखा ।

तब से दशवें मास में नवाम्बर (नये आकाश) व नवम्बर मास में शुद्ध ऋतु, शुभ लग्न एवं शुभ ग्रहों में स्वरूपा ने पुन-रत्न को उत्पन्न किया । वही योगी—राज्य ग्रह-गुत मोतीलाल से उत्पन्न मणि रूपी जवाहरलाल बना । हमारे प्यारे विश्व प्रकाशक जवाहर उत्पन्न हुए, यज्ञोपवीत धारण कर, ऋषियो का वेश बना, हिन्दी, उर्दू, इंग्लिश, संस्कृत को पढ़, माता स्वरूपा के अच्छे संस्कारों से रगे हुए, भारत से इंग्लैंड में हैरो विद्यालय में पढ़, वकील बन कर भारत लौटे । मोतीलाल जी के प्रभाव से पहले ही सर्व-शुभ संयुक्त, अब विद्या, रूप, गुण तथा सर्व सम्पत्ति से अलङ्कृत हुए । तपस्वी के वर-प्रभाव से लोक

राज्य-ग्रहानुभावेन शासनासन-शोभित ।
 स्वरूपा-मातृ-सस्कारैर्दया-दम-परायण ॥८६॥
 पर-दु ख-हरः सर्व-भूत-सौख्य-विधायकः ।
 बाल्येऽम्बिलमुखावास पितृ-लालन-पोषितः ॥८७॥
 अनेकदासी-दासेभ्यो लब्ध-सेवो यथौ मुदम् ।
 लालितोऽपि विशेषेण सर्व-दुर्गुण-दूरण ॥८८॥
 सदगुणैर्भूषितो नित्य मातृ-मोद-करः शुभ ।
 शिशु-सम्भव-क्रीडाभिलोक-शोकापनोदक ॥८९॥
 शिक्षणार्थं शिशोरस्य गौरा पाठन-तत्पराः ।
 नियुक्ता मोतीलालेन आग्ल-विद्या-विज्ञारदाः ॥९०॥
 मौलवी मूलतो विद्या फारसीमनुरागतः ।
 पाठयन् श्रावयन् गाथा रुचि-शिक्षा-प्रदा शुभाः ॥९१॥
 बोधयामास निरत विद्या-वृद्धि-विशारदम् ।
 वशानुक्तं कुशल सुयोग्य शासन-प्रियम् ॥९२॥
 हिन्दी-संस्कृत-शिक्षार्थं मयत्ना जननी भृशम् ।
 स्वरूपादृढ-संवल्पा सफला भक्ति-भावत ॥९३॥
 मोतीलालो राजभवतो गौर-राज्यानुमारतः ।
 वर्तयामास वार्षेषु राजनीनियुतेषु वै ॥९४॥

गोवापरायण पवित्र जवाहर नाम्ना के त्रिपु वाराणार में रहे । राज्य-ग्रहों के प्रभाव में जागृत के आगत पर शोभित हुए माता स्वरूपा के सरदारों में दया-दम परायण बने । पर-दु ख-हर, सर्व-भूत सुखदाता, बचान में सब गुण-भोग्या, पिता के साहस्यार में पाल गये, अनेक दासी दासी की सेवा में प्रगण विशेष साहस्यार में पढ़ने पर भी सभी दुर्गुणा में दूर थे । नित्य सदगुण-भूषित, माता की गुन रत्ने हुए बान-वीरालो में सबक शास्त्र को दूर करत थे । इसी शिशु को पढ़ाने के लिए मोतीलाल ने इंग्लिश के विद्वान् ब्रैजेश शर्मा)

भारत में मौलवी प्रेमचूबंज यह तथा शिक्षाप्रद कहानियाँ सुनाते हुए, मुँड विद्या विज्ञान यज्ञानुद्धत धनुषागत प्रिय जवाहर का पराधी पढ़ाने पर । माता स्वरूपा भक्ति-भाव में हृद मकर विने हिन्दी संस्कृत शिक्षा

पर जनास्तदा देश-भक्ति-श्रद्धा-ममन्विता ।
 स्वाधीनता-प्रचारेषु वृद्धा-वाला घृतव्रताः ॥६५॥
 लोना दुःख प्रकटयन्तो नित्यं भारत-भूमिजम् ।
 एषा प्रचारस्य हृदि मृदुनि वै जवाहरे ॥६६॥
 प्रभावोऽभूत्प्रभूत तु देश-वन्दन-पत्रम् ।
 ऐश्वर्येण विलासेन मोतीलालोऽरमत्प्रदा ॥६७॥
 जवाहरेणालपितुं नीटितुं समयो नहि ।
 पर माता स्वर्णा तु जवाहरे-परायणा ॥६८॥
 गगा नयति स्नानार्थं मत्स्यार्थं दिने-दिने ।
 प्रभु-भक्ति-रत्ना नित्यं दान-पुष्प-श्रता शुभा ॥६९॥
 सर्व-शिक्षामु कुशल खेला-खेलन-पारंग ।
 सर्वेषां मुदमानन्वन् मुदक्ष शुभलक्षण ॥१००॥
 आम्नागेहणविद्याया जल-मन्त्रणे तथा ।
 जानो दक्ष कुमारोऽय प्रियोऽस्माकं जवाहर ॥१०१॥

मे मजेष्ट रहनी हुई मफत हुई। मोतीनात राजभक्ति मे राजनीति क कार्यो
 मे अपेजो के अनुसार ही चलते थे, पर उम समय बात वृद्ध युवक मभीलागदश
 मे श्रद्धा-भक्ति मे स्वाधीनता वा प्रचार करन मे लग रहने थे । नित्य ही भारत
 के दुःख को प्रकट करने वाता वा प्रभाव जवाहर के सोमल हृदय मे हुआ ।
 जवाहर के मन मे तो देश-दशा का बहुत प्रभाव हुआ, पर मोतीनात ऐश्वर्य-
 विलास मे मग्न रहने थे । उनके पास तो जवाहर के माय बात करने वा खेवने
 वा भी समय नहीं था । पर माता स्वर्णा मदा जवाहर का ध्यान रखनी थी ।
 वह प्रभुभक्तिरत, नित्य दान-पुष्प दानो मे शुभ विचार वापी जवाहर को प्रति
 दिन गगा-स्नान के लिए ले जाती थी ।

श्री जवाहर सर्व शिक्षा कुशल, खेवने मे पारंगत, चतुर, शुभ लक्षण-
 मग्न मनको मुग्य देने थे । थामो पर बटने मया जल मे नैरने मे हमारा
 प्रिय कुमार जवाहर दग हो गया । अश्य, मोटर-यानो के चलाने मे खषत तथा
 निर्भय, वह सर्व मातनी मे स्वाधीन व्यवहार करता था । जवाहर के मनो-
 विनोदाय मभी सर्व मुन्दर मामान थे, पर बहिन भाई के न होने मे उमका
 उद्विग्न मन उनम लगना नहीं था ।

अश्व-मोटर-यानाना चालने चचलस्तथा ।
 निर्भयोवर्तते तत्र स्वाधीन सर्व-साधने ॥१०२॥
 सन्ति मनोविनोदार्थं सन्भाराः सर्व-मुन्दराः ।
 उद्विग्नो घन्धुहीनोऽप्य नारमत्तत्र-तत्र ह ॥१०३॥
 अतोविजयानुजायाया जन्गानि मुदितो भृशम् ।
 सापि रयानि गता पुण्या वश-कीर्ति-विवर्द्धिनीम् ॥१०४॥
 अधीत-विद्या स्वातन्त्र्य-संग्रामे दत्त-जीवना ।
 कारागार गतानेकवार सत्य-परायणा ॥१०५॥
 दीराग्रजेणसयुक्ता गौर-शासन नाशने ।
 पीडिता बहुशो दुष्टैर्विरराम कदापि न ॥१०६॥
 स्वतन्त्रे भारते देशे शासने लग्न मानसा ।
 चह्वापासे पदे युक्ता सफला कार्य-साधने ॥१०७॥
 हसामेरिकदेशेषु कूट-नीति-परेषु च ।
 राज-दूतादिपदेषु योजिता लोक-नायकै ॥१०८॥
 तत्रापि सफलैषा हि नीति-विज्ञै प्रशसिता ।
 सुरक्षा ससदि जाता प्रधानैषा मनस्विनी ॥१०९॥

इसीलिए छोटी बहिन विजया के जन्म लेने से श्री जवाहर बहुत प्रसन्न हुए, वह भी अपने वश की नीति बड़ाती हुई प्रतिष्ठ हुई । विद्या समाप्त कर स्वतन्त्रता-संग्राम में लगी हुई कई बार कारागार गयी । विजया बीर भाई के साथ लगी, अग्रजी राज की हत्याने में तत्पर, कई बार दुष्टों से पीडित हुई भी वर्तव्य-मार्ग से नहीं हटी । स्वतन्त्र भारत में शासन चलाने में बहुत से परिश्रमी पदों पर नियुक्त हुई भी कार्य-साधन में सफल हुई । अमेरिका आदि कूट-नीति-परायण देशों में राजदूत आदि पदों पर नियुक्त हो कर सफल हुई तथा वहाँ पर भी श्रीनिवास लोका नायक द्वारा प्रशंसित हुई । इस मनस्विनी ने सुरक्षा परिषद् में प्रधान बन कर भारत का पग बड़ी अच्छी प्रकार बढ़ाया । इस समय तक विद्वत् की कोई भी स्त्री इस पद पर नहीं बँठी । इसके बाद भी इतने भारत में अपने योग्य हृदय और गुणों के साथ से राज्यपाल के रूप में लीज-यासना करत हुए अनेक कार्यें सिद्ध विधे ।

यगो भारतदेशस्य यथा नम्यक् प्रवर्द्धितम् ।
 नेदानी यावत्काचिद्धि पद प्राप्ता हि कामिनी ॥११०॥
 ततोऽपि भारते देशेऽनेक-कार्यं प्रमाधिका ।
 राज्यपाला लोकपाला मृदुचित्ता मुगामना ॥१११॥
 प्राप्यैना विजयालक्ष्मी भगिनी स्नेह-रूपिणीम् ।
 सन्तुष्टोऽप्यलभच्चान्या कृष्णा सर्वमुलक्षणाम् ॥११२॥
 पाठितोऽध्यापकैर्विज्ञैर्विद्या-ज्ञान विचक्षणैः ।
 पितृन्यामाप्त-मस्कारो गृह - शिक्षामवापह ॥११३॥
 अनेकान् लोक-ग्रन्थानामध्येना बुद्धि-योगतः ।
 लालो द्वादशदेशीय काव्य-शास्त्र-विचारकः ॥११४॥
 दर्शनाना हि तत्त्वज्ञो नीति-विद्या-विगारदः ।
 आपाणा धर्मग्रन्थाना गीतादीना विशेषतः ॥११५॥
 श्रुतीना सार-सर्वज्ञो योग - विद्याविभाषिनः ।
 उत्पताम्यहमाकाशे निर्विमानो मुहुर्मुहुः ॥११६॥
 अथः पश्यामि ममारमखिलं चित्रित बहु ।
 द्रष्टा विचित्र-स्वप्नाना विस्मिनो ज्ञान-भावनैः ॥११७॥
 विस्मृतो देह-गेहानामात्मभावचमत्कृत ।
 मुमदम्यो मण्डलानामाध्यात्मिकमनस्विनाम् ॥११८॥

इस स्नेह रूपी विजयालक्ष्मी बहिन को प्राप्त करके भी दूसरी सर्वमुलक्षणा
 छोटी बहिन कृष्णाको प्राप्त कर जवाहर बहून खुश हुए । विद्या ज्ञान विचक्षण,
 विद्वान् अध्यापकों द्वारा पढाए हुए माना-पिता से गुण मस्कार प्राप्त कर
 गृह-कार्य से निश्चिन्त श्री जवाहर बाराह वर्ष के ही अनेक प्रकार के ग्रन्थों के बुद्धि-
 पूर्वक अध्येना, वाङ्मय शास्त्र विचारक, दर्शन के तत्त्वज्ञ, नीति विद्या विगारद,
 गीता आदि आर्ष धर्म ग्रन्थों, वेद-उपनिषदों के विषय मार्ग के सर्वज्ञ योग
 विद्या से प्रभावित थे । वे सोचते थे कि बिना विमानों के ही आकाश में
 उड़कर मारे चित्र विचित्र सागर का नीचे देखू । वे विचित्र स्वप्न को देखते
 थे । ज्ञान-भावनाओं से विस्मित, देह गेह का भूल, आत्म-भाव से चमत्कृत

एनीबेमेण्ट-दीक्षायां गुह्य-ज्ञानंस्तु ज्ञापित ।
 पवित्रो भाव-गम्भीरो-वयस्केषु प्रतिष्ठित ॥११६॥
 गीतोपनिषदा मारुन्दारुणतितोषित ।
 अध्यात्म-भाव-तत्त्वज्ञो रमणो ज्ञान-तेजसो ॥१२०॥
 रहस्यज्ञोऽतिशुद्धाना ज्ञानाना हि प्रकाशक ।
 इत्थमत्पययो लाल प्रयुद्ध सर्व-कर्मसु ॥१२१॥
 तत पचदशे वर्षे गौरदेश जगामह ।
 पितृभ्याञ्चानुजया च सहितोऽयन-कर्मणे ॥१२२॥
 राष्ट्र-भावंभृतात्माऽसौ निमग्नश्चिन्तनेऽभवत् ।
 भारतमेशियाद्वीप चाह मोक्ष्यामि बन्धनात् ॥१२३॥
 चिन्तयन् खड्गहस्तोऽभावति वीरो जवाहर ।
 कल्पनागत-चित्तस्तु योरुपमचलत्तदा ॥१२४॥
 पठंस्तत्रैव बालोऽसौ जिज्ञासा-रत-मानस ।
 बाल लाल-दयालेश्च गोखले पालराण्डे ॥१२५॥
 महोत्साहै कृनोद्योगे मुयोग्यंज्ञाति-भारत ।
 स्वातन्त्र्य-यज्ञ-पूत्यर्थं कटिवद्धस्तदाभवत् ॥१२६॥

रहते थे । आध्यात्मिक मनस्विक मण्डलो के सदस्य तथा एनीबेमेण्ट द्वारा दी हुई
 दीक्षा से गुह्य ज्ञान से परिचित थे । वे पवित्र भाव गम्भीर वयस्को से
 प्रतिष्ठित, गीता-उपनिषदा के उद्धार सारा से सतुष्ट थे । अध्यात्म भाव-तत्त्वज्ञ,
 ज्ञान तेज के रसज्ञ अति शुद्ध ज्ञान के रहस्यज्ञ और प्रकाशक थे । इस प्रकार
 छोटी आयु में ही कार्य चतुर जवाहर, पन्द्रहवें वर्ष में माता पिता तथा विजया
 बहिन के साथ पढ़ने के लिए इंग्लैंड गये । राष्ट्रीय भावों से भरे विचार-मग्न,
 भारत एवं एशिया को स्वाधीन करने की सोचते, कल्पना करते हुए हाथ में
 तलवार लेकर योद्धा गये । वहाँ पढ़ते हुए भी यही स्वाधीनता की जिज्ञासा
 रहती थी, तब महा उत्साही उद्योगी तथा मुयोग्य बाल गणेशर तिलक लाला
 लाजपतराय हरदयाल, गोखले, रानाडे एवं विपिनचन्द्र पात्र जैसे महानुभावों
 के सम्पर्क से भारत की स्थिति से भी प्रकार परिचित हुए और स्वतन्त्रता-
 यज्ञ की पूर्ति में लग गये ।

यथा रामो दशम्य वीरल्या च नृपालयम् ।
 हित्वाग्न्य गतो दूर वनेद्यावाम भयावहम् ॥१२७॥
 शम्भ्रान्शम्भ्रान्शम्भ्रनयुक्ता प्राप्ता विद्या वशिष्ठतः ।
 व्यवहारेण विज्ञातु विश्वामित्रेण मगतः ॥१२८॥
 यथा कृष्ण परित्यज्य मानु-स्नेह पितुर्मुदम् ।
 गतन्मदा नन्द-गृहं यशोदा च तपस्विनीम् ॥१२९॥
 तथा नन्दगृह गम्य परित्यज्य गत श्रमम् ।
 कुर्वन्नध्ययनव्याज कुमारोऽप्य उवाहः ॥१३०॥
 वशिष्ठ-विद्वानामित्राभ्या शिक्षितो रात्रवो यथा ।
 उज्जयिन्या मान्दीपिना दीक्षितो यादवो यथा ॥१३१॥
 द्रोणाचार्येण शम्भ्रान्श्रैः पाठित पाण्डवो यथा ।
 तथा हैगे-र्वम्भ्रिजाभ्या ग्नातरोऽभूज्जवाहः ॥१३२॥
 रामो राज्य परित्यज्याहल्या शवरीमतोपयन् ।
 वानरान् निपदान् भिन्नान् किरातान् सो न-जातिजान् ॥१३३॥
 राक्षमान् विविधाकारान् मदा पाप-परायणान् ।
 अभ्युज्जहार मीहादीन् तथैवाय जवाहः ॥१३४॥
 गोप्य कृद्वा द्रोपदी च जरामन्ध-निपीडिता ।
 नार्थं समुद्रुताऽचाय यत-गन्त्य प्रमादिना ॥१३५॥

जिस प्रकार श्रीराम जी, पिता श्री दशरथ, माता वीरल्या तथा राज्य को छोड़ कर वनेद्यावाम, भयावह वन में दूर चल गये थे, शम्भ्र, शम्भ्र-तया शम्भ्र को विद्या श्री गुरु वशिष्ठ जी ने प्राप्त कर, त्रिशासन व्यवहार के लिए विश्वामित्र के पास गये थे, जिस प्रकार श्री कृष्णजी माता देवकी व पिता यमुदेव जी को छोड़ नन्द जी के घर यशोदा तपस्विनी के पास गये थे, उसी प्रकार आनन्द भवन को छोड़ कर कुमार उवाह्य अल्पयन के चलाने उगड़े गये । वशिष्ठ तथा विश्वामित्र श्री ने जैन श्री राम जी को शिक्षित किया, श्री मान्दीपिनी जी ने श्री कृष्ण जी को दीक्षा दी, श्री द्रोणाचार्य जी ने अर्जुन का शम्भ्रान्श्रिष्टा पढ़ाये, उसी प्रकार हैगे तथा केन्द्रव विद्यालयों में श्री जवाहर ग्नातक बने । जैन श्रीराम जी ने राज्य छोड़ वन में शम्भ्रान्, शवरी वानर, निपट, भोज, किरात, सोन तथा पाप परायण अनेक प्रकार के राक्षसों

मुदामा विदुरो गोपा मालाकारा पराश्रिता ।
 वृष्णेन दीन-भाषेन हीना मन्तपिता यया ॥१३६॥
 च्युताधिकारान् लोकेषु जाति-वर्ण-बहिष्कृतान् ।
 तथा ग्राम्यान् हरिजनश्चोज्जहार जवाहर ॥१३७॥
 जवाहरो गतो गौरे हैरो विद्यालये पुरा ।
 सामान्य ज्ञान-सम्पन्नो नातिष्ठत् पाठ्य-वर्मणि ॥१३८॥
 बहुशरचोत्तरैरस्य ज्ञानविद्यानिर्गमंशम् ।
 चकिता बभूवुर्गौराः शिक्षका ज्ञान-दर्पिताः ॥१३९॥
 प्रख्यापित स्वदेशीय ज्ञानमाग्लातिगमहत् ।
 वर्ण-मुग्धे लब्ध-कीर्तिर्गतः कैम्ब्रिज-सन्नके ॥१४०॥
 विश्व विद्यालयेऽध्येतु निरतश्छात्र-जीवने ।
 हैरो-कैम्ब्रिजाप्त-विद्य. जातो वाक्कील-कीलक ॥१४१॥
 महान्त योद्युष रुस प्रमत्त सैन्य-शक्तिवम् ।
 जापानो हि लघुदेशेऽशियाकोऽजयत्तदा ॥१४२॥
 जापान-विजयेनाथ नाथोऽभूद् गर्वितस्त्वयम् ।
 ऐच्छद्धि भारत वक्तु महान्त शक्ति-शालिनम् ॥१४३॥

वा कल्याण क्रिया और हीनो के नाथ श्रीकृष्ण जी ने—गोपियो, कुम्भा, द्रौपदी
 जरासन्ध-पीडित नारियो यज्ञ पत्नियों, मुदामा, विदुर, गोप, माली तथा अन्य
 पराश्रितो की एव हीनजनो का उद्धार किया, उसी प्रकार लोगों में अधिकार-
 भ्रष्ट, जाति-वर्ण-बहिष्कृत, ग्राम्य-जन तथा हरिजनो का उद्धार जवाहर ने
 किया ।

सामान्य-ज्ञान-सम्पन्न जवाहर का मन हैरो विद्यालय की पाठ्य पुस्तकों
 में नहीं लगता था । अनेकों बार इसके विद्याज्ञान से भरपूर उत्तरा से ज्ञान-
 दर्पिन गौरे चकित हो जाते थे । वहाँ पर भारतीय ज्ञान गरिमा को प्रसिद्ध
 कर, दो साल से हैरो में यज्ञ प्राप्त कर कैंम्ब्रिज विश्वविद्यालय में अध्ययन
 करके य वकीला को भी कीलने लगे ।

उमी समय सैन्य शक्ति से प्रमत्त, योद्धीय देश रुस को
 एशिया के छोट से देश जापान ने जीत लिया । जापान की विजय से गर्वित
 जवाहर भारत को शक्तिशाली बनाने की इच्छा करने लगे । आर्य भारत

अत्याचारे प्रवृद्धे हि गौराणामार्य-भारते ।
 विरोधमाचरन् स्रष्टा भारतीयास्तदा जना ॥१४४॥
 जवाहरस्तदाचारस्तेषां मगेञ्चलन्मुदा ।
 गान्धिना मिलित क्वापि तापितो देश-क्लेगनः ॥१४५॥
 मोतीलालमनन्तुष्ट दृष्ट्वा भारतमार्तिदम् ।
 जवाहरोऽलिवत्पत्र मुनीक्षणं जनक प्रति ॥१४६॥
 किमर्थमबरोधो हि क्रियते विदुषात्मना ।
 भवना भारतीयाना भावाना मोचनात्मनाम् ॥ १४७ ॥
 मतभेदश्चिर यावदचलज्जनकात्मज ।
 मोतीलालविरोधोऽन्ते गतः पुन-द्विवेकत ॥१४८॥
 गान्धि-भक्तोऽभवत्पूर्वं यथा पुनो जनाहरः ।
 ऐश्वर्यं जीवन त्यक्त्वा मत्यव्रत-पगयण ॥१४९॥
 ध्रुविकनाऽभवत्लालो निवृत्तो गौरदेगतः ।
 मृगया-दत्त-चित्तोऽपि विपण्णो मृग-हृत्यया ॥१५०॥
 गान्धिना सगतस्तदाभवद् भारत-सेवकः ।
 पित्राज्ञया कमलया विवाहमकरोन्मुदा ॥१५१॥

मे गारो के अत्याचार बढने पर स्रष्टा भारतीय विरोध प्रकट करने लगे । तब जवाहर जनता से मिल कर चरने लगे तथा देश के क्लेश से तप्ट, श्री गाधीजी से जा मिले ।

पिता को अपनी भारत-सेवा से अप्रसन्न जान जवाहर ने बडा तीव्र पत्र उनको लिखा । हे पिताजी ! आप विद्वान् हाकर भी स्वतन्त्रता चाहने वाले भारतीय-माथा का विरोध क्यों करत हो ? इस प्रकार पिता पुत्र का विरोध देर तक चल कर जवाहर के विवेक मे श्री मोतीलाल शान्त हो गय । जवाहर ने समानमोतीलाल भी एश्वर्यमय जीवन को छोड, सत्यव्रत परायण गाधी भक्त बन गय । जवाहर इन्डे स लीट र्दरिस्टर बने । गिजार का शीक होने हुए भी धम हया स दुम्नी हो कर गिजार करना छोड दिया । श्री गाधी जी से मिल कर दस सेवा म लग गये तथा उन्होंने पिता की आज्ञा से कमला क साथ प्रसन्नता से विवाह कर लिया ।

कमला-परिणयः

लक्ष्म्या विष्णुः शिवो गौर्या स्वरया जगदादिज ।
 नीतया राघवो यद्वद् रविमण्या यादवो यथा ॥१५२॥
 द्रौपद्या पाण्डवो मध्य सावित्र्या सत्यवास्तथा ।
 दुष्यन्त शकुन्तलया वंदर्भ्या नल-भूमिपः ॥१५३॥
 लोकनीत्या शास्त्ररीत्या वश-वृत्ति-विधानतः ।
 तथैवार्यं कमलयालकृतोऽभूज्जवाहरः ॥१५४॥

तदा च सर्वमौभाग्य-सुलक्षणया, विविध-विद्या विचक्षणया, सत्कर्म-दत्तक्षण्या, मकल-जन-कृतक्षण्या, धर्मार्थ-धृतरण्या, दुर्जना-नामाजीविपफण्या, सदा सदाचरणया, देशसेवार्थं कृत प्रणया, पति-तार्तरव-दत्त-वर्णया, देश-भगागतागति-जन-दत्त-शरणया, हरिजन-दुःख-हरणया, नित्य सन्मार्ग-दत्त-चरणया, सुपथ-विहरणया, अविरत-मधोजनमुद्धरणया, पापापहरणया, केवल मौभाग्यार्थं धृताभरणया, सर्वनोभावेन कृतार्पणया, स्वपतिचरणपरायणया, श्री शिव-सेवार्थं-मुपस्थितयापर्णया, सर्वक्षण्या, मदिरेक्षणया, शुभगुणपणया, शुद्धवशोत्पन्नया, सर्वगुणमम्पन्नया, महत् विपत्पतितयाप्यखिन्नया,

जिस प्रकार लक्ष्मी से विष्णु गौरी से शिव, स्वरा से ब्रह्मा सीता से राम, रविमणी से कृष्ण, द्रौपरी से अर्जुन, सावित्री से सत्यवान् शकुन्तला से दुष्यन्त, एव वंदर्भी से नल सुशोभित हुए उमी प्रकार लोक-नीति, शास्त्र-रीति व वश वृत्ति के द्वारा कमला से जवाहर अचट्टन हुए ।

*और तब सर्व-मौभाग्य सुलक्षणा, विविध विद्या-विचक्षणा, सत्कर्म से ध्यान देने वाली, सदावो सुख देने वाली-धर्मार्थं युद्ध तत्पर, दुर्जना से लिए सर्व-फण-मदमदानार-परायण देव सेवार्थं-कृतप्रण, पतिन-आर्त पुकार को सुनने वाली, देव विभाग होने से आये अनाथ जनों को शरण दन वाली हरिजन दुःख हरण करने वाली, नित्य सन्मार्ग में चलने वाली, अच्छे व्यवहार में रहने वाली, निरन्तर अकल ज्यों का उद्धार करने वाली, पाप हरण करने वाली, केवल मौभाग्यार्थं आभरण धारण करने वाली, अपने आपको सर्व-विध देश-सेवा से अर्पण करने वाली स्वपतिचरण परायण, श्री शिव-सेवार्थं उपस्थित

मविद्यया, समद्वया, अद्भुद्वया, कुजनविन्द्वया, मृजनाविन्द्वया,
अभिनव-यौवनकृद्वयापि अग्निजनानुभवकृद्वया, अचलया, अचपलया,
धीगन्धया, धीरजया, गम्भीरधीराद्विजया कमला इव काश्मी-
रजया विमलया कमलया जवाहरोजोभन ॥ १४५-१६० ॥

काश्मीर-सुपमा

जन्मभूमि तु काश्मीरा मकमनोगतवान्मदा ।
नत्र दृष्ट्वा पूर्वजाना म्भिति मौन्दरंपूणिताम् ॥१६३॥
पत्र-पुत्रवभृता हृद्या जलवायुमुजोभिताम् ।
नयनानन्ददां रम्यामनिन्द्या सर्वमुन्दरीम् ॥१६४॥
पर्वनोन्नतवृक्षेभ्यश्चान्नामाह्लादकारिणीम् ।
हृष्ट-पुष्ट जनैः मौम्या रोचना हिम-भास्वराम् ॥१६५॥
मन्त्रगिरा सुपवित्रा सर्व-मद्गुण-मण्डिताम् ।
धीर-मन्त्रा मुगीनजा मन्त्रान्मन्त्रैर्वद्विष्टिताम् ॥१६६॥
जनेकजाति वारोश्च मगनामप्यवष्टिताम् ।
नमजैर्जपादेश्च - द्रुष्ट-दुर्जनदण्डिताम् ॥१६७॥
नगोभि मागगद्गारै मयोतैः पूत-माननाम् ।
नटागोदर-मस्यैश्च कमनैरिति - हामिनीम् ॥१६८॥

पार्वती के समान, विश्वज्ञान रखने वाली, मदिह नयना वाली, सुमगुणों पर
न्योछावर होत वाली, शुद्धवसा उत्पन्न, सर्वगुण सम्पन्न, मयान् विराति में
पडकर भी अद्विल, विदुषी, मरुद, विगुद, अद्भुद, अर्जन विगोरी तथा
मज्जनातुङ्ग, अभिनव यौवन में भरी हुई भी जन्मे हुए के अनुभववा न कद,
अचला, अचपला, धी-ना-धीरता में दयावी, गम्भीर धीरादि में उत्पन्न
लक्ष्मी के समान, काश्मीर में उत्पन्न बनना न श्री जवाहर शाभापनान
हाने न ।

उत्र श्री जवाहर, कमला जी के माथ पूर्वजा की जन्मभूमि काश्मीर
में यात्रार्थ गए । वहाँ पर पूर्वजों की निवास भूमि को—मौन्दरंपूणित, पत्रों-
पत्रा में मरुद, हृद्य, जलवायु-मुजोभित, नयनानन्द, रम्य, अनिन्द्य, पक्षता तथा
उच्च श्रेणों में आच्छादित, आह्लादकारिणी, हृष्ट-पुष्ट जनों में मौम्य रोचना,

केसरै कुकुमैर्भूरिवर्णैरधिरजिताम् ।
 कुमुदैः कमलैर्नित्यमुत्पलैर्बहुकोमलाम् ॥१६८॥
 नद्यद्रिभिस्तडागैश्च सारविन्दैर्निन्दिताम् ।
 स्वर्गपदगर्वणीया दुर्गमामरिदस्युभि ॥१७०॥
 हृता कंलास-चन्द्राभ्या भृताममृत-विन्दुभि ।
 डोगरैर्मुद्गराकारैर्गिरिगौरव - सन्निभाम् ॥१७१॥
 पठाने कठिनाकारैर्वैकुण्ठादवलुण्ठिताम् ।
 द्विजैर्वेदाग-विद्भिश्च कृत यज्ञ-सुमगलाम् ॥१७२॥
 दया-दाक्षिण्य-सयुक्ता सात्विकी लोक-रोचनाम् ।
 त्याग-वैराग्य-युक्ता हि तपसा शुद्ध-लोचनाम् ॥१७३॥
 जीवोपकार-निरता विरतां पर-तापतः ।
 वेदोक्त-कर्मसु रता दीनाना दुरितापहाम् ॥१७४॥
 सर्व-भूत-हिता पुण्या गुण्या कारुण्य-सारिणीम् ।
 असगता कुसुमेषु सत्सगमनुवर्तिताम् ॥१७५॥
 अन्तर्गामैरगनाना भगिमाभिस्तरगिताम् ।
 कुविपयैर्दूरगा नित्य सत्यधर्मानुरजिताम् ॥१७६॥

हिम-भास्वरा, सच्चरित्र, सुपवित्र, सर्व-सद्गुण-मण्डित, वीर-मल्ल-युक्त, सगी-
 तज्ञो, सस्त्र-जस्त्र एव सास्त्रज्ञ बहुत पण्डितो वाली, अनेक जाति-वर्गो वाली
 भी अल्पण्डित, नयन-यत्नपालो द्वारा दुष्ट-दुर्जनो को दण्ड देने वाली, नौकाओ
 वाली समुद्र समान बड़ी बड़ी झीलें से पवित्र मन वाली, तालाबो के कमलो
 से हास्यवाली, अनेक वर्ण के केसर-कुंकुमो से रंगी हुई, विद्या-विकासी कुमुद
 तथा दिवा-बिवासी कमलो से कोमल, नदी, पर्वत, सरोवरो से फूलें कमलो से
 प्रशसित, स्वर्ग एव मोक्ष के समान अरि-दस्युओ से अगम्य, कंलास तथा चन्द्रगा
 से छीनी अमृत विन्दुओ से पूरित, मुद्गराकार दारीरो वाले डोगरो से पर्वतो जैसे
 बड़े गौरव वाली, कठिन आकार वाले पठानो द्वारा वैकुण्ठ से हर कर लाई
 हुई, वेदवेदागविद् विद्वानों द्वारा कृत यज्ञो से सुमगल वाली, दयादाक्षिण्य-युक्त,
 सात्विकी, लोकहितकारिणी, त्याग-वैराग्य युक्त, तप से शुद्ध नेत्रो वाली, जीवो-
 पकारनिरत, पर-दुःख विरत, सर्वभूत-हित, पुण्य, गुणों तथा कल्याण की प्रणाली,

सभ्या लभ्या ज्ञान-गम्या रम्या सौम्या सुमजुलाम् ।
 सर्वथा सत्य-मकरपा पुण्यगीरवगुम्फिनाम् ॥१७७॥
 ज्ञात्वा काश्मीरदेशस्य समृद्धिं परमोज्ज्वलाम् ।
 मदा सदाचाररता पुलकितोऽभूज्जवाहरः ॥१७८॥
 तुलयामाम देशेभ्यो यौरपेभ्यस्तदोत्तमाम् ।
 ज्ञान-गुर्वी धर्म-धुरा मधुराध्वर-धुरन्धराम् ॥१७९॥
 किं यौम्पीया देशा हि गर्वेषोन्नत-कन्धराः ।
 कृत्रिमं प्राकृतं रूपैः सुन्दराम्मद्वबमुन्धरा ॥१८०॥
 विजयेनोद्धता दृप्ता मद्यलाः कूट-कारिण ।
 अनाचार-रता नित्य लुब्धा क्षुब्धा विलासिन ॥१८१॥
 विषयावृत-चित्तास्तु दुराचारा मदोत्कटा ।
 तामसा-क्लेशकर्तारः लोभ-विध्वंस-कारकाः ॥१८२॥
 रयापयन्ति स्वात्मवृत्तं सम्य लोकोत्तरं महत् ।
 दोषपूर्णं मार्ग-भ्रष्टं निन्दितं मुनिसत्तमैः ॥१८३॥
 एकतो लोह-पापाणैरनाचारं सुपूरिताः ।
 यौरपीया जना भान्ति क्लेशावासा भयान्विता ॥१८४॥

नुसग में अमयत, सत्सग में लगी हुई, कामदेव की अग-अगनाओं की भगिमाओं में तरंगित, बुविषयो में अनासक्त, सत्य धर्म में अनुरक्त, सम्य, गुणलभ्य, ज्ञानगम्य, रम्य, सौम्य सुमजुल, सर्वथा सत्य सकल्प, पुण्य गीरव से गुम्फिन, ज्ञान में गुरु, धर्म की धुर, अच्छे यज्ञों से धर्म धुरन्धर, मदा सदाचार-रत, परम उज्ज्वल काश्मीर देश की समृद्धि को जानकर श्री जवाहर योरुप के देशों से इसकी तुलना करने लगे तो यही उत्तम रही ।

अर्थ—योरुप के देश क्यों अभिमान से तिर ऊँचा किये कह रहे हैं कि कृत्रिम तथा प्राकृत रूपों से हमारे देश की भूमि सुन्दर है वे विजय से उद्धत, दृप्त, छली, कूटकारी, अनाचारी, नित्य-लुब्ध, विलासी, विषयावृत चित्त, दुराचारी, मदोत्कट, क्लेशकर्ता, लोभ स्वकीय, विध्वंसक, दोषपूर्ण मार्ग-भ्रष्ट, मुनि सत्तमनिन्दित, चरित्र की सम्य महान् और लोकोत्तर कह रहे हैं । एक ओर तो लोह-पापाणों के अनाचारों से भरे योरुप के लोग धमक रहे हैं, क्लेशों

इतन्तु भारती देशमुष्ट पुष्ट. स्वभागत. ।
 परस्व विपमाग्य हि परित्यज्य स्वभावत ॥१८५॥
 शोभते परमोदार पञ्चोत्तीपचारकः ।
 षट्पिनिदिष्टमार्गेण स्वेष्टमाधनतत्पर ॥१८६॥
 त पीडयन्ति पापा हि क्षपाटा क्षयकारिण ।
 राक्षसाः साक्षरा दृष्टाः स्वार्थमाधनलोलुपा ॥१८७॥
 गौरा रौरव-पोरा हि चोग घोराः सुराग्यः ।
 निर्दयाः हिंसका. क्रूरा विश्वनाशन तत्परा ॥१८८॥
 अतरत वन्धनैर्मुक्त करिष्यामि प्रयत्नतः ।
 सहिष्ये यातनान्तोत्रा यतिष्येऽग्निल नाधनै ॥१८९॥
 विरतो न भविष्यामि रणात्सत्याग्रहात्मकात् ।
 स्वाधीन न करिष्यामि यावद्देश हि भारतम् ॥१९०॥
 युवकोऽसौ विलासार्थं मपत्नीको जवाहरः ।
 गत काश्मीरदेश हि शृ गार-रस-वद्धनम् ॥१९१॥
 बहन्तमनिलैर्मन्दैर्दहन्त मदनानलैः ।
 पूजित पुष्पवाणीश्च केकी-कोकिल-कूजितम् ॥१९२॥

के घर और ठरे हुए है दूसरी ओर अपने भाग से ही तुष्ट-पुष्ट पर धन को स्वभाव से ही विप समझ कर छोड़, परम उदार लोकोपकारी भारत शोभायमान है । ऐसे भारत को—पापी निशाचर क्षयकारी राक्षस, साक्षरताभिमानी, स्वार्थ-माधन लोलुप, घोर रौरव नरक निवासी, घोर-स्वभाव, चौर, देवशत्रु निर्दयी हिंसक, क्रूर और विश्वनाशन तत्पर पीड़ित करते हैं ।

अर्थ—इसलिए ऐसे भारत को प्रयत्नों से स्वाधीन कराऊंगा तीव्र यातना सहन करूंगा । जब तक देश को स्वाधीन नहीं कर लूंगा सत्याग्रह युद्ध से नहीं हटूंगा ।

वह युवायुगल—शृ गारवद्धक मन्द वायु-पूरित, मदनानल से जड़ीयक, काम के पुष्प-वाणी से पूजित, मयूर, कोयलो से कूजित, रम्य उद्यानों तथा

रम्योचानैः पयोपानैर्गनिम्नानैश्च गुञ्जितम् ।
 फल-फुल्लैश्चलदलै मलिनैः कल-कलायितम् ॥१६३॥
 पार्थिव मुपमागार सर्वम्ब स्वर्गज त्वजम् ।
 अतुल मप्नपानानैर्न्ध्वंलोकाद्धृत फलम् ॥१६४॥
 पर व्यतिक्रमो जात परमाश्चर्यकारक ।
 रति हित्वा गतो वीर रम वैभवभावनः ॥१६५॥
 क्लिष्टाममरनाथस्य यात्रा तु कृतवानयम् ।
 जवाहरोऽपनद्धैमे विषमे निगंतो बहि ॥१६६॥
 निर्भयस्तु तदा तत्र मोत्साहः कार्य-मायक ।
 लन्त्र-लक्ष्योऽजयन्मृत्यु नित्य मत्स्य-परायणः ॥१६७॥
 मूल्यवन्तो हि लालस्य रोचञ्च सुप्रिया भूधम् ।
 सर्वक्षेत्रा प्रभावा हि परं कल्याण-कारिण ॥१६८॥
 जवाहरस्य मौजन्य हृद्य पुण्य मुदावहम् ।
 समुद्रमिव गम्भीर चरित धीर-वीरजम् ॥१६९॥
 धूरगौरवनीर हि गौर-पाटीर-सौरभम् ।
 शुभ्र क्षीरान्विहिण्डीर ह्यमानमतीरजम् ॥२००॥

भीलो मे तैरती हुई नौकाओं मे गानों की तानों से गुञ्जित, भूमते हुए पत्ता-
 फूल-फला वाले ब्रह्मों से प्रतिबिम्बित जनों से कल-कल करने वाले, पृथ्वी की
 मुपमा के आगार स्वर्ग के शाश्वत सर्वेश्व सप्न पानालों से अनुल, ऊर्ध्व लोक स
 ताये हुए सार रूप उत्तम काश्मीर म, काम-वैलि के लिए गया ।

पर बड़ा विपरीत काम हुआ, ऐसे विलास म्यान मे गय जवाहर का
 वैभव मे पला हुआ मन भी वीर रम मे प्रवृत्त हुआ । दुर्गम अमरनाथ जी की
 यात्रा करते हुए जवाहर भयानक वर्षों मे फँस गये, पर निकल कर निर्भय हुए
 उत्साह से कर्त्तव्य पावन के लिए तेज चलने लगे तथा मृत्यु को जीन लक्ष्य
 लाम मे मफ्त हो गये ।

श्री जवाहर के जगुभव सर्व क्षेत्रीय, रोचक, अति प्रिय, परम कल्याण-
 कारी थे । श्री जवाहर के सुखद, हृद्य, पुण्य, मुखावह धैर्य-धीरता से पूर्ण,
 धीर्य-गौरव के जल से भरे, श्वेत चन्दन के समान यश-सौरभ से सुवासित,

स्वल्प-बुद्धिरह जातो लेखने चातिदुस्तरे ।
 परमत्राफलोऽप्येव भविष्यामि प्रशसित ॥२०१॥
 चरित्र-गौरवेणैव प्रयास सफलो मम ।
 दन्तभगो हि नागाना श्लाघ्यो गिरि-विदारणे ॥२०२॥

समुद्र सम गम्भीर, क्षीर-सागर की फेन के समान सफेद, मान सरोवर के हस—चरित्र का वर्णन करने चला हूँ । स्वल्प-बुद्धि में इस चरित्र लेखन कार्य में प्रवृत्त हूँ । इस दुस्तर कार्य में असफल हुआ भी प्रशसित ही हूँगा । चरित्र गौरव से ही मेरा प्रयास सफल होगा, क्योंकि पर्वत तोड़ने में हाथियों के दात टूटना भी श्लाघ्य ही होता है ।



स्वराज्यान्दोलनम्

प्रथमे समरे घोरे गौरविध्वस-शरके ।
 साहाय्यमाचरन् शौर्य वीरा भारतसैनिकाः ॥२०३॥
 तदेपा युद्धसामर्थ्याद् भीता गौरा कुलक्षणा ।
 रोलटैक्ट दुष्ट-विधिं कृतवन्तो दुरोदराः ॥२०४॥
 विरोधमाचरेयुश्चेत्सैनिका प्राप्तशिक्षणा ।
 विनाशोऽवश्यमस्माक भविष्यति न सशयः ॥२०५॥
 मृता नष्टा पराभूता सर्वथा गतगौरवा ।
 येषा साहाय्यदानेन जाता लब्धमनोरथा ॥२०६॥
 तेषामेव विनाशार्थं सरलाना सुचेतसाम् ।
 जाता भ्रष्टव्रता दुष्टा कुहकाः वर्ण-सकराः ॥२०७॥
 स्वाधीनता-प्रदानस्य स्थाने रोलट-नामकम् ।
 भारताय विधिं निन्द्य प्रादुर्गौरव-नाशनम् ॥२०८॥
 प्रतिश्रुत तु स्वातन्त्र्य पूर्वं युद्धाद्विनिश्चितम् ।
 यदा युद्ध विजेष्यामो मोक्ष्यामो भारती महीम् ॥२०९॥
 पर रोलटविधानेन पीडितो भारतो भृशम् ।
 विजयेनोद्धता गौरा विस्मृताः प्राणरक्षकान् ॥२१०॥

अर्थ—गोरे के अग्रेज विनाशी प्रथम युद्ध में, भारतीय वीर सैनिकों ने शौर्य पूर्ण सहायता की थी । तब भारतीयों की युद्ध सामर्थ्य से भीत दुष्ट-हृदय कुलक्षण गोरो ने रोलट ऐक्ट जैसे बुरे कानून को बनाया । गोरो ने सोचा कि यदि शिक्षित भारतीय सैनिक हमारे विरुद्ध हो जाय तो अवश्य हमारा विनाश होगा । जिन भारतीयों की सहायता से मृत, नष्ट, पराभूत सर्वथा गत-गौरव गोरे पुन अपनी विजय प्राप्त कर गये, उन्हीं सरल सुचित्त भारतीयों के विनाशार्थ—वर्णशकर, कृतघ्न, भ्रष्ट व्रत गोरे मायावी बन गये । स्वाधीनता देने के बदले, भारत को गौरव-विनाशी दुष्ट रोलट ऐक्ट दिया । गोरो ने पहले प्रतिज्ञा की थी कि—युद्ध जीत कर भारत को स्वाधीन कर दूँगे, किन्तु

विलोक्य देगनेतार शान्तिसाधनतत्पराः ।
 वभूवुर्दुःखिता भूयि सर्वे भग्न-मनोरथा ॥२११॥
 तथापि शान्त-रूपेण रौलटैक्ट-विरोधिनः ।
 दमिताः दण्डिताः क्लिष्टाः सर्वे भारतवामिन ॥२१२॥
 निर्दय शासनेनाथ पीडिता जात-चेतना ।
 हूताधिकारा सर्वे हि रदन्तो विवशा परम् ॥२१३॥
 जवाहरो ज्ञातवृत्तः पंचाम्बुरक्तपानज ।
 त्यक्तुमैच्छद्वि सर्वस्वं भीतो जनकशासनात् ॥२१४॥
 अस्वीकृतिं पितु प्राप्य कथं याम्यामि सगरे ।
 चिन्तयन्निति देशार्थं निदेशार्थं हि पितृजम् ॥२१५॥
 गान्धिन तु गतो ज्ञातु किं करोम्यनुशाधि माम् ।
 पर तात कठोरो हि सर्वसाधनसमुत् ॥२१६॥
 नानुमेने परित्याग सर्वस्व बहुवैभवम् ।
 दैनन्दिनो विवादोऽस्ति सघर्षे पितृ-पुत्रयोः ॥२१७॥
 जातो जयो हि पुत्रस्य देशसेवाव्रतात्मक ।
 "सर्वतो जयमन्विच्छेत्पुत्रादिच्छेत्पराभवम्" ॥२१८॥

रौलट ऐक्ट से भारत को और पीड़ित किया, विजयोद्धत मोरे प्राण रक्षकों को भूल गये, इस व्यवहार को देख शान्ति साधन में लगे गांधी आदि सभी नेता भग्न-मनोरथ बलि दुःखी हुए। इतने पर भी शान्ति में ही विरोध करने वाले भारतीयों को मोरो ने दबाया, दण्ड तथा बन्धेदा दिये। निर्दय शासन से पीड़ित मुँदिर हूताधिकार भारतीय अपने घरों में ही रोने पीटने लगे।

पञ्जाब के रक्तपात को जान कर सर्वस्व त्याग चाहते हुए भी जवाहर पिताजी के शासन से डरते थे। पिता की आज्ञा बिना स्वाधीनता-पुट्ट में बँसे जाऊँ, अतः देश एवं पितृ निर्देश की ओर जवाहर देखने लगे। सब थी जवाहर महात्मा गांधी के पास जाकर कहने लगे कि मुझे कष्टों की शिक्षा दो, क्योंकि सर्व साधन सम्पन्न मेरे पिता कठोर हैं। पिता ने बहुत वैभव सर्वस्व त्याग की आज्ञा नहीं दी। प्रतिदिन पिता पुत्र के विचारों का सघर्ष चलता रहा। अन्त में पुत्र के देश सेवात्मक विचारों की जय हुई, क्योंकि 'सर्वत्र विजयवाञ्छी पिता भी पुत्र से पराजय चाह - यही नीति जवाहर को

इति नीतिगंता सत्य विजये हि जवाहरे ।
 ऐकमत्यमभूदद्य मोतीलालगृहे शुभे ॥२१६॥
 विक्रीताः सर्वमम्भारा भाग्यतानिकरा वृथा ।
 योरुपा वैद्य-विन्यासा बध्वा मशकटात्मन्या ॥२२०॥
 त्यक्ता भूत्वा विलानार्थं ये हि पूर्वं नियोजिता ।
 खट्वाण्यपि वस्त्राणि भोग्य भोग्य नुमयनम् ॥२२१॥
 कुटुम्बः मन्त्रो युद्धेऽपतद् गान्धीनिदर्शिते ।
 स्वकीयेऽपूर्वं-माफल्ये प्रमन्नोऽभूज्जवाहर ॥२२२॥
 खट्वाण्यपि वस्त्राणि निर्मिनानि स्वदेशजं ।
 स्वीकृतानि च वस्त्रानि भारतीयानि सर्वत ॥२२३॥
 स्वल्पमूल्यानि स्वेच्छानो निर्धने देशभारते ।
 बान्दोलनमाग्ध मत्स्य मत्वाग्रहान्मक्षम् ॥२२४॥
 पंजाब-देशे वीराणामरीणा रणरोपणे ।
 शान्तावनिशूराणा भूती दोषगुणान्विता ॥२२५॥
 भूपेन्द्र मिहः पट्ट्याले नाभेऽभूद्रिपुसूदनः ।
 पितृव्य भ्रानृजाधार सम्बन्ध. कुलजन्तयोः ॥२२६॥

विजय का कारण दती, जिसमे मोतीलाल जी के घर में परिवर्तन हुआ गया ।

भारत के दिपरीत योद्धा के देश विन्यास, धाटे तथा गाडिया वैद्य दी, विलासार्थ-नियुक्त भृत्य हटा दिये, वस्त्र खट्वा के बने, भोग्य एवं भोग्य वस्तुएं सदात ही गयीं, सारा कुटुम्ब गांधी-दर्शित सत्याग्रह युद्ध में बूढ़ पडा, अपनी इस गफलता पर जवाहर बड़ खुश हुए । तब पूरे परिवार ने निर्जन भारत में स्वेच्छा से स्वल्प-मूल्य, अपने देश में बने खट्वा वस्त्र तथा भारतीय माधन अपना तिन तथा सत्याग्रह-जान्दोलन जारम्भ कर दिया ।

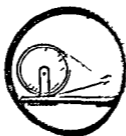
पनुत्रों को युद्ध में विलविलाने वाला वीरों के देश पंजाब में गुण दीपान्वित शूरवीरों के दो राज्य हुए हैं । पट्टियाला में भूपेन्द्रमिह तथा नाभा में रिपुदमन मिह नाम से चाचा भतीजे के सम्बन्ध से दो राजा थे । पूनवज में उत्पन्न हुए

नाभा-पट्ट्यालयोस्तत्र नृपयो कलहो ऽभवत् ।
 भूपेन्द्र-रिपुदमनयोः फूलवक्षजयोरपि ॥२२७॥
 चाटुकारैर्तुं व्यपिशुने स्वार्थान्धैरधिकारिभिः ।
 परस्परं सकपटैर्नासीत्तत्रान्यकारणम् ॥२२८॥
 गोरगैर्लब्धमाहाय्यैः पट्ट्यालयशासकैः ।
 च्यावितो राज्यतो नाभा-नरेशो देशसेवक ॥२२९॥
 शासनस्थापकरतत्र नियुक्तो गौरदेशज ।
 निरद्वोऽखण्ड पाठो वै गौरेण गुरु-ग्रन्थज ॥२३०॥
 टिप्प्री साहिव इत्यारये गुह्यद्वारे प्रवर्तित ।
 अखण्डपाठारम्भार्थं रिपुसूदन-हैतुकम् ॥२३१॥
 आन्दोलनमारब्धं सिक्खैर्लोक-हितावहैः ।
 यूयैहि गमनारम्भः कृतं सिक्खैर्नियोजितः ॥२३२॥
 निरद्वो राज-गुरुपैर्नियुक्तैरतिनिष्ठुरैः ।
 निरद्वोः सैनिकैस्तत्र ये यूथास्तेऽतिताडिता ॥२३३॥
 त्यक्ता च घोर वान्तारे निर्जने क्लेश-सकुले ।
 अस्यातिघोराचारस्य समाचारान् निरकुशान् ॥२३४॥
 क्लेशाकुलोऽपठन्नित्यं जनताति-निपीडित ।
 जवाहरो महानात्मा पर-दुःखेन कपित ॥२३५॥

श्री इन दोनों का परस्पर कलह चला । चाटुकार, सुभ्य, पिशुन, स्वार्थान्ध
 कपटी अधिकारियों के कारण ही वह विवाद था और कोई विशेष कारण
 नहीं था । पट्ट्याला के शासकों की सहायता पाकर गौरों ने नाभा नरेश को
 राज्य च्युत कर दिया । शासन व्यवस्था के लिए नियुक्त गौरे ने टिप्प्री साहिव
 गुरु द्वारे में आरम्भ श्री गुरुग्रन्थ साहिव व अखण्ड पाठ को बन्द करा दिया । लोक
 हिर्नपी मिषलों ने अखण्ड पाठ करने तथा महाराजा रिपुदमनसिंह को वापस
 लाने के लिए आन्दोलन आरम्भ किया । सिक्खों द्वारा निर्धारित जत्थों ने
 आना शुरू किया तथा नियुक्त निष्ठुर राज पुण्या ने उसे रोक दिया । जि
 जत्था को गैनिर्नों ने घेर लिया उन्हें बहुत मारा तथा निर्जन क्लेश-बहुत घार
 म में जा छोड़ा । इस अति घोर आचार व निरकुश समाचारों को, जनता

मभामम्मेलनान्ते तु कृते दिल्लीा विशेषतः ।
 द्वितीय मिक्व-मन्दोह द्रष्टु तत्र-निमन्वितः ॥२३६॥
 स्वीचवार महाभाग सहयोगि-ममन्वितः ।
 गिडवानी के०के० मन्तानमित्राभ्या सगतो गतः ॥२३७॥
 निवारितोऽपि गौरागैर्घोरभयप्रदयंकैः ।
 निभयस्तु गतस्तत्र मिनद्वय-ममन्वित ॥२३८॥

के दुःख से पीड़ित, डूमरो के क्लेश से आकर्षित, महान् आरमा आरमा से पड़ते थे । दिल्ली में विशेष रूप से किय गय वाप्रेम अधिवेशन के द्वारा मित्रों के दूसरे जत्थे के चलने पर वहाँ की परिस्थिति को देखते हुए बुलाये हुए जवाहर ने श्री गिडवानी और के० के० मन्तानम् आदि मित्रों के साथ वहाँ जाना स्वीकार कर लिया । घोर-घर्षा, अदृष्टि द्वारा रोके जाने पर भी दोनों मित्रों के साथ जैतों में निर्भय हुं



जयतु [जैतो] नाम्ना प्रसिद्धे लेखकस्य जन्मनगरे
श्री जवाहरलालस्य प्रथमं चरणकमलार्पण-वर्णनम्

जयतुनगरे रम्ये नाभा-राज्यमुपाधिते ।
जगाम जगदाधारः सजगः सजगौ मये ॥२३६॥
गृहीतो राजनीतिज्ञैर्निबद्धो लौहशृङ्खलैः ।
उच्छृङ्खलं खलैरेव मच्छलैश्च निरगलैः ॥२४०॥
निर्बलैर्नोतिधर्मेषु समलैरध-राशिषु ।
निरक्षरैरनाचारैर्निश्चरैरतिदुश्चरैः ॥२४१॥
अत्याचार-परैरोर्द्वन्द्वरम्भरिभिश्चरैः ।
खरैरभद्रशिखरैरैतिराचारवर्जितैः ॥२४२॥
गोरखडोंगरैश्चापि नैपालैः काशमीरजैः ।
वराकैर्लङ्क-साहाय्यैरसह्यैरसदात्मभिः ॥२४३॥
परमस्य प्रतापेन मोतीलालप्रभावतः ।
त्यक्तो जवाहर सिंहो जम्बुकैर्जात-पौरुषैः ॥२४४॥
तथापि देशमेवाया सगतोऽहनिश मुदा ।
निर्भयः क्लेश-कार्येषु लंकाराधन-तत्परः ॥२४५॥
जगर्जं धीर गीरेषु गच्छध्वमति सत्वरम् ।
त्यजध्वं भारत भार भजध्वं निजपद्धतिम् ॥२४६॥

अर्थ—नाभा राज्य में बसनेवाले जैतो नगर में जयतु के आधार, वहाँ के कष्टों को जानते हुए भी, मार्ग में देशभक्ति के भीत गाते हुए चले । वहाँ पर दृष्टे उच्छृङ्खल, खल, छद्मी, निरगल, नीतिधर्म में निर्बल, अधराशि में मिते, निरक्षर, अनाचारी, निश्चर, दुश्चर, अत्याचार-वराधण, रीद्र-उदरम्भरी चर, राट, अभद्र-निषर, रीति-आचार-वर्जित, दुष्टात्मा राजपुरुषों ने - बेचारे नैपाली गोरखों व काश्मीरी डोंगरो की महायत्ना में पकट कर हथकड़ियों से जकट दिया । पर इनके प्रताप तथा प० मोतीलाल जी के प्रभाव से उनके पौरुष को जान कर गोरों की दृष्टि न जराट्टर रूपी मिट्टी की छोड़ दिया । तथापि देश-सेवा में दिनरान प्रयत्नता ग लके हुए, कष्टिता पावों में निर्भय, लाकाराधन-तत्पर जवाहर, गीरे में धीर गर्जना करते हुए कहने से कि—ऐ धर्मजो ! तुम यहाँ से शीघ्र चले जाओ, भारत के भार का उबार दो, अपना रास्ता नागों ।

कथ सहैयुर्गौरा हि विरोध शासनात्मकम् ।
 पाण्मासिकाऽभवद् वन्द्य उभयो पितृ पुत्रया ॥२४७॥
 ततस्तु घन्वी मुक्तिश्च नित्य जाता रतिप्रदा ।
 मुक्ता यदाखिला राजवन्दिना दैवयोगत ॥२४८॥
 जवाहरोऽभवन्मुक्ता किञ्चित्काल मुयागत ।
 मौमनस्य पर नासीत्प्रजापालकयोह दि ॥२४९॥
 पूर्वयुद्धान्तिमे भागे रुस प्राति महत्यभूत् ।
 समाप्त जारज राज्य राजित जन-शामनम् ॥२५०॥
 दशमे ह्युत्तमव चाम्या नान्त्वा लोकैरुपस्थित ।
 जवाहरो गतो रुस द्रष्टु स्वातन्त्र्य मगलम् ॥२५१॥
 तदा हि रुस देशीया सयता क्लिष्ट-जीवना ।
 मुस्मितास्या प्रकाशाङ्गा सुव्रता दृढनिश्चया ॥२५२॥
 सयत्ना रुसमुद्धर्तुं सर्वं देश समुत्तनम् ।
 दृष्टवंपा हि समुत्साह सुप्रभावो जवाहर ॥२५३॥
 निवृत्तो भारत देश तदाय शुभसेवक ।
 ऐक्य भारतदशस्य दृष्ट्वा सत्यपरायणम् ॥२५४॥
 कपटा कूटनीतिज्ञा गौरा भारत-वचका ।
 दानुर्मन्त्रैस्तदा किञ्चित्स्वातन्त्र्य राजनैतिकम् ॥२५५॥

अर्थ—अप्रज शासन का विरोध कैसे सह अत पिता-पुत्रो को छ मास की जेल हो गयी । इसका वाट तथमा छूटना रोज का काम हो गया । जब दैव योग मे सारे राज वन्दी छाडे गय तब कुछ समय क तिए जब हर भी छूटे पर प्रजा तथा शासका के दिन म सदभावना नही थी ।

पूव युद्ध के अन्तिम भाग मे रुस म बडी भारी प्राति हुई उनके दाम उत्तमव को देवन के तिए जवाहर बहा गये तब रुस निवासी वनेण सहन करते हुए भी सयम से हँम मुख प्रत नचित सद्व्रती तथा दृढनिश्चयी थ । रुसवासी सारे देग की उ नति तथा उद्धार म सयत्न थ । उनक सम्यक उत्साह को दख कर जवाहर पर अच्छा प्रभाव पया ।

तब भारत सेवक जवाहर स्वदेश लौटे इधर सत्यपरायण भारतीय एकता

विचारार्थं समागच्छद्देशे साईमन कमीशनम् ।
 दास्यामो भारतार्थं वै राज्यमाग्लनियन्त्रितम् ॥२५६॥
 परमैच्छन् भारतीया स्वराज्यमखिलद्विमत् ।
 अखण्डमण्डल राज्य सर्वसाधनसम्भृतम् ॥२५७॥
 निरकुशं जन-कृत जनतायाः हितावहम् ।
 अतः कमीशनस्यास्य वहिष्कारः कृतो जनैः ॥२५८॥
 श्रीलाजपतमुद्दयेषु शोक-ध्वज-धृतेषु च ।
 प्रहारो यष्टिकादीना कृतो गौरैरमानुषैः ॥२५९॥
 पचाम्बुकेशरी-प्रत्यो लालाभाजपतोऽपतत् ।
 हतस्तु ताडितो वक्षे निर्दयैर्गौरैर-राक्षसैः ॥२६०॥
 शोकाकुलमिम देश पूर्णस्वातन्त्र्यभागिनम् ।
 परित्यज्यामरो जातः प्रिय. पचाम्बु-केशरी ॥२६१॥
 अत्याचार तु गौराणामप्रतिवार-वर्तुषु ।
 अशस्त्रेषु विलोचयैव विव्यथेऽय जवाहर ॥२६२॥
 धृत-व्रतोऽभवत्तत्र कटिबद्धः सदाग्रह ।
 अधिवेशन स्वराज्यस्य सभाया लवनागरम् ॥२६३॥
 तत्राध्यक्षोऽभवद् वीरो देशदासो जवाहर ।
 अर्धरात्रे धृत-व्रता सर्वैस्वार्पण-तत्परा ॥२६४॥

को देव, कपटी मूढनीतिज्ञ, भारतवर्षक गौरो ने कुछ राजनैतिक स्वाधीनता देनी चाही । दृग विचार के लिए गाइमन कमीशन आया कि भारत को गौरो के अधीन शासन चलाने का अधिकार दिया जाय । किन्तु भारतीय सर्व-सम्पद, सर्व-साधन-पूर्ण, निरकुश, जन-कृत, जनहितावह, अखण्डमण्डल स्वराज्य चाहते थे, अतः इन्होंने गाइमन कमीशन का बहिष्कार किया ।

श्री लालाजी प्रसन्न व्यवस्थितों के बाले भण्डे लेकर विरोध करने पर राजवन्तहीन गौरो ने लाली प्रदत्त किया, जिसपर गौरो रक्षणा की स्मृतियों शाही पर लगेने से पत्राव केसरी—पूर्ण स्वतन्त्रता के भाभी दृग देश को शोकाकुल द्वाः—बगर हो गये । प्रतिवार न करने वाले रिक्त दृग लोगो पर अत्याचार दृग बराहूर दु भी हो गये । लालीर से बाधेन गभा व अध्या

भाषणेनास्य वीरस्य वलिदानकृतोद्यमा ।
 प्रेरणेनात्मत्यागस्य भारतीयास्तु तत्परा ॥२६५॥
 पूर्ण-स्वातन्त्र्यमानेतु कटिवद्धोऽभवत्तथा ।
 सर्वसौख्य परित्यज्य क्लिष्ट-कर्मणि तत्परा ॥२६६॥
 मभ्यताया विदेशस्य तुष्टः पुष्ट सुशिक्षित ।
 तथापि भारतीयाना मर्मज्ञो हि जवाहर ॥२६७॥
 कृपकथमिकाणाञ्च सकटैर्दुःखितो यथा ।
 जवाहरोऽभवत्खिन्नो नान्य वदन्न नायक ॥२६८॥
 मिलित कृपकेऽप्येव श्रमिकेष्वपि सगत ।
 उन्नायकोऽभवत्तेषां जीवने दत्तयौवन ॥२६९॥
 सर्वप्रियोऽभवत्तत्राध्यक्षो लोकप्रमादकः ।
 आन्दोलने लावणिके घृतो वीरो जवाहर ॥२७०॥
 कारागार गतो मुक्तो घृतो मुक्तो मुहुर्मुहुः ।
 समिन्न सकटुम्बोऽमी सत्याग्रहपरायण ॥२७१॥
 गतो हि क्लेश-बाहुल्य पर न विचचालह ।
 विसृज्य सुखसन्दोह विश्राममतिशोभनम् ॥२७२॥

श्री जवाहर बने, वहाँ पर सर्वस्व त्याग की प्रतिज्ञा तथा प्रेरणा की जिसे सुन
 थाधी रात में ही भारतीयों ने वलिदान की भावना प्रकट की ।

चौबीस वर्ष के जवाहर काग्रेसमाध्यक्ष बने । इससे पूर्व कोई भी
 इतनी छोटी आयु में अध्यक्ष नहीं बना था । इसके जीवन में सभा में नई
 शक्ति भर दी, इस मनस्वी ने मन्त्रित्व तो पहले ही देर तक किया था, पर
 सभाध्यक्ष के चमत्कार लोगों ने श्रवण जाने, इस प्रकार इन्होंने सभा को अच्छी
 उन्नति दी । सब मुख छाड़ कठिन कर्म में प्रवृत्त जवाहर पूर्ण स्वाधीनता लेने की
 कटिवद्ध हो गये, योद्धा की सभ्यता मत्पुत्र-पुत्र एव शिक्षित होकर भी ये भारतीया
 के मर्मज्ञ थे । कृपक एव श्रमिका के कष्टों से जिस प्रकार जवाहर को दुःख
 हुआ वंशा आज तक किसी को भी नहीं हुआ । उन्होंने कृपकों व श्रमिकों में
 मिलकर उनके जीवनार्थ अपने को अर्पण कर उन्हें उन्नत किया । उनकी प्रसन्नता
 के लिए प्रिय जवाहर नमक आन्दोलन में पकड़े गये । मित्रा तथा कुटुम्ब के
 माय सत्याग्रह में लगे बार-बार पकड़े तथा छोड़े गये । यो सुधाधिक्य एव सुन्दर
 विश्राम को छोड़, क्लेश-जाल में फँस कर भी वे देश-सेवा से विचलित नहीं हुए ।

आहुतयः

अयोध्याधिपयत्पूज्यो मोतीलालो जहाविमम् ।
 धीर राम-सम धीर गम्भीर विविपालकम् ॥ २७६ ॥
 यथारामेऽति दुखानि पतितानि मुहुर्मुहुः ।
 तथा जवाहरो धीरः पतित शोक-सागरे ॥ २७७ ॥
 त्यक्त्वा शोकाकुल मोतीलालस्त्वमरता गत ।
 कौटुम्बिकोऽपतद्भारो देशोद्वारे जवाहरे ॥ २७८ ॥
 धर्म्यैव घृत सर्व कुशलेन सु-सयतम् ।
 ज्ञात सर्वजनैस्तत्र विवेकोऽस्य महात्मनः ॥ २७९ ॥
 कमला श्रमबाहुल्याद् गता रोग सुकोमला ।
 मातापि व्याधि-युक्तासीत् प्राणाधार-वियोगत ॥ २८० ॥
 तयो रोग-निरोधार्थं माता-पत्नी-समन्वित ।
 मसूरीमागतो वीरो होटलावासमाश्रित ॥ २८१ ॥
 निर्वासितोऽधिकारिभ्यः प्रयागन्त्वागत पुनः ।
 प्रतापगढत प्राप्तं कृपकं सगतस्तदा ॥ २८२ ॥
 जीर्णशीर्णानि-वस्त्रैश्च बुभुक्षापीडितैर्जनैः ।
 वृद्धैःकरभरैर्घोरैर्गृहेभ्योऽपि बहिष्कृतं ॥ २८३ ॥

अर्थ—पूज्य अयोध्यापति महाराज दशरथ के समान मोतीलाल जी ने भगवान् श्री राम के समान धीर, धीर, गम्भीर और आज्ञापालक श्री जवाहर को विदा किया । जिस प्रकार श्रीरामश्री वारम्बार मकड़ों में पड़े थे, वैसे ही जवाहर भी अनेकों बार शोक सागर में पड़े । श्री मोतीलाल जी के अमर हो जाने पर शोकाकुल जवाहर पर देशोद्वार के साथ ही कुटुम्ब का भार भी आ पड़ा । इस चतुर ने धर्म एव मयम में सब सहन किया तब लोगों ने इसके विवेक को पहचाना । कोमलाभी कमला श्रमाधिक्य से रुग्ण हो गयी, माता स्वरूपा भी पूज्य पति प्राणाधार श्री माताजी के वियोग में रण्य थी । उन दोनों की चिन्ता के लिए माता और पत्नी को साथ लाने जवाहर मसूरी पहुँच कर होटल में टहरा । पर गारे अधिकारियों ने भारतीय होने के कारण इन्हें होटल में तिकाना दिया । य बाणिज्य प्रयाग आ गया । तत्र प्रतापगढ़ में आव—जीर्ण व क्षीर्ण वस्त्रों वाल, बुभुक्षा पीडित जी, वृद्ध कर-भारों से विकरान, धरा से भी

अनाधारेनाचारैः सर्वंस्वमपि लुठिनं ।
 ग्राम गतो हि तत्रत्य दशया पश्चिनोऽभवत् ॥२८४॥
 तथापि वज्रपातोऽभूत्कमलानिधनात्मक ।
 स्वामिना मगतायामीत्कारागार गता मुहु ॥२८५॥
 कृष्णाभवद्देश-दासी कमला कमललोचना ।
 चिकित्सार्थं गता मापि विदेश रोगयोगत ॥२८६॥
 तथापि स्वास्थ्य नैवाप देहान्नोऽभ्याम्नदाभवत् ।
 पति पुत्री विहायैषा रुदन्ती भाग्नी महीम् ॥२८७॥
 नून गतेन्दिरा-लोक शोक-मग्नात्मजेन्दिराम् ।
 परित्यज्य भुव याता दिव तोरमभीष्मिम् ॥२८८॥
 जवाहरो निवृत्तस्तु भारत भार-पीडित ।
 काग्रेमाध्यक्षतां प्राप्त कटिवद्ध स्वकर्मणि ॥२८९॥
 गौरैर्भारत-भ्रान्त्यर्थं अधिकार स्वराज्यज ।
 दत्त किञ्चिद्विनोदार्यं प्राप्ता प्रान्तैः स्वतन्त्रता ॥२९०॥
 अफलास्तु भविष्यन्ति भारतीया स्वशामने ।
 यास्यन्ति हास्यता दीना राजनीत्यामचेतना ॥२९१॥
 केन्द्रस्तत्वधिष्ठितो गौरैः सर्व-शक्ति-ममन्वितैः ।
 अतो देशस्त्वसन्तुष्ट स्वाधिकारैः सवन्वने ॥२९२॥

निकाले हुए, आधार तथा आचार से हीन, सर्वस्व लुटे हुए—किसानों से मिले तथा उनके गावों में जाकर वहाँ की दशा से परिचित हुए ।

तब अनेकों बार पति के संग जेल जाने वाली, चिकित्सार्थं विदेश गयी कमललोचना कमला, रोती हुई भारत-भूमि, पति तथा पुत्री को छोड़, इन्दिरा (लक्ष्मी) के लोक संकुण्ड में चली गयी । कमला के निधनात्मक वज्रपात के भार से पीडित नेहरू भारत छोटे और कांग्रेस के अध्यक्ष बन अपने काम में लग गये ।

भारत की कथित भ्रात सम्पन्नता देने के लिए, मनोविनोदार्यं गौरों ने कुछ स्वराज्य के अधिकार दिये । भावना यह थी कि—दीन, राजनीति से अपरिचित, भारतीय स्वशासन में असफल होंगे । अतः प्रान्ता को तो स्वतन्त्रता दी, किन्तु सर्वशक्ति-सम्पन्न केन्द्र गौरों ने अपने हाथों में रखा । नियन्त्रित अधिकारों

निश्चित सरकारेण विनष्टाः क्रान्ति-कारिणः ।
 दमनेन हि निर्जीवा काग्रेसान्या सभाऽस्ति वै ॥२६३॥
 मतादाने तु लोकानामष्ट-भ्रान्तेषु वै जनैः ।
 नेतारो देश-दासा हि स्थापिता शासनासने ॥२६४॥
 केन्द्र-सत्ताप्रदे काले युद्धारम्भोऽपरोऽभवत् ।
 यूरुपेजर्मनैर्दंतो-गौरगौरव-नाशनः ॥२६५॥
 वाञ्छितं तु तदाग्रेजैः साहाय्यं भारतोद्भवम् ।
 अविश्वस्ता पर लोका प्रतिज्ञाभ्रष्ट शासनात् ॥२६६॥
 पूर्व-युद्धे कृतव्रता गौरा सगर-सागरम् ।
 तरिष्याम करिष्याम स्वाधीना भारती महीम् ॥२६७॥

विजय-पर्वः

अतोऽत्रकृतसकल्पाः सर्वांगीणस्वतंत्रताम् ।
 प्राप्तुं कामा भारतीया पूर्वं साहाय्यदानतः ॥२६८॥
 यतः कल्याण-सामर्थ्यं स्वातंत्र्येणैव जायते ।
 युद्धसन्तप्तविश्वस्य ज्ञातं विज्ञैर्विचक्षणैः ॥२६९॥

से देश सन्तुष्ट नहीं हुआ । अंग्रेजों का विचार था कि क्रान्तिकारी नष्ट हो गये, दमन से कांग्रेस निर्जीव हो गयी, पर मत लेने के समय जनता ने आठ प्रांतों में कांग्रेस का शासन बनाया । भारतीयों के केन्द्र-सत्ता-प्राप्ति काल में जर्मनी की हार से यूरोप में गौरों के गौरव को नष्ट करने वाला युद्धारम्भ हुआ । अंग्रेजों ने भारत से सहायता चाही, पर लोग पहले ही प्रतिज्ञा-भ्रष्ट शासकों से अविश्वस्त थे । पहले गौरों ने प्रतिज्ञा की थी कि जब युद्ध जीत लेंगे तो भारत को स्वाधीन कर देंगे । किन्तु विजयी, भ्रष्ट-व्रत गंगे भारत को स्वाधीन न करने के लिए अनेक प्रकार के छद्म करने लगे ।

इसलिए भारतवासी सहायता देने से पूर्व ही स्वाधीनता प्राप्ति का संकल्प लिये हुए थे । यद्यपि विज्ञ विचक्षण पुरुषों की जानकारी से युद्ध-संतप्त

गौरंगैरिवगर्वेण न श्रुत लोक-भाषितम् ।
 विचारोऽति चिर यावदभवद् गौरभारत ॥३००॥
 पूर्णस्वाधीनताम्पे सकल्पे लोक्विके श्रुते ।
 गान्धिना घोषित गौराः पन्थियजन भाग्नम् ॥३०१॥
 क्रुद्धा गौरा निरोधार्थं नेतृणा प्रन्तुता मुहु ।
 प्रियो जवाहरोऽप्यत्र वद्वोऽप्रेजैरतिद्रुहै ॥३०२॥
 अहमदास्ये पुरे दुर्गोऽज्ञातो भारत-मानवे ।
 ध्यानेन चिन्तयामामोपयोग. समयस्य वै ॥३०३॥
 यथा भवेज्जनाधारो देशोत्साह-विवर्द्धन ।
 अतो लिखामि सद्ग्रन्थान् भाविनो बोधनात्मकान् ॥३०४॥
 स्थायित्व मम भावाना लेखनेनैव सम्भवेत् ।
 इति निश्चित्येतिवृत्त भारतमलिखन्मुदा ॥३०५॥
 ततो 'विश्वस्येतिवृत्त' तथैव 'मम जीवनम्' ।
 लिखितानीन्दिरार्थं तु पितुः पत्राणि भावतः ॥३०६॥
 रचितो ग्रन्थ सन्दोहः सदानन्द प्रद सदा ।
 सुगमः सरलः पुण्यो हिन सर्व-मुखावहः ॥३०७॥

विश्व के कल्याण की सामर्थ्य स्वतन्त्रता से ही सम्भव है । अहकारी गौरी ने लोक-भाषा को न सुना और अंग्रेजों तथा भारतीयों का विचार विमर्श देर तक चलता रहा । जनता के पूर्ण स्वाधीनता सकल्प का जब गौरी ने न सुना तो गांधी जी ने घोषणा कर दी कि ऐ गौरी ! भारत छोड़ दो ! क्रुद्ध गौरी, नेताओं को घडा घडा पकड़ने लगे, श्री जवाहर को भी द्रोही अंग्रेजों ने पकड़कर गुप्त रूप से अहमदपुर के किले में रखा, वहाँ पर जवाहर ने समय के सदुपयोग को विचार कर कि—लोकोत्साहवर्द्धक-आधार, भविष्य में जान देने वाले, सद्ग्रन्थों को लिखू, मेरे भाषा की स्थिरता भी लिखने से ही सम्भव है । ऐसा विचारकर 'भारत की खोज', 'विश्व इतिहास की झलक', 'मेरी कहानी', 'पिता के पत्र पुराणों के नाम', तथा सत्पुरुषों को आनन्द देने वाला सुगम, सरल सदा पुण्य-हितकारी, सर्वमुखावह और भी ग्रन्थ समूह लिखा ।

द्वितीय सगरम्यान्ते मुक्ताः सर्वे हि वन्दिनः ।
 तदा स्थितिरिय जाता गौराणां भयाघटा ॥३०८॥
 अकल्पांशासने जाता विवशा राज्यकारिणः ।
 आन्दोलनेन लोकानां गौराणां स्थिति निवेत्ता ॥३०९॥
 ततः सुभाष-सेनायाः उद्योगः प्रबलोऽभवत् ।
 इदानीं न सत्सिद्ध्यामो दुराचारान्नराधमान् ॥३१०॥
 कटिवद्धैः स्वदेशीयैरुक्ताः साम्राज्य-प्राक्षिनः ।
 सत्याग्रहैः ससैन्यैश्च गान्धि नेता सुशिक्षितैः ॥३११॥
 जन्मसिद्धोऽधिकारी वै स्वाधीना स्युः सदा नराः ।
 भारतस्य तदेवेष्टं नान्यद् न्याय्यं हि दीयताम् ॥३१२॥
 पूर्वमुदघोषित एतत् तिलकेन सुधीमता ।
 भारतीयैस्तथान्यैश्च वैदेशैश्च महोदर्यैः ॥३१३॥
 नदयैरात्ममर्मज्ञैः राजनीति-विशारदैः ।
 दास्य-दुःखानुभावज्ञैः स्वातन्त्र्यसुखमिच्छुर्कैः ॥३१४॥
 सुभाषो युद्ध-सकल्प कटिवद्धैः स्वकर्मणि ।
 साहाय्यं मन्त्रिय-लेभे जापान-जर्मनोदभवम् ॥३१५॥
 आजाद-हिन्द-सेना तु कृत्वा भारत-सेविकाम् ।
 धन-धान्य-विनोद्भूतामभूता शुभ-लक्षणैः ॥३१६॥

द्वितीय युद्ध के अन्त में सभी भारतीय बन्दी छोड़ दिये गये, तब गौरी
 की स्थिति भयानक और काप्रेम के आन्दोलन से ढावाडोल थी। दूसरी ओर
 से घोषणा थी—ऐ साम्राज्यवादिमो ! अब हम तुम्हारे दुर्भर अत्याचारों को
 सहन नहीं करेंगे। स्वाधीनता मानव का जन्मसिद्ध अधिकार है, भारत भी
 केवल यही चाहता है। इसलिए हमें न्यायोचित स्वराज्य प्रवश्य दे दो। यही
 बात कहते श्री तिलक जी ने, भारतीयों ने एवं दयानु, आत्स्य मर्मज्ञ, राजनीति-
 विशारद, दास्य-दुःखानुभावज्ञ तथा स्वतन्त्रता सुख चाहने वाले विदेशियों ने
 भी कही है।

अपने सक्लप में कटिवद्ध सुभाष ने—जापान तथा जर्मनी की सन्धिय सहा-
 यता प्राप्त की और बिना ही धन धान्य आदि के समुचित साधनों के अपूर्व शुभ
 लक्षणों वाली भारत सेविका आजाद हिन्द सेना बनायी। चारा ओर से पिरे



सरमलो सन्निरो वार स य शूरा पवावर ।
मोन्त परमादार परमाद् मदान्वित ॥



नर नारायणौ मित्रौ शुद्धौ स य परायणौ ।
माधो जगद्गुरौ बुद्धौ निय विश्व हितायहौ ॥



जगदातिहरो निय सकदुग्धो निरन्तरम् ।
परयाहरो ज्ञाना शूरो श्री वैनडा जगद्गुरौ ॥

प्रधान-मन्त्रित्वम्

आत्रान्ता गवंतो गौराञ्चिन्नयन् स्वशामनम् ।
 अम्बिरमवलोकयाथ दिवनाञ्छन-छदमनि ॥३१७॥
 जवाहर गता वीर मत्य मन्य-श्ननात्मनम् ।
 गरण्य भागनाप्रार मदय कर्म-कौशलम् ॥३१८॥
 जवाहर ! धृतात्माह ! वीर ! भागनायक ! ।
 नीति-प्रज्ञा-विशेषज्ञ ! धर्मोणा-मवतावर ॥३१९॥
 विद्या-वैभव-सम्पन्न ! अनु-मित्र-चिन्तारव ! ।
 हिमाञ्जलि-विभेदज्ञ ! सेवा-सर्वस्व-धारक ॥३२०॥
 प्रभावेणानुभावेन मद्भावेन सुधारक ! ।
 वहस्व भारतं भार शामनामन-रजर ॥३२१॥
 न ह्यन्य वद्विदाधारः समर्थो भुवि दृश्यते ।
 भवेद यो गुरु देशस्य भूतप्रार मुनायक ॥३२२॥
 अत प्रधान-मन्त्रित्वमगीकुरु विप्रद्वय ।
 तदेव सर्व-देशस्य तथास्मान् मुख भवेत् ॥३२३॥
 गौगणा शामकाना च वचन श्रुतवानयम् ।
 सोऽनाता भारतीयाना वचन धृतवान्मया ॥३२४॥

गौरे छत्र-रूप से शासन चलाने में अममर्ष हुए—मत्प्रिय, मत्प्रिय, गरण्य
 भारत के आधार, सदाय, कर्म कुशल वीर जवाहर की गरण्य मय तथा वहन
 लग—हे उत्साही वीर ! भारत-नायक ! नीति-प्रज्ञा विशेषज्ञ ! धर्म न
 साम्यता मे श्रेष्ठ, विद्या वैभव सम्पन्न, अनु मित्र, हिमा अहिमा के भेद को
 जानने वाले, सेवा सर्वस्व को धारण करने वाले, अपने प्रभाव, अनुभाव तथा
 प्रभाव से सुधार करने वाले, शासन के शासन की सोभा बटान वाले जवाहर !
 आप भारत के भार को धारण करो ! आपक बिना कोई दिग्विही नहीं देना जो
 इतने बड़े देश का सुवधार तथा अच्छा नेता बन सके । अत प्रधानमन्त्रि-पद
 को स्वीकार करो और इसकी सोभा बटाया तभी देश को तथा हमें मुख प्राप्त
 ही सकता है । श्री जवाहर ने गौरे शामक तथा भारतीया के वचनों को सुन,

राष्ट्र-शोकः

५३

परं काठिन्यमायात काले स्वाधीनतात्मके ।
लका-काण्डस्त्वकाण्डेऽभूत् हिन्दु-मुस्लिम-भेदत ॥३५॥
माउण्टवेटनसम्मत्या एटली-कुटिली-कृता ।
ब्रिटेनं. मुविचिन्त्याथ योजना कूट-कल्पिताः ॥३६॥
दुर्जनेनातिनीचेन जिन्नारूपेण याचित ।
पाकिस्तान पृथक्भागो भारतस्य कृतस्तदा ॥३७॥
विवशंभारतीयैर्वे स्वीकृत देश-खण्डनम् ।
गान्धी-जवाहराचारैः श्री राजेन्द्र पटेलकैः ॥३८॥
पञ्चाधिके दशेऽगस्ते मुक्तासीत् भारती मही ।
पद प्रधानामात्यस्य प्राप्नो वीरो जवाहर ॥३९॥
मतान्धैर्यवनैर्यथैर्यथैः पीडिता मही ।
तथा कदाचित्पूर्वं वै रात्रणेरतिचादिना ॥४०॥
निर्दयैरबला बाला बाला वृद्धाश्च मारिताः ।
श्रुत्वा दृष्ट्वा च या पीडा विव्यथे भून-भावनः ॥४१॥
अन्त कूटैर्ब्रिटेनैस्तु हिन्दु-मुस्लिम-भेदनः ।
खण्डितोऽखण्डितो देशः स्वार्थान्धैः पाप-कन्धरै ॥४२॥

समस्याओं का अनेक बार शान्त शील स्वभाव से मुसमाधान-कारक, सर्व हितैषी, सर्वोद्योग का प्रचारक, पच-शील योजना से विश्व-वैभव-कारक बन गया ।

किन्तु स्वाधीनता प्राप्ति के समय एक कठिनाई आ पड़ी, हिन्दू-मुस्लिम भेद से अकाण्ड में ही लका काण्ड हो गया । माउण्ट वेटन तथा एटली की कुटिल सम्मतिया से विचारकर ब्रिटेन वालों ने कूट कल्पना से योजना बनायी । दुर्जन, अतिनीच जिन्ना द्वारा मागा गया 'पाकिस्तान' के रूप में भारत का पृथक् भाग कर दिया ।

विवश होकर गांधी, जवाहर, राजेन्द्र तथा पटेल आदिकों ने भारत का विभाजन स्वीकार कर लिया । पन्द्रह अगस्त को स्वतन्त्र हुए भारत के श्री जवाहर प्रधान मन्त्री बने, मतान्ध यवन-यूथों ने भारत भूमि को ऐसे पीडित किया जैसे कभी रावण-वर्गियों ने किया था । अन्त कूट, स्वार्थान्ध पापाधित गोरों ने हिन्दू-मुस्लिम-भेद से अखण्ड देश को खण्डित कर दिया ।

गान्धी-विघ्न-गुरूणां च शासन बलेशनाशनम् ।
 अगीचकार दायित्व-पूर्णं लोकोत्तर पदम् ॥३२५॥
 अनेकाभिः समस्याभिः सकीर्णं बहुकण्ठकम् ।
 प्रधान-मन्त्रि-स्थानं हि सर्व-साधन-निर्धनम् ॥३२६॥
 एव कूट-कलाः गौराः हिन्दु-मुस्लिम-भेदकाः ।
 पञ्चाधिके दशेऽगस्ते तत्यजुर्भारती महीम् ॥३२७॥
 ततः प्रधान-मन्त्रित्वं प्राप्तो वीरो जवाहरः ।
 नायकेऽस्मिन् महाभागे गतो देश समुन्नतिम् ॥३२८॥
 ऋद्धो वृद्धः मुसन्तुष्टो हृष्ट पुष्टो मुदान्वितः ।
 लब्धादरो हि ससारे सचारे पूर्ण-गौरवः ॥३२९॥
 विद्या-बुद्धि-प्रसादेन शस्त्रास्त्रं पूरितो वृद्धः ।
 मण्डित पण्डितैर्विज्ञैरर्वाचीनै पुरातनैः ॥३३०॥
 धन-धान्य-समाकीर्णं उत्तीर्णं रीति-नीतिषु ।
 तटस्थः सर्व-नेता च सर्वदाऽमुरनिन्दकः ॥३३१॥
 अनेक-युद्ध-सरोधो विरोधः पापकारिषु ।
 समस्यानामनन्ताना विविधाना पृथक्-पृथक् ॥३३२॥
 कारिताना विदेशीयै स्वदेशीयैरनेकशः ।
 शान्त-शील-स्वभावेन मुममाधान-कारक ॥३३३॥
 सर्वेषां हितमन्विच्छन् सर्वोदय-प्रचारकः ।
 पञ्चशील-प्रयोगेन विश्व-वैभय-कारकः ॥३३४॥

गांधी महश गुप्तो की बलेश-हारिणी आज्ञा मान, अनेक समस्याओं से सकीर्ण, बहुकण्ठकाकीर्ण, सर्व-साधनहीन, दायित्वपूर्ण प्रधानमन्त्री-पद को स्वीकार किया । इस प्रकार कूट-नीति में चतुर, हिन्दू-मुस्लिम भेद करने वाले गोरे पन्द्रह अगस्त (मन् १९४७) को भारत भूमि को छोड़ गये ।

श्री जवाहर प्रधान मन्त्री बने । इनके नेतृत्व में भारत ऋद्ध, पूज्य, मुसन्तुष्ट, हृष्ट-पुष्ट, प्रगल्भ, समार में लब्धादर, ससार में पूर्ण-गौरव, विद्या बुद्धि के प्रसाद से शस्त्रास्त्रों में पूरित, दृढ़, नवीन-प्राचीन-पण्डित-मण्डित, धन-धान्य-समाकीर्ण, सर्वरीति-नीति-उत्तीर्ण, तटस्थ, विश्वनेता, एशिया का मार्ग दर्शन, गदा आमुरी भावों का निन्दक, अनेक युद्ध-निरोधी, पाप-विरोधी विदेशियों तथा स्वदेशियों द्वारा उत्पन्न की गयी पृथक्-पृथक्, विविध अन्नत

राष्ट्र-शोकः

पर काठिन्यमायात काले स्वाधीनतात्मके ।
लका-काण्डस्त्वकाण्डेऽभूत् हिन्दु-मुस्लिम-भेदत ॥३३५॥
माउण्टबेटनसम्भत्या एटली-कुटिली-कृता ।
ब्रिटेनै सुविचिन्त्याथ योजना कूट-कल्पिताः ॥३३६॥
दुर्जनेनातिनीचेन जिन्नारूपेण याचित ।
पाकिस्तान पृथक्भागो भारतस्य कृतस्तदा ॥३३७॥
विवशंभारतीयैर्वे स्वीकृत देश-खण्डनम् ।
गान्धी-जवाहराचारः श्री राजेन्द्र पटेलकैः ॥३३८॥
पञ्चाधिके दशेऽगस्ते मुक्तासीत् भारती मही ।
पद प्रधानामात्यस्य प्राप्तो वीरो जवाहर ॥३३९॥
मतान्धैर्यवनैर्युथैर्यथेय गीडिता मही ।
तथा कदाचित्पूर्वं वै रात्रणैरतिचादिता ॥३४०॥
निर्दयैरवला बाला बाला वृद्धाश्च मारिताः ।
श्रुत्वा दृष्ट्वा च या पीडा विव्यथे भूत-भावन- ॥३४१॥
अन्न कूटं ब्रिटेनैस्तु हिन्दु-मुस्लिम-भेदतः ।
खण्डितोऽखण्डितो देशः स्वार्थान्धैः पाप-कन्धरैः ॥३४२॥

समस्याओं का अनेक बार शान्त शील स्वभाव से मुसनाधान-कारक, सर्व-हितपी, सर्वोदय का प्रचारक, पच-शील योजना से विद्व-वैभव-कारक बन गया ।

किन्तु स्वाधीनता प्राप्ति के समय एक कठिनाई आ पड़ी, हिन्दू मुस्लिम भेद से अकाण्ड में ही लका काण्ड हो गया । माउण्ट बेटन तथा एटली की कुटिल सम्मतियाँ में विचाररत्न ब्रिटेन वाला ने कूट कल्पना से योजना बनायी । दुर्जन, अतिनीच जिन्ना द्वारा मागा गया 'पाकिस्तान' के रूप में भारत का पृथक् भाग कर दिया ।

विवश होकर गांधी, जवाहर, राजेन्द्र तथा पटेल आदिकों ने भारत का विभाजन स्वीकार कर लिया । पन्द्रह अगस्त को स्वतन्त्र हुए भारत के श्री जवाहर प्रथम मन्त्री बने, मतान्ध यवन-यूथों ने भारत भूमि को ऐसे पीटित किया जैसे बभी रावण-वर्णियों ने किया था । अन्त कूट, स्वार्थान्ध पापप्रियत गोरों ने हिन्दू मुस्लिम-भेद से अखण्ड देश को खण्डित कर दिया ।

वगैश्च सिन्ध-पचापे सीमाप्रान्तेऽतिनिष्ठुरै ।
 कृतोत्पातं समूहैश्च लुण्ठिता भारती मही ॥३४३॥
 पूर्वमाहु सदा गौरा. अयोग्या भारता जना. ।
 अदक्षा शासने कार्ये विवदन्ति परस्परम् ॥३४४॥
 अतोऽस्माभि कृत राज्य बोधन सर्व-सम्मतम् ।
 जाति-धर्म-गुणातीत सम्प्रदाय-विवर्जितम् ॥३४५॥
 युष्माकमाग्रहेणाथ त्यक्ष्यामश्चेदिमा महीम् ।
 करिष्यामोऽधना दीना सर्व-साधन-बाधिताम् ॥३४६॥
 हिन्दु-मुस्लिम-भेदैश्च सम्प्रदायैर्विभाजिताम् ।
 धन-वान्य-हता मुष्टा लुण्ठिता दस्यु-दानवै ॥३४७॥
 अतस्त्रै कथिन सर्व जिन्ना-जानु-समाश्रितै ।
 कृत दानवता-पीड दानवाचारमुद्धतै ॥३४८॥
 पाकिस्तान-मिषेणाथ भारतागस्तु खण्डित ।
 दण्डिता मुजना दीना गुण्डेर्लुण्ठन-तत्परै ॥३४९॥
 रागद्वेषादि दोषैश्च पूर्णा वै साम्प्रदायिका ।
 प्रशिक्षिता जनैर्गैरेर्दुष्टैर्भ्रष्टाधिकारिभि ॥३५०॥

निर्दयी घरनो ने अबला, बाला, बाल-बूढो को मारा, जिसे सुन व देग भूत-
 भायन भगवान् वा भी दुःख हुआ, यगल, मिन्ध, पचाव व सीमाप्रान्तो मे दुष्टो
 ने समूह बना बना कर भारत भूमि को लूटा । गोरे पहले ही कहते थे कि
 भारतवासी अयोग्य हैं, शासन-कार्य मे कुशल नहीं, परस्पर लड़ते हैं, हमारे
 हम जातिधर्म सम्प्रदाय भेद मे रहित सर्व-सम्मत राज्य करते है । आप लोगों
 के कृतन मे यदि हम इसे सहाइ देंगे तो शिर्षन, दीन, सर्वसाधनहीन जाति-भेदो
 मे बटा धन धान्य-गृहित व दुष्ट दस्युओ मे मुट्टी हुई करके जायेंगे ।

हमारे दुष्ट गोरो ने पूर्वोक्त सब कुछ जिन्ना वा बहाना लेकर
 दिया, दुष्टो ने पाकिस्तानको लीजित करने वाला साक्षात्कार दिया, पाकिस्तान
 व बहाना भारत वा लखित कर दिया, मुट्टे गुण्डो ने सीमा-गाउजनों को लूट
 दिया, दुष्ट भारतवासी गोरो मे प्रशिक्षित साम्प्रदायिक यवनों ने राग-द्वेष मे
 पूर्ण लेकर पहले ही भारत को दुःखी कर रखा था, अब फिर धर्म-द्वेष, निर्य

वगे रावक्षिपिड्यादी लाहीरेऽरिष्ट-तापिते ।
 लुण्ठिते घन-धान्यादि ज्वालितेऽति प्रपीडिते ॥३५१॥
 युवनीना हृते यूये बाल-वृद्धादि-मारिते ।
 क्रिश्चिनाः यवना हिन्दू शिष्याः कलहमाश्रिता ॥३५२॥
 अन्योऽन्य तर्जयन्तो वै मारयन्त परस्परम् ।
 क्लेशयन्तो भृश दीनान् दाहयन्तो गृहादिभान् ॥३५३॥
 क्षेत्राणि शम्य-पूर्णानि विषण्यो द्रव्य सयुता ।
 ध्वम्बिता दुर्जनैरिस्थ यथा दानव-दस्युभि ॥३५४॥
 तदायमार्त्तनादो वै श्रूयते सर्वतः परम् ।
 वृद्धानाथ शिशूना च धाम्प्यमतिव्लेशदम् ॥३५५॥
 हा पुत्र ! पुत्रि ! क्वासि त्व हा भ्रातर्नाथि ! पाहि माम् ।
 वद तात ! स्वमा ! मानः ! क्व गता मम बान्धवा ॥३५६॥
 रक्ष मा, पाहि मा, वृद्धा दीना शरणमागताम् ।
 गुरुणामवनाराणा पीराणामपि सेविकाम् ॥३५७॥
 नाथद्वारे गुरुद्वारे श्रद्धाभक्ति-समन्विताम् ।
 गिरिजा-मस्जिदेषु चाथेशामूसावुपासिकाम् ॥३५८॥
 अयोध्या-मथुरा-माया-प्रयागे तीर्थ सगताम् ।
 हरिद्वारेऽजमेरेऽथ पावने नतमस्तकाम् ॥३५९॥

कलहकारी अत्याचारियो ने—घगाल, रावलपिडी तथा लाहौर को तपाया, लुण्ठ जलाया, युवतियो के भुण्डा को हरा, बाल-वृद्धा को मारा, क्रिश्चियन, यवन, हिन्दू, सिक्ख भगडते हुए एक दूसरे को ललकारने, मारते, दीना को क्लेश देते, घरों को जलाते फिगते थे । शस्यपूर्ण खेत तथा द्रव्यपूण दूकानें, दानव-दस्यु दुर्जनो ने नष्ट कर दी ।

तब वृद्ध अनाथ शिशुआ का जनि करुणाकर, कलसप्रद आर्त्तनाद चारों ओर से मुनाई देता था । हा, बेटा ! बेटा ! तुम कहीं हो ? हे भाई ! हे नाथ ! मेरी रक्षा करो ! हे माता ! पिता ! बहिन ! बोली, मेरे बन्धु कहीं गये ? शरण म आयी, गुरु अवतार, पीरो की सेविका, नाथद्वारे, गुरुद्वारे, मे श्रद्धा भक्ति वाली, गिरिजा, मस्जिदों में ईसा मूसा की उपासिका, अयोध्या, मथुरा, माया, प्रयाग में तीर्थ-बुद्धि वाली, पवित्र, हरिद्वार तथा अजमेर

जन्माष्टम्या नवम्या च पूर्णिमाया सुमगलाम् ।
 दुर्गाष्टम्या नवम्या वै रक्षाया शुभ-चिन्तिकाम् ॥३६०॥
 दीपमालावसन्तादी होलिकोत्सवमुत्सुकाम् ।
 मदीने यावने मक्के कोटलेऽटल-भावनाम् ॥३६१॥
 पटने ननवाणे च गुरुपु गुरु-गौरवाम् ।
 बौद्ध-जैन-नवीनेषु मतेषु सर्व-सम्मताम् ॥३६२॥
 पुराणेऽय कुराने चाथेजीले-ग्रन्थ साहित्ये ।
 व्याख्याने श्रुत-धर्मख्या गाथामाश्रित पालिनीम् ॥३६३॥
 किं दीनो दीन-पीडोऽस्ति किं धर्मोऽधर्ममाश्रित ।
 किं पन्थः कुपथ यातः किमीशोऽनीशता गतः ॥३६४॥
 किं राम-कृष्ण-गुरवो बुद्धस्तीर्थङ्करा जिनाः ।
 ईशो मुहम्मदः सर्वे दुराचार-प्रवर्तका ? ॥३६५॥
 तेषामुपासका यूय कथमुन्मार्गंगामिन ।
 अधर्मं धर्म-बोद्धार कुपथञ्चाश्रिता भृशम् ॥३६६॥
 पर कोऽपि न श्रोतानीत् प्रवृत्तेऽधर्म-भैरवे ।
 पौरवा कौरवा जाता सुरव वः शृणोति तत् ॥३६७॥
 यवना प्रेरिता गौरैर्हिन्दूनामतिसरण्या ।
 भ्रान्ता स्वदेश-खण्ड हि भिन्नमैच्छन् हि भारतात् ॥३६८॥

मे मस्तक भुजाने वाली, जन्माष्टमी, रामनवमी व पूर्णिमा को मगल-वामना करने वाली, दीपमाला, वसन्त व होली को उत्सव मनाने वाली, यवनों के मक्के-मदीने व कोटने मे अटल भावना-वाली, आनन्दपुर, पटने तथा ननवाणा साहित्य मे गुरुओं वा गौरव माननेवाली, बौद्ध, जैन तथा नवीन मतों मे सम्मति रखावाली, पुराण, कुरान, इज्जिल एव ग्रन्थ साहित्य मे से धर्म-कथा सुनने वाली शुभ वृद्धा की रक्षा करा, पातना करो ।

तब पुहार थी—क्या दीन दीन-पीडक है ? क्या धर्म अधर्म के सहारे है ? क्या पथ कुपथ चना है ? क्या ईगा नास्तिक बन गया ? क्या राम, कृष्ण, गुरु, बुद्ध, तीर्थंकर जिन, ईगा, मुहम्मद सभी दुराचार प्रवर्तक हैं ? भाप उनके उपासक होकर क्या उन्मार्ग गामी, अधर्म की धर्म जानने वाले, अति कुपथ पर चले हो । किन्तु अधर्म के धन चलने पर हम धार्मिक-ध्वनि को

मूडैस्तु चिन्तित नेदमधुनापि तु कोटिश ।
 यवना भारतीया हि निवसन्ति यथामुखम् ॥३६९॥
 सम्प्रदायानुरोधेन मूडैर्दानव-मन्निभै ।
 रक्तपात कृतो भूयान् वगे पचनदे भृशम् ॥३७०॥
 तथापि लका-काण्डोश्च न निवृत्तो वघात्मक ।
 सहस्रा मारिता दुष्टलंका निर्वासिता गृहात् ॥३७१॥
 नायकैर्विदग्दैर्दुष्ट सृष्ट रौद्र कुकर्म तत् ।
 गान्धि-जवाहरैः खिन्नैर्द्विग्नैरतिमानवम् ॥३७२॥

कर्णधार

एव संकट-मन्दोहे पतिते भारते मुहु ॥
 बुद्धिमान् चतुरो वाग्मी मयत्नोऽभूज्जवाहरः ॥३७३॥
 पुनर्वास पुनर्वृत्तिः प्रवन्धश्च पुन पुन ।
 जवाहरोऽकरोद्दक्षो विवेकी धैर्य -सगतः ॥३७४॥
 व्यतीतेष्वल्पमासेषु स्वतन्त्रे भारतेऽभवत् ।
 महाननर्थो दुष्टेन नाथुरामेण दुष्कृतः ॥३७५॥

मुनने वाला कोई नहीं था । अच्छे कथन को कोई भी नहीं मुनता था । गारो द्वारा हिन्दुओं को सख्या-वृद्धि की भ्रान्ति से डराये हुए यवन अपनी भूमि को भारत से पृथक् पाकिस्तान के रूप में चाहते थे । बेचारों को गता नहीं था कि स्वतन्त्र भारत में भी करोड़ों यवन मुग्नपूर्वक रहते हैं । मूड, दानवाकार, मत्तान्ध यवना ने दमाल व पजाब में बहुत रक्तपात किया ।

इस सारे रक्तपात की देव जवाहर ने भी भारत के विभाजन को मान लिया । फिर भी यह भार-नाट का ललाकाण्ड नहीं रहा । दुष्टों ने हजारों लोग मार दिये, लाखों घरों से निकाल दिये । गांधी-जवाहर आदि नायकों ने बड़े खिन्न व उद्विग्न होकर यह अमानवीय, रौद्र कुकर्म देखा ।

इस प्रकार भारत में बार-बार संकट पड़ते रहे । चतुर वक्ता जवाहर धैर्य विवेक पूर्वक कटिबद्ध होकर पुनर्वास, रोजगार आदि समस्याओं का समाधान करता रहा ।

भारत-स्वाधीनता के कुछ महीनों के बाद ही दुष्ट नाथुराम ने

हनो गान्धी राष्ट्र-पिता सर्व-जीव-पराश्रयः ।
 निराश्रयं गतो देशो विशेषेण जवाहरः ॥३७६॥
 मार्ग-प्रदर्शको यस्य गतो गान्धी सुरालयम् ।
 तथापि धृत-धैर्योऽसी धीरेयोऽखिल-कर्मसु ॥३७७॥
 देशमाश्वामयामाम खिन्न दिव्य-पराक्रम ।
 गौरेच्छा विफला कृत्वा प्रवलोऽभूज्जवाहरः ॥३७८॥
 दधि-दुग्ध-घृतं पूर्णा नद्यो भारतभूमिजा ।
 वहेयुरैच्छद्वीरोऽय सयत्नश्च पुन पुन ॥३७९॥
 नद्य कुल्या मद्बुधोगाः कारिता स्थापिता शुभाः ।
 सफल प्रयासोऽस्माक लोकेत्वाश्वासन भवेत् ॥३८०॥
 जवाहरस्य मनसि सदासीत् विश्व-चिन्तनम् ।
 महानुगमो भवतु प्रेमज वन्धन भवेत् ॥३८१॥
 सर्वत्र मा विरोधः स्यात् कस्मिंश्चित्कस्यचित्तथा ।
 निरोधो युद्धभावानामहिंसा सत्य-भावतः ॥३८२॥
 गान्धी-प्रभाव सर्वत्र दयाऽहिंसानुभावत ।
 सत्य-व्रतात्मको नित्य प्रचरेत् लोक-शासने ॥३८३॥
 भाग्यडा-ग्रन्थ-सदृशा प्रयत्ना सफलाः कृता ।
 रेल-मोटर-मार्गाणा प्रसारोऽति प्रवर्तितः ॥३८४॥

गधं श्रीवाश्रय राष्ट्रपिता गांधी को मार कर दुष्कर्म किया, देश तथा विशेष
 कर जवाहर निराश्रय हो गये, जिनके मार्गदर्शक पूज्य गांधी देवतोक चले
 गये । फिर भी गधे-वर्म घुगेण धैर्य धारण कर सब कामों की सभाल, खिन्न
 देश को अपने दिव्य पराक्रम से शिवागा देने हुए, गौरी की इच्छा को विफल
 कर प्रवल निष्ठ हुए । बार बार यत्न करते हुए जवाहर पाहते थे कि भारत
 की नदियाँ दधि दुग्ध पुन पूर्ण बहे । नदियाँ, नहरें बनायी, अच्छे उद्योग स्थापित
 किये, उनको इच्छा थी—हजारों प्रयाग सफल हो, लोगों में आश्वासन हो ।

श्री जवाहर के मन में सदा विश्व की चिन्ता रहती थी, सबमें
 महानुगम हो, प्रेम का बन्धन हो, मित्रों का मित्रों से विरोध न हो । अहिंसा
 व सत्य की भावना से युद्ध-भावों का निरोध हो, दया, अहिंसा भावना वाला
 मार्ग ही का प्रभाव सर्व-प्रिय है, सत्य व्रत का लोगो में प्रचार हो—यह
 वरदान भावना जवाहर की थी । इंदौर भागडा पाँच जैने प्रयत्न सफल किये,

विद्यालयास्तु विविधा सर्वक्षेत्रेषु चालिताः ।
 कृता वेदोक्तमार्गेण सर्वे लोकास्तु सम्कृता ॥३८५॥
 विद्या-विनय-सम्पन्ना ब्राह्मणा धेनु-हस्तिनः ।
 मार्गमेयाः स्वपाकाञ्च सर्वेभेदानुवर्तिन ॥३८६॥
 जवाह्रानुभावेन मत्स्य-धमनियुयायिनः ।
 श्रेष्ठानुमार्गिणो जाता पुष्यपन्थानुमार्गिणः ॥३८७॥
 महानयमय हीनो धनतो जन्मतोऽधम ।
 इति भेदा अनाचारैर्वैदेशैः शासकै कृता ॥३८८॥
 खण्डिताः पण्डितेनात्र पाश्वण्टामय-दूषिताः ।
 गुण्डास्तु दण्डिताश्चण्डमुद्गुण्डा खण्ड-मार्गिण ॥३८९॥
 कथयन्निम्म यान् गौरा कृष्णागा भार-वाहिनः ।
 मूय भारतदेशीया गच्छध्वमतिदूरत ॥३९०॥
 तेषा वै भारतीयाना भृत्यत्व म्बोधित पुन ।
 वर्णानुगर्वितैर्गौरैर्जवाहर-प्रभावत ॥३९१॥
 येषा राज्ये निशा-नाश आसीदकं-प्रकाशत ।
 साम्राज्य चक्रवर्तित्वमभवद्विद्व्य-तेजसा ॥३९२॥
 व्यापारैर्गति-मचारैः माधनेनिर्घनाः कृता ।
 स्वसम्पत्ता-प्रचारेण सर्वे देशा नियन्त्रिताः ॥३९३॥

रेल-माटर-मार्ग फैलाय, सर्वे क्षत्रो मे विविध विद्यालय चलाये, वैशोकन मार्ग
 से सभी लोग विद्या विनय सम्पन्न क्रिय, कुत्ता, चाचान, ब्राह्मण, गौ, हाथी—
 सबमे ईश्वराश बुद्धि बनायी, सभी लोग श्रेष्ठ पुष्टों के अनुसार पुण्य मार्गानु-
 यायी बनाये, धन से या जन्म से छोटे बड़े के भेद-भाव, पाश्वण्ड रोग से दूषित
 जानकारों विदेशी शासकों ने दी थी, उ हे भी पण्डित जी न खण्डित क्रिया,
 देश को खण्डित करने वान उद्गुण्ड गुण्डों को अधिक दण्ड दिया । जिनका गौरे
 कहते थे—ए काने कुत्री भारतीयो ! दूर हटकर खलो, वे ही गौरे रग के
 अभिमानी, जवाहर के प्रभाव न भारत की नौकरी करने लगे ।

जिनके राज्य मे सूर्य के प्रकाश से रात नहीं होनी थी, दिव्य तेज से
 चक्रवर्तित्व था, जिन्होंने अपनी सम्पत्ता के प्रचार से सभी देश वश मे कर रखे

आग्लभापानुभावेनाखिला 'डेम्फूल'-भाषिणः ।
 जाता भारत-देशीया बाला वृद्धायुवास्त्रिय ॥३६४॥
 गीरेया वेश-विन्यासा कोट-पैटानुधारिणः ।
 नक्कटाय्या कण्ठग्रहा हैट-बूटरलकृता ॥३६५॥
 शीत-देशानुवेशाश्च स्वविचारैर्विर्जिता ।
 अन्धानुकारिण सर्वे हानिलाभमनाश्रिता ॥३६६॥
 उष्णदेशानुतापेन भारतेनाति तापिता ।
 ऋष्मवेशानुबन्धेन स्वास्थ्यसम्पद्धिर्विजिता ॥३६७॥
 अल्पवित्ता स्वल्प-लाभा आय-माधन-निर्धना ।
 निर्वला सकलाश्चासन् अन्धा गीरानुयायिन ॥३६८॥
 दर्शदशमधीरोऽयमभूद्धीरो जवाहरः ।
 कथमेपामुपाय स्यादुद्धारस्य सुखेन वै ॥३६९॥
 परेपा मतमाश्रित्य वर्तन्ते येऽविचारत ।
 कथं हि भारतीयानामुद्धार स्यात्पुनर्भुवि ॥४००॥
 इति चिन्तातुरो वीरस्त्यक्त्वा पैतृकवैभवम् ।
 गौरवचानुभाव च गुर्वदिश तथा सुखम् ॥४०१॥
 वैरिस्टरमात्मकृत्य स्वसामर्थ्यं घनाजंनम् ।
 सूक्ष्म-कोमल-वस्त्राणा वराणामवधारणम् ॥४०२॥

ये, सभी भारतीय—बाल, वृद्ध, युवा, स्त्रिये—इंग्लिस के प्रभाव से 'डेम् फूल'
 भाषी बना दिये थे, ठंडे देशों के समान—कोट, पैट, नक्कटाई, हैट, बूट वाले वेश-
 विन्यास बना दिये थे, गर्म देश में ठंडे देशों की आवश्यकता वाले वस्त्र पहनने
 से अनि तापित, स्वास्थ्य-धन वर्जित, अल्प वित्त, स्वरूप लाभ आय साधन,
 निर्धन, स्वविचार-शून्य, अन्धानुयायी, हानि लाभ विचार-शून्य, निर्वल तथा गीरो
 के नवलची बना दिये थे ।

इन कुरीतियों को देख देय कर अधीर जवाहर सोचते थे कि
 दाके उद्धार का उपाय कैसे हो ? अविचार से हो ईगाई मत में चलने वाले
 भारतीयों का बलवाण कैम हो सकता है इस चिन्ता से दुखी होकर—पैतृक
 वैभव, गौरव, प्रभाव, पिता की आज्ञा, गुण, वैरिस्टरों कायं, स्वसामर्थ्य घनाजंन,

अश्वानामय वागणा मुगणामिव रोहणम् ।
 तन्म नरोत्तमणामान्वेष्टाना च खेननम् ॥८०३॥
 उश्वाना गज-पुत्राणा खेनन मतिमेलनम् ।
 म्वाहूना विविधानान्त्र भोज्याना मधुभोजनम् ॥८०४॥
 अनेक रग-रागाणा योजने मतिप्रोजनम् ।
 कदापि नासीन्विन्द्याना नावानामभियोजनम् ॥८०५॥
 वैभवोऽतिप्रवृद्धः म्यादाकपेदपि योजनम् ।
 गतो जवाहरो वापू शरष्यम्जरो जनम् ॥८०६॥
 नन्दत नान्त गौरो नानृपोऽद्विनि-योजनम् ।
 तथा कुर्युंभारतीया मिलेद्वै विजप्रोजनम् ॥८०७॥
 त्रिष्टेनन्वधिकागन्धः गर्वी मर्कट-नोचन . ।
 सेना-शानन-दपेण भीषयामान भान्तम् ॥८०८॥
 पर लोका कृत-व्रताः सन्प्राग्रह-परायणाः ।
 नवंस्वापेण-मन्लडा प्रेरिता लोक-नायकै ॥८०९॥
 गान्धि-सद्वानुभावेन स्वानन्त्यममराङ्गणे ।
 जवाह्रगानुगच्छन्तो वलिदान-वृत्तोद्यमाः ॥४१०॥
 प्रापु स्वानन्त्य-मौन्य वै यथा पूर्व-निर्दिननम् ।
 जवाह्रगानुभावेन नन्प्रोद्यम-परा नग ॥४११॥

मूढम, कामल, मुन्दर वस्त्रा का धारण, दवाँ के समान घोर्नों व कारों पर
 चढ़ना, मगोवर्गों में उँरना, शिकार खेनना, विविध स्वादु मधुग भोज्य भोजन,
 अनेक रग-रागों की योजना में उद्वि का लगाता, मर्दव निश्चिन्त नटना, बढो-
 दहों की जाकपित्त करने वाले वैभव की उद्वि, इन सबको छोड कर अजेय
 जवाहर शरष्य वापू की शरण म गये । वहाँ जाकर निवेदन किया—रोजे-पीटत,
 दुःखी भारत की वैधानिक बात अतिकारान्य, गर्वी, मर्कट-नोचन, गोर नही
 मुनता । तब फिर गौधी जी के सत्य प्रभाव से जवाहर के पीछे चपते हुए
 स्वाधीनता मश्राम से बलिदानार्थ उद्योगी, जवाहर क तेव से मन्त्र उद्यम-परा-
 यण लोगों ने पूर्वोक्त स्वाधीनता मुन्त्र को प्राप्त किया ।

स्वर्गरोहणम्

अष्टादशाब्द यावद्धि पालयामाम भाग्यम् ।
 अमेवन्दु म-ग्राहृत्यादुज्जहार गनातनम् ॥४१२॥
 सतत पालयामाम वतंव्य श्रम-मगुणम् ।
 तेनानिशियिलो देहस्त्रभवज्जग्यान्वितः ॥४१३॥
 देहरादून-यात्राया सेन्द्रिगे बहुमाहमी ।
 गतो निवृत्तो यावद्धि प्रमन्नो लोह-नायकः ॥४१४॥
 पर परम्परापारा पालितामुनियोगिभिः ।
 अवनारैरसख्यैश्च गुरभिरात्मवित्तमैः ॥४१५॥
 राजन्यैरतिधन्यैश्च जनकादिभि सत्तमै ।
 तदेव सत्यमनापि निर्वाह्यमनुशामनम् ॥४१६॥
 ईश्वराज्ञानुमार वै वैकुण्ठ योगि-दुर्लभम् ।
 गतोऽकुण्ठ - गतिस्तत्र भारतात्मा जवाहरः ॥४१७॥
 सप्तविजति मध्या तु मध्यान्हे बन्धि-सन्निभे ।
 हृतो जवाहरोऽस्माक कालेन कुटिलात्मना ॥४१८॥
 पर दुर्भाग्य - भागस्य भारमापतित भुवि ।
 अश्रुधारा वहत्यद्य मानवाना निरन्तरम् ॥४१९॥

अर्थ—श्री जवाहर ने अठारह वर्ष पालना करते हुए भारत की अनेक दुःख जाला ने रक्षा की, दिन रात अनेक धर्मो से निरन्तर कर्त्तव्य पालन करते हुए, शरीर अति शिथिल, जजर व वृद्ध हो गया । इतने पर भी अति साहसी जवाहर इन्दिराजी के साथ देहरादून की यात्रा पर गये और प्रसन्नचित्त लौटे, कि तु जिन परम्परा को मुनियो-योगियों, अमख्य अवनारा, आत्मज्ञ गुरुओ तथा अतिधन्य थच्छ जनकादिक नराधिपो ने पात्रा है, उम सत्य अनुशासन को यहाँ भी पालना है, अत ईश्वराज्ञानुमार अकुण्ठ-गति भारतात्मा जवाहर भी योगी दुर्लभवैकुण्ठ मे चले गये । सत्ताईस मई को दिव्यतेजस्वी व प्रतापी मध्याह्न मे, कुटिलात्मा काल न दिव्य तेजस्वी व प्रतापी जवाहर को हमारे से छीन लिया । बडे दुर्भाग्य का भार भूमि पर जा पडा, आज लोगों की अश्रुधारा निरन्तर बह

शोकाप्नुतमिदं लोकं पश्चिज्य दिवं गते ।
 वयंपानोऽनवद् भूमावस्ते भाग्न-भास्वरे ॥८००॥
 वालानां शिशु-नीलानां विपत्तिर्याद्य दृश्यते ।
 मानिप्रिय-विद्योगेन तामीश्वरं वदाचन ॥८०१॥
 गते जवाहरे दिव्यमध्यय धाम शाश्वतम् ।
 आर्ता भाग्न-माना वै दिशु याना विपादिनी ॥८०२॥
 पूर्वमेव विद्योगेन जनानां पुष्य-रमणाम् ।
 नृश विपादापन्नोऽग्री नि श्वनन् गिन्न-मानन ॥८०३॥
 दुर्भाग्येणैव दिव्यस्य कनेडी-नदगः प्रियः ।
 अमरीता-प्रधानन्तु नयन्तो दिव्य-मानये ॥८०४॥
 दन्वा विरहजामाधि भुव त्यक्त्वा दिव गत ।
 अमह्यं वालाप्रोश वै दृष्ट्वामूद्विग्हादुत ॥८०५॥
 प्रहारेऽपि प्रहारः स्यादिति नीतिनिर्दिशिता ।
 विधिना पश्येणाय कृपणेन कृचंनमा ॥८०६॥
 हृतो भाग्नदेगस्य स्वाश्रयो लोक-नायकः ।
 वालयानां पितृव्यन्तु युवकानां मुहृत्प्रिय ॥८०७॥
 वृद्धानां मधुगघागे नागीणां मार्ग-दर्शनः ।
 विदयस्यातिहरे नानां ज्योतिस्त्वम्भो जवाह्र ॥८०८॥

रही है। शोकापुत्र जीवलोका को छोड़ जवाहर वैकुण्ठ चले गये। भाग्न के मूर्ख
 जवाहर के अन्त होने पर भूमि पर वयंपान हुआ, गनने वाले बच्चों पर जो
 विपत्ति आकर दिखाई देती है, वह पहले अनिप्रिय व पु के विद्योग होने पर भी
 कभी नहीं देखी गयी थी। श्री जवाहर के दिव्य, अध्वन, शाश्वत धाम चले जाने
 पर विपाद-पुष्य आने भाग्न माना दिशाओं में उमंग मोड़ती टिखनी थी। अनेकों
 पुष्करमां लोगों के विद्योग में गिन्न-मन श्री जवाहर आते भगने हुए बड़े दुःखी
 थे, अब दुर्भाग्य में दिव्य-मानि-न के लिए गह्रयोगी, अमरीता के प्रधान बनती
 जंग प्रिय स्वयं भी विद्योगत्रय मानसी स्वया देकर भूमि को छोड़ देवलोका
 चले गये। इस अमह्य कारणों को देख विरह-आहत ने-कत्री अनि दुःखी
 थे। कटीर कृपण, कुचिता, विपाता ने—छोट पर छोट की नीति को प्रपण
 दिया दिया, जबकि भाग्न का अहंता आधर, लोक-नायक, बच्चों का पापा,

विद्यालय-मभाया वै ददता वदता मया ।
 प्रातः पंक्तिरियप्रोक्ताभावाकुलित-चेतसा* ॥४२६॥
 नास्ति निर्वन्ध-बालस्य निरोधो भुविदृश्यते ।
 जवाहरादेश पूर्वं भारतस्योन्नतिर्भवेत् ॥४३०॥
 मनोरथस्तु लालस्य पूरणीयोऽनुगामिभिः ।
 बालकैस्तु विशेषेण पतस्ते लोक-नायकाः ॥४३१॥
 गगने नाथयोऽस्त्यद्य न भूमौ न त्रिविष्टपे ।
 अनाथानामार्तध्वनिं श्रोतात्वमरता गत ॥४३२॥
 दिवसा विवशा जाता निशाऽनीशानुभूयते ।
 अन्धकार प्रकाशश्च जगति समता गतौ ॥४३३॥
 अतोऽन्तिमोच्छ्वासप्लुतिं दर्शयित्वा महात्मने ।
 निष्प्राणैर्मानवैर्दत्ता तिलाञ्जलिरिमा तदा ॥४३४॥
 हा ! हन्त ! किं वर्णयाम तव रूपमचिन्त्यमेतत् ।
 कृत कर्तव्य-पालनम्, धृता वक्षसु पापाणा , अनुभूता
 स्वीकृता च कालस्य कुटिला गति ॥४३५॥

युवको का प्रिय सुहृत्, बूढो का मधुर आधार, स्त्रियो का मार्गदर्शक, विश्व
 का आतिहर ज्योति-स्तम्भ जवाहर हमसे छीन लिया । ग० हा०स्कूल, बरनाला
 की प्रात सभा मे भावाकुलित-चित्त रोते हुए मेरे मुंह से पक्ति निकली*—
 "हर लिया तूने जवाहर हे हरे, अब धरा मे क्या धरा है रह गया ।"

पर निर्वन्ध काल वा निरोध तो असम्भव है, फिर भी
 धी जवाहर की इच्छा भारत की उन्नति हो, हमे पूरी करनी चाहिये, विशेष-
 कर बालको को, क्योंकि वे ही भविष्य के लोकनायक होंगे । आज आकाश,
 भूमि व स्वर्ग मे हमे आश्रय दिखायी नहीं देता, अनाथो का आर्तनाद सुनने
 वाला स्वर्ग सिंघार गया । दिन विवश है, निशा असमर्थ है, तीनों लोको की
 नेत्र-ज्योति जवाहर के छिन जाने पर प्रकाश व अन्धकार समान ही हैं ।
 इसलिए उस महात्मा जवाहर के लिए अन्तिम उच्छ्वास-विधि से निष्प्राण
 मनुष्यो ने ये तिलाजलिया दी ।

हा ! हन्त ! आपके अचिन्त्य भावो का क्या वर्णन करें,
 कर्तव्य पालन किया, छातियो पर पत्थर रले, काल की कुटिल गति को देखा
 और स्वीकार किया । देश-नायक के विशेष से अनाथ बने, अनाथो के रक्षक

अंगीकृतमनाथत्व वियुक्ते लोक-नायके ।
 कुनो बाला कुनो वृद्धा कुनो नार्यं कुनो वयम् ॥८३६॥
 गमिष्याम मनाथत्व वियुक्तेऽनाथ रक्षके ।
 दृष्ट नेत्रं श्रुत कर्णं गनुभूतमथेन्द्रियं ॥४३७॥
 सर्वैरेवाद्य यज्जातो दुर्घटो मानवान्त्वव ।
 वज्रपातनमः कवेग महिष्यामः कथं वयम् ॥८३८॥

पट्मीनलम्बाया यात्रायाः मार्गः पूर्व-गुर्गपैः पश्चाच्च
 पुष्पैः पूर्णं आनीत्, स्वहृदयाधीश्यान्निम-दर्शनार्थं जनना
 समग्रमार्गं पवित्र-वद्धा चित्रनिश्चितेव चामीन्, विगति
 लक्षाप्रिया जना आमन् । अन्निम-यात्राया सर्वेषा देशाना प्रमुखाः
 प्रतिनिधयोऽनाथैर्लोकैः मह रदन्तोऽगच्छन् । तत्र ब्रिटेनस्य मर
 एलेक टगलम ह्यूम, लकाया प्रधानमन्त्री श्रीमती वटार
 नायिका, रूसस्य प्रथमः उप-प्रधान-मन्त्री श्री कोमीजन, ईरानस्य
 स्वराष्ट्र-मन्त्री, नेपालस्य मन्त्रि-परिषद्-अध्यक्ष श्री डा० तुलसी गिरिः,
 ब्रिटिश महाराजः प्रतिनिधिः श्री लाहं माडण्ट वेटन, फ्रांसस्य राज्य
 वित्त-मन्त्री श्री लुई जो, युगोस्लाविया देशस्य श्री स्तम्बोलिन्ग,
 पाकिस्तानस्य परराष्ट्र-मन्त्री श्री भुट्टो, अमेरिका देशस्य विदेश-
 मन्त्री श्री डीनरम्ब, अन्ये च सकुटुम्बा. समहायका बहव. राजदूताः
 श्रद्धया हार्दिक-समवेदनया च सम्मिलिता आमन् । श्री अष्टदुल्ना

मे वियुक्त हाकर बच्चे, बद्ध, गिबिया तथा ह्यम कैसे मनाथ होंगे ? आज जो मानव-
 विनाशी दुर्घटना हुई, उसे आँसों ने देखा, कानों ने सुना तथा दूररी इन्द्रिया ने
 अनुभव किया । छ मोल उम्बी यात्रा का मार्ग पहले म्रिया बच्चो एव पुष्पों
 तथा पीछे पुष्पों से भरा था । अपने हृदयाधीश के अन्निम दर्शनो के लिए जनना
 मारे मार्ग में पवित्रवद्ध तथा चित्रनिश्चित भी थी, बीम लाभ में भी अधिक
 लोग थे, अन्निम यात्रा में सभी देशों के प्रतिनिधि जनाय जनता के माथ रोने
 जा रहे थे । वहाँ पर ब्रिटेन के श्री एलेक टगलम ह्यूम, लका की प्रधान
 मन्त्री श्रीमती वटारनायिका, रूसका प्रथम उपप्रधान मन्त्री श्री कोमीजन,
 ईरान के स्वराष्ट्रमन्त्री, नेपाल की मन्त्री परिषद् के अध्यक्ष श्री डा० तुलसी
 गिरि, ब्रिटिश महाराजों के प्रतिनिधि श्री लाहं माडण्ट वेटन, फ्रांस के राज्य-
 वित्त-मन्त्री श्री लुई जो, युगोस्लाविया के प्रधानमन्त्री श्री स्तम्बोलिन्ग, पाकि-

श्री रक्षा-मन्त्री चह्माण्डचान्तिम-यात्रायामुपस्थातु विदेशत
समागतौ ॥४३६-४४७॥

श्री जवाहरलालस्य-त्रिरग-ध्वज-वमनावृत शरीर नाना
विध-सुमन-पूर्णं याने स्थापितम्, तच्च सेनाप्रयस्य पट्टि सैनिका
बहन्तिस्म, तदनु राष्ट्रपतेरग-रक्षकाः, सेना-त्रयस्याध्यक्षाः श्री
जवाहर-परिवारस्य सदस्याः अन्ये प्रतिष्ठितदेशनेतारश्च क्रमशोऽग-
च्छन्, यात्रायाम्, नेतृत्वं दिल्ल्या, राजस्थानस्य च क्षेत्रीय सेनापति-
मेजर जनरल श्री भगवतीसिंहोऽप्यरोत् तदनु सैनिक-यूथा वाद्य
(बैण्ड) वादिनश्चासन् । श्री नेहरुर्मुखमन्तिम-दर्शनार्थमनावृत-
मासीत् । स्वस्थानस्थिता एव जनाः पुष्पवर्षणमकुर्वन् ॥४४८-४५२॥

यात्रा-गमन-मार्गो हि जयनादोऽभवन्महान् ।

श्री जवाहरलालस्य पितृव्यस्य जयो भवेत् ॥४५३॥

जवाहरोऽप्यरो नित्यं पितृव्योऽप्यमरोऽस्ति वै ।

इति घोषस्पृशैर्देवैर्वर्षणं क्षणद कृतम् ॥४५४॥

आश्वामनार्थं लोकानां सलिलाभ्युक्षणं कृतम् ।

मेघैर्गर्जनव्याजेन नादो रोदनज कृत ॥४५५॥

स्तान के परराष्ट्र-श्री श्री भुट्टो, अमेरिका के विदेश-मन्त्री श्री डीनरस्क और
दूमरे भी बहुत सकुतुम्ब, ससहायक, राजदूत श्रद्धा एव हार्दिक समवेदना से
सम्मिलित हुए थे । श्री शैव अब्दुल्ला व रक्षामन्त्री श्री चह्माण्ड अन्तिम यात्रा मे
सम्मिलित होने के लिए विदेश से आये थे ।

श्री जवाहर का शरीर, तिरगे झंडे से लिपटा हुआ, नाना-विध
सुमनपूर्ण यान मे रखा गया । पालकी वा तीनो सेनाओ के साथ सैनिक उठा
रहे थे । उनके पीछे राष्ट्रपति के अग-रक्षक, तीनो सेनाओ के अध्यक्ष, श्री
जवाहर परिवार के सदस्य और अन्य प्रतिनिधि नेता चल रहे थे । यात्रा का
नेतृत्व दिल्ली तथा राजस्थान व क्षेत्रीय सेनापति मेजर जनरल श्री भगवतीसिंह
कर रहे थे । उनके बाद सैनिक यूथ तथा बैण्ड वाजे थे । अन्तिम दर्शनो के लिए
श्री नेहरुजी का मुख ढका नहीं था । अपने स्थानो पर गडे ही लोग पुष्प वर्षा
कर रहे थे । यात्रा-गमन के मार्ग मे, 'श्री जवाहर की जय हो', 'चाचा, नेहरु की
जय हो' के जयकार का बडा भारी दण्ड हो रहा था । 'जवाहर जमर है चाचा
नेहरु जमर है' इग जन-घोष के स्पर्श से गावधान हुए देवो ने शान्ति देनेवाली वर्षा

विद्युत्प्रहायो भवति दर्शनार्थं क्षणे-क्षणे ।

मुश्मस्य लोचनायस्य यूयस्याशु-प्नुनस्य च ॥४५६॥

रामनाम-म्मृतिर्जाता सतत पुण्य-मन्तनिः ।

जवाहर म्मग्न् नित्य कृत्य चान्निममावहन् ॥ ४५ ॥ ३॥

धृतशस्त्रा अपि जन-मयमिनोऽश्रु-नियमनेऽमयमिनोऽभवत्
यदान्निम-यानार्थं प्रधानमन्त्रिणो निवानान् ऽवो यानमागोपितमन्तदा
मर्वेषा घैर्य-च्युतिरभवत् । राष्ट्रपति श्रीराधाकृष्णन्विगलमश्र-
वह, तदानीन्तनः प्रधानमंत्री श्री नदा चावम्बुगल श्री नैहगे-
ग्निम-प्रयाणमुद्धोपयताम् । सर्वेऽपि राष्ट्राध्यक्षे प्रतिनिधिभिश्च
शवोपरि पुष्पाण्यर्पितानि, त्रिमूर्ति भवनान् प्रचलिता जवयात्रा,
विजयचतुष्पथ—भारत-द्वार—तिलक-स्थानेभ्यो राजघाटमगच्छन् ।
होगत्रयेण यात्रा समाप्ता, अस्मिन्नपार-वीर-पारावारे वालाना,
महिलाना च गणनाऽनुलितामीत् । या चान्निम-दर्शनार्थं दमहोग
यावत्तपस्यन्ननिष्ठत्, अरम्बुगलेऽश्रुमुक्त्वे मजलनेऽन्वावोचन्—
“जवाहरोऽमरो नूयान् पितृव्यस्त्वमगो भवेत् ।” वाद्य-वादके शोक-

की । लोगों को सात्वना देने के लिए जन वर्षाया, गर्जन के बहाने मेघो ने गेने
का शब्द किया, लोकनायक नेहरू तथा अश्रुवह जनता के मुख देखने के लिए
बार-बार विद्युत्प्रकाश हो रहा था, श्री जवाहर को स्मरण करने हुए अग्निम
दृश्य को सम्पन्न करने के लिए पुष्पप्रद रामनाम ध्वनि हो रही थी, लोगों
को नियमन में रखने वाले शस्त्रधारी भी अपनेआमूओं को रोकने में अमयमी हो
गये । जब अग्निम यात्रा के लिए शत्रु को पालकी में रखा गया तो सभी के घैर्य
छूट गये । श्री राष्ट्रपति राधाकृष्णन् ने आसू बहाने हुए तथा मत्वातीन प्रधान
मंत्री श्रीनन्दा ने रुधे हुए गेने में अग्निम यात्रा की घोषणा की । सभी राष्ट्रों के
अध्यक्षो तथा प्रतिनिधियो ने शत्रु पर फूल चढाने, त्रिमूर्ति-भवन में चली यात्रा,
विजय-चतुष्पथ, भारत-द्वार, तिलक-स्थानो में होनी हुई, तीन घण्टो में राजघाट
पहुँची । इस अवसर नागरिक-समूह में बच्चो तथा महिलाओं की गम्प्या अधिक
थी, जो कि—अग्निम दर्शनो के लिए दम घण्टे में तप करनी हुई, रुधे गल्लो से-
आमूओं से भरे मुखोसे, मजल नेत्रोंसे—“जवाहर अमर हो”, “बाबा नेहरू अमर

ध्वनिनिनादितः, सवेशैः सेनापतिभिरभिवादनं कृतम् । सत्कारार्थं सर्वे सयता उदतिष्ठन् । अतिप्रियेण दौहित्रेण सजीवेन चितायामग्निदत्तः । उज्ज्वालो भगवान् विभावसु स्वोज्ज्वलेन रथेन पूतात्मानं परमात्मन्ययोजयत् ॥४५८-४६६॥

बूढ़ कश्चित्कृपकः स्वदशवर्षीयपौत्रेण सह त्रिमूर्ति-स्थानेऽन्तिम दर्शनार्थं चिरकालं स्थितः, अबोधो बालो मुहुर्मुहुर्मुखमुत्थाय जवाहरागमनं प्रतीक्षमाणं ध्यान्तश्च पितामहमपृच्छत्—अद्येदानीं यावत्प्रियं पितृव्यो नेहरूर्नागतः ? साधु पितामहोऽबोचत्—वत्स ! बालानामखिलाधारः पितृव्यो जवाहरो नश्वरेण शरीरेण कदापि नाक्षिपथमागमिष्यति । इत्याकर्ण्य—मुग्धो बालो निराशः सरोदनम् पितामहमुखमवलोकयन् उत्पीडित इवाभवत् ॥४६७-४७१॥

हो कह रही थी, बूँड वालो ने शोक ध्वनि बजायी, बर्दाभारी सेनाध्यक्षों ने अभिवादन किया मत्कार के लिए सभी भयम से उठ खड़े हुए । अति प्रिय दौहित्र सजीव ने चिता में अग्नि दी, ऊँची लपटों से भगवान् अग्निदेव ने अपने उज्ज्वल रथ द्वारा पवित्रात्मा जवाहर को परमात्मा में मिला दिया ।

अपने दश वर्ष के पौत्र के साथ कोई बूढ़ा किसान अन्तिम दर्शनो के लिए त्रिमूर्ति-स्थान के मार्ग में सड़ा रहा, अबोध बालक बार-बार मुँह उठाकर, जवाहर के आपमन की प्रतीक्षा में थका हुआ बाबा को पूछने लगा—आज अबतक प्यारे चाचा नेहरू क्यों नहीं आये ? रोते हुए बाबा ने उत्तर दिया—बेटा ! बच्चो का अखिल आधार प्यारा चाचा नेहरू अब नश्वर शरीर से कभी भी नहीं दिखाई देगा, मुग्ध बालक यह सुनकर निराश हुआ, राते हुए बाबा का मुँह देखते हुए वह अति दुःखी था ।



मपि, कयाचिन्महिलयानधिष्ठितपूर्वं सुरक्षा-परिपदधिष्ठातृपद,
कौशलेनालकृत्य, महाराष्ट्र-राज्यपालपदमतियोग्यास्पदं सम्यक्
सवाह्याद्युनाविरत देशसेवा निरतास्ते ॥४८६-४८८॥

अपरापि सहोदगप्रजाणा कृतादरा स्वदेश-वेशविन्यास-
वस्तुषु श्रद्धया धृत-स्वदरा, मूममृद्ध-महत्कुटुम्बिन्यपि श्रीमती
कृष्णा-यथाकुलमहनिश भारतमुपामते ॥४८९-४९०॥

न केवल भाग्नस्यैवापितु समन्न-विश्वस्याय विश्वासोऽस्ति
यद्भगिन्यात्मजदोहितमकुलमविश्रुतमिदं कुलमनुकूलमाचरन्,
अनेकापरप्रतिच्छन्न, विपरीत-विकट-समस्या-चर्पणासारैरवरुद्ध, जाति-
वर्ण-साम्प्रदायिकैर्जभावातैरुद्वेलितम्, रेणुवर्षेभ्रष्टाचारैर्व्यापाग्भि-
र्व्यवहारिभिरधिगग्भिर्व्यभिचारिभिश्च कृताक्षिरोऽम्, मिथ्याग्रह-
गृहीतैरग्निस्राहैर्ग्राहैर्गृहीतम्, विमत-विपरस्रित्पति-समुत्थितोद्धतोत्तुग-
तरंग-पतित सभार भारतपोतमनुकूल नेप्यति ॥४९१-४९४॥

पूर्वमप्यमन्दसुन्दरीन्दिरा ममृद्धमपि स्वकुटुम्बाडम्बर विहाय
अहनिश देशोद्धारार्थं दत्त-जीवनस्य महानुभापस्य श्री पितृपादस्य

बड़े बड़े देशों की भी किसी महिला द्वारा न प्राप्त किये सुरक्षा परिपद के
अधिष्ठातृ-पद का कुशलता में निर्वाह कर, अति योग्यास्पद महाराष्ट्र के राज्य
पाल-पद को अच्छी प्रकार बहन कर अब भी निरन्तर देश-सेवा में सलग्न है ।

दूसरी छोटी बहिन श्रीमती कृष्णा भी बड़े भाई बहिनो का आदर करती
हुई, स्वदेशी वेश-विन्यास वस्तुओं में श्रद्धा से स्वरूपारिणी, सुममृद्ध बड़े कुटुम्ब-
वाली भी कुल के अनुभार दिन रात भारत की सेविका है ।

न केवल भारत का ही अपितु समस्त विश्व का यह विश्वास है कि —
बहिनो—पुत्री तथा दोहित्रा से मिल कर बना यह सारा नेहरू-कुल अनुकूल
आचरण करते हुए अनेक आश्रितियों में हैंके, विपरीत विकट समस्याओं की
वर्षों की मूमता-मारास रुके हुए, जाति-वर्ण-सम्प्रदायों के झवावताओं से भ्रमभोरे
हुए, धूलि वर्षा करने वाले, भ्रष्टाचारों, व्यापारों, अधिनारी तथा व्यभिचारियों
द्वारा बन्द की हुई आँसों वाले, मिथ्या आग्रहों में जकड़े हुए, वंशत्य की विप-
त्तियों के समुद्र में उठी हुई, उद्वन उत्तुग तरंगों में फसे हुए, भार से दबे हुए,
भारत के जहाज को किनारे पर ले आयागा ।

कर्मकुशला योगिनीन्दिरापि सत्यधर्म-वर्तव्य-परायणाहंति-
शमश्रान्ता च देश-सेवाया कटिवद्धा सर्वत कुटिलायामपि राज-
नीत्यामकुटिला, सरला, पक्षपात-शून्या, वसुधैव कुटुम्बक मन्यमाना,
पूर्वमतिदायित्वपूर्ण-वाग्नेसाध्यक्ष-पद-भार निर्वाह्ये दानी स्वर्गतेऽखिल
विश्व-दिवाकरे, सतत शिवाकरेऽरीणा जवहरे जवाहरेऽविरत सूचना
प्रसार-मन्त्रित्वमलकृत्यातेऽष्टादशमास यावद्भुवोभाग्मुत्थाय
श्री लातवहादुरशास्त्रिमहोदयेऽपि प्रधान-मन्त्रि-पद-कार्यं सम्यक्
पालयित्वा, रुदतीमवनी विरह्य दिवंगते, एषा प्रियम्बदेन्दिरैव,
प्रधान-मन्त्रि-पदमलकुर्वाणाऽप्रेऽपि चानेकेषु महत्व-पूर्णेपुगुरुतर-
पदेषु कर्तव्य पालयन्ती, चिर यावदस्मत्संरक्षकत्व देशोन्नति च
वरिष्यतीति वलीयान् विश्वास ॥४७६-४८५॥

एकानुजा श्रीमती विजयालक्ष्मी पण्डिताऽपि स्वातंत्र्य-समरे
सतत दत्तयोगा, तदनु विविध-पदेषु पूर्ण-वर्तव्या, अनेकदेशेषु राज-
दूतपद-दायित्व पालयित्वा, सर्व-स्वतन्त्राणा प्रसिद्धाना महता देशाना-

अर्थ—कर्म कुशला योगिनी इन्दिरा भी सत्य धर्म-वर्तव्य परायण दिन-रात
अशांत, देश-सेवा में कटिवद्ध, सब ओर से कुटिल राजनीति में भी अकुटिल,
सरल, पक्षपात-रहित सारी वसुधा को ही कुटुम्ब मानती हुई पहले पूर्ण दायित्व-
पूर्ण वाग्नेसाध्यक्ष पद को वहन कर अब अखिल विश्व-दिवाकर, सदा कत्याण-
कर, वसुधां के वेग-हर जवाहर के स्वर्ग पधारने पर, निरन्तर सूचना प्रसार-
मन्त्रिपदको अलङ्कृत कर चुकी है। अन्त में अठारह मास भूमि के भार को उठाकर
श्री लाग बहादुर शास्त्री के भी प्रधान मन्त्रि-पद को अच्छी प्रकार पालन कर,
भूमि को विरह देकर, स्वर्ग पधारने पर यह प्रियवदा इन्दिरा ही प्रधान-मन्त्रि-
पद को अलङ्कृत कर रही है। आगे भी अनेक महत्वपूर्ण उच्च पदों पर वर्तव्य
पालन करती हुई बहुत देर तक हमारा संरक्षण एवं देश की उन्नति करेंगी,
ऐसा हमारा अत्यन्त विश्वास है।

श्री जवाहरमान को एक छोटी धरिण श्रीमती विजयालक्ष्मी पण्डित भी
स्वतन्त्रता संग्राम में सदा सहायक रहती हुई, बाद में विविध पदों पर वर्तव्य
पालन कर, अनेक देशों में राजदूता का पद सम्भाल, सर्व-स्वतन्त्र अतिप्रसिद्ध

गपि, कयाचिन्महिलयानधिष्ठितपूर्वं सुरक्षा-परिपदधिष्ठातृपद,
कोशलेनालकृत्य, महाराष्ट्र-राज्यपालपदमतियोग्यास्पदं मम्यक्
सवाद्याघुताविरत देशमेवा निरतास्ते ॥४८६-४८८॥

अपरापि सहोदराग्रजाणा कृतादरा स्वदेश-वेशविन्यास-
वस्तुषु श्रद्धया धृत-न्यदरा, मुममृद्ध-महत्कुटुम्बिन्यपि श्रीमती
कृष्णा-यथाकुलमहर्निश भारतमुपास्ते ॥४८९-४९०॥

न केव न भान्नस्यैवापितु समस्त-विश्वस्याय विश्वामोऽस्ति
यद्भगिन्यात्मजदीप्तिनमकुलमविरत्समिद कुलमनुकुलभाचगन्,
अनेवापत्प्रतिच्छन्न, विपरीत-विषट-ममस्या-वर्षणासारैरवरुद्ध, जाति-
वर्ण-भाम्प्रदायिकैर्ज्ञभावातैरुद्वेलितम्, रेणुवर्षेर्भ्रष्टाचारैर्व्यापागिभि-
र्व्यवहारिभिरधिजागिभिव्यभिचारिभिश्च कृताक्षिरोधम्, मिथ्याग्रह-
गृहीतैरग्न्याहैर्गृहीतम्, विमत-विपत्सरित्पति-ममुत्थितोद्धतोत्तुग-
तरंग-पतित सभार भान्नपोनमनुकूल नेष्यति ॥४९१-४९४॥

पूर्वमप्यमन्दमुन्दगीन्दिरा ममृद्धमपि स्वकुटुम्बाडम्बर विहाय
अहर्निश देशोद्धारार्थं दत्त-जीवनस्य महानुभावस्य श्री पितृपादस्य

बड़े-बड़े देशों की भी किमी महिना द्वारा न प्राप्त किये सुरक्षा परिपद के
अधिष्ठान पद का कुशलता में निर्वाह कर, अनि योग्यास्पद महाराष्ट्र के राज्य
पाल पद को जचड़ी प्रकार बहन कर अब भी निरन्तर देश-सेवा में मलगन है ।

दूसरी छोगी बहिन श्रीमती कृष्णा भी बड़े भाई-बहिनो का आदर करती
हूँ, स्वदेशी वेश-विन्यास वस्त्रुओं में श्रद्धा से खदरपारिणी, मुमग्रद्ध बड़े कुटुम्ब-
वालों भी कुन के अनुमार दिन रात भारत की मेविका है ।

न केव न भान्न का ही अपितु ममस्त विश्व का यह विश्वास है कि—
बहिनो—पुत्री तथा दीप्तिना से मिल कर बना यह मारा नेहरू-कुल अनुकूल
आचरण करते हुए अनेक प्राशक्तियों में ढँके, विपरीत विषट ममस्याओं की
वर्षा की मूमताधारा में रुके हुए, जाति वर्ण सम्प्रदाया के ज्ञायावातो से भक्तभोरे
हूए, पूति वर्षा करन बाने, भ्रष्टाचारी, व्यापागी, अधिकारी तथा व्यभिचारियों
द्वारा बन्द की हुई आँवों बान, मिथ्या आप्रहो म जचडे हुए, बँसत्य की विन-
क्तियों के ममुद्र में उठी हुई, उद्धत उत्तुग तरंगों में फने हुए, भार में दबे हुए,
भारत के जहाज को किनारे पर ले आयागा ।

स्वर्गीय श्री जवाहरलालस्य, कमलानन्तर चरण-कमलावुपास्य-
मानातिष्ठत् सार्वदेशिक सर्वविधमनुभव-विभवञ्चालभत् ॥४६५-४६६॥

मन्ये—यथा किष्किन्धां वसता सकल-कलाकुल-वलवता
दर्शनेनैवासिल-खलवल-दलता, दन्त-लागूल-पतित-दैत्य-सघात
निपातयिता, श्रद्धधना हनुमता श्री राघव, कृत-शीर्षार्जनेनारिजन-
घन-गर्जनेन, ऋजुना चार्जुनेन श्री यादव, प्राप्त-परमानन्देनामन्देना-
द्वन्द्वेनानन्देन गौतमो बुद्धः, समयानुसारमार्पेण ऋषिणा ऋषभेण
जिन, दत्तोत्साहेन भामाशाहेन राणा प्रताप, समर्थश्रीस्वामी
रामदासेन शिव-वीर, वैरागीवीरवन्देन श्री गुरु गोविन्द, स्वात्मा-
भिमानिना मानिता स्वामिना दयानन्देन गुरुवृजानन्दः, दत्तदैव्य-
दारिद्र्यघाज्ञानाना गौरागाना जबहरेण दीनोद्धरणेन जवाहरेण
राष्ट्रपिता गान्धी, अभिलषितविकासेन अनायासेनैव त्यक्तमुक्ता-भुवत्-
विलासेन मापदेनापि सुहासेन सोल्लासेन देश-दासेन सुभासेन आज्ञाद

पहले भी अमन्द मुन्दरी इन्दिरा, सपुत्र भी, बड़े बटुम्ब के आडम्बर
को छोड़ दिन-रात देनोढारायें दत्त-जीवन, महानुभाव स्वर्गीय पूज्य पिता श्री
जवाहरलाल के—धीमती कमला के बाद—चरण-कमलों की उपासना करती
रहती थी तथा सभी देनों के सभी प्रकार के अनुभव प्राप्त करती रहती थी ।

यह विचार ठीक है कि जैसे—किष्किन्धा-निषामी, सक्त-कला-गमूहो
के बन्वान्, दर्शन मात्र से ही व्याकुल हुई सारी मनदल सेना के दहनकर्ता,
दन्तलागूल में फसे दैत्य-सघात के निपातयिता, श्रद्धालु श्री हनुमान जी के सह-
योग से श्री रामचन्द्र जी, शीर्ष का भर्जन करने वाले, रिपुजनों के घनगर्जन
करने वाले, गरल-मल अर्जुन के महत्याग से श्री कृष्ण, परमानन्द-प्राप्त, विल-
क्षण इन्द्राणीत आनन्द के महयोग से श्री गौतमबुद्ध, तत्कामीन ऋषि-ऋषभदेव
के महयोग से श्रीर्षेयजि जिन, उत्साह देने वाले भामानाह के महयोग से राणा-
प्रताप, समर्थ श्री स्वामी रामदास के महयोग से इन्द्राणि वीर निवात्री, वैरागी
वीर वन्दा के महत्याग से श्री गुरु गोविन्द सिंह, स्वामीभिमानि श्री स्वामी
दयानन्द के महयोग से दयानन्द श्री, दैव्य, दारिद्र्य एवं धनानदाता गौरागो
का क्षेत्र हरन वाले, दीनों के उद्धारक श्री जवाहर के महत्याग से राष्ट्रपिता

हिन्द-सैन्य-समूह मफनोऽभवत्, तथैव मविनयया, मद्रामन्न सन्नयया, अकाल-बाललीला-विलासावमानेऽपि प्रसन्नया, मद्दुद्धार-कृत-वृत्तयया, नित्य मत्य-मुरचनया, दीन-दुःख-दारिद्र्यविमोचनया, स्वागैरपिकृतापकृत्यानामालोचनया, पुण्यपथावलोकनया धृत्यादि-धर्म-लक्षणैरतिरोचनया, मजीव-राजीव-द्वय-मुवनया, भारतोद्धारा-थंमुपहृत-यीवनया, विलास-व्यय-कृत-मकोचनया, देव-मेवा-विरो-चनया, गीतानुमारं गनामून्नगनामूच्छाशोचनया, यथाममय दीन-जन-तर्पणाथंमेवोपाजित-धन-मवलनया, कूट-वपट-वपाटावरणाना-मुत्पाटने पटु-धनया, छल-छद्म-वचना-गुण-छन्ननया, मल-बल-दलनया, वीरललनया, सुलोचनयानया तनयया श्री जगद्गुरु लक्ष्मण-मनोरथोऽभवत् ॥४६७-५०६॥

महात्मा गांधी, विद्यासाभिलाषी, भोग कर छोटे हुए अनेक भोगों के त्यागी, सक्लों में भी हँसने वाले, उल्लासी, देव-सेवा मुभाप के महयोग में आजाद हिन्द-सेना समूह सफन हुए; उन्हीं प्रकार—विनीत, मदा ही मत्य न्याय की समीप रखने वाली, अराग्य में ही बाललीला विलासों की ममाप्ति पर भी प्रसन्न, भले लोगों के उद्धार की कल्पना करने वाली, नित्य मत्य मुरचनानायी, दीन-दुःख दारिद्र्य दूर करने वाली, अपने अर्थों द्वारा हुए भी अपकृत्यों की आलोचना करने वाली, पुण्यपथ को देखने वाली, धृत्यादि धर्मलक्षणों में अल कून सजीव-राजीव दो पुरी वाली, भारतोद्धारमें यीवन लगाने वाली, विलास-व्यय में मकोच करने वाली, देवमेवा में मजबूत यानी, गीतानुमार छन तथा जीवन स्वजनो की चिन्ता में रहित, आवश्यकता के ममय दीन-जन-तर्पणाथ ही उपाजित धन का सग्रह करने वाली, कूट वपट, वपाटों की दीवारों को ताटने में तेज इथीडे जैसी, छल-छद्म-वचना समूहों को छलने वाली, दुष्ट-मनवन को दबनेवाली, गुणोचना, वीर ललना इम पुरी के महयोग स श्री जगद्गुरु श्री के मनोरथ पूर्ण हुए ।

विश्वात्मा

श्री जवाहरलालो न केवल राजनीतिज्ञ, युग-नायकः सफल-शासन-सचालक एव, अपितु-भूगोल-खगोल-काव्यसाहित्येतिहास-जीवनचरित-सामान्य-ज्ञानादीना मर्मज्ञ अप्यासीत् । विश्वस्य नवीना-प्राचीना च संस्कृतिर्यथार्थतो यथानेन ज्ञाता तथानान्यैः । विशेषेण भारतीय प्राचीनमर्वाचीन च संस्कृति-रहस्य आमूल-चूलमनेन हस्तामलकवद् दृष्ट प्रदर्शित च, अस्य महानुभावस्य सर्वेषा ग्रन्थानामध्ययनमुपन्यासवत् सरस भवति । प्रतिशब्द, प्रतिवाक्य, प्रत्यनुच्छेद प्रतिपृष्ठ, प्रत्यध्याय चैकदैव समस्त-ग्रन्थाध्ययन प्रति जिज्ञासा विलक्षणेनातिमोदप्रदेन ज्ञानेन सह वर्द्धते, 'मम कथा' तथा चान्येषां ग्रन्थाणामनुवादो विश्वस्य सर्वासु भाषासु विज्ञैर्विद्वद्भि सादर कृतः, अनेकानि संस्करणानि पुस्तक-प्रकाशन काल एव कृताग्रहैर्ग्राहकैर्गृहीतानि समाप्तानि ॥५१०-५१७॥

अर्थ—श्री ५० जवाहरलाल केवल राजनीतिज्ञ, युग-नायक, सफल शासन सचालक ही नहीं, अपितु भूगोल खगोल, काव्य साहित्य-इतिहास, जीवन-चरित तथा सामान्य ज्ञान आदि के भी मर्मज्ञ थे । विश्व की नवीन एव प्राचीन संस्कृति जिस प्रकार उसने जानी, वंसी दूसरो ने नहीं । विशेषकर भारतीय प्राचीन तथा अर्वाचीन संस्कृति के रहस्य को आमूल-चूल इसने देखा और लोगों को दिखाया । इस महानुभाव के सभी ग्रन्थों का अध्ययन उपन्यास के समान सरस होना है । इसके प्रति शब्द, प्रति वाक्य, प्रति अनुच्छेद, प्रति पृष्ठ, प्रति अध्याय को पढ़कर, सारे ग्रन्थ को पढ़ने की जिज्ञासा अति विलक्षण मोद-प्रद ज्ञान के साथ बढ़ती ही जाती है । 'मेरी कहानी' तथा अन्य ग्रन्थों का अनुवाद विश्व की सभी भाषाओं में विज्ञ विद्वानों ने सादर किया है । अनेकों संस्करण पुस्तक प्रकाशन होते ही आप्रह करने वाले ग्राहकों से खरीदे गये, समाप्त हो गये ।

एव सर्व-क्षेत्र-कृताधिकारम्यास्य महानुभावस्यावतार-भोट्या
 गणना जाता । उक्तं हि भगवता श्रीकृष्णेनार्जुनाय स्वमुखाग्विन्दनः-
 "यद् यद् विभूतिमत्सन्व श्रीमदूर्जितमेव वा । तत्तदेवावगच्छन्व मम
 तेजोऽमम्भवम् ॥" मक्षोपत ज्ञानेन, रूपेण, मोन्दर्येण, स्वास्थ्येन,
 मुप्रतिभेन प्रभावेण, वागगादिष्वप्रतिभेन कृत्-नपञ्चरणेन, मानु-
 शामनेन शामनेन, पौरुष्य-शास्त्राद्योभय-विध-विशेष-वेग-विश्यामेन,
 गत्याग्रह-सग्रामजेन मधर्षेण, ममस्य-कुटुम्ब-ममर्षण-प्रण-गणेन त्यागेन,
 गौराग-राज-विरोध-कृत-धर्म-रणेन यागेन, दीनोद्धार-प्रचार-कृत
 चरणेन, त्यागि-मत्व-ममाविष्टेष्ट-वृद्ध-जनानुमरणेन, विपुल-
 विपत्तमग्नितपि-पतित-पन्तारणेन दीन-हीन-दारिद्र्यजनोद्धरणेन,
 निर्धन-जन-वम्भरणेन, स्त्री-शूद्र-हरिजनाना अविद्या-दैन्य-
 अस्पृश्यतादि-दोष-कटिन-उल्लेख-हरणेन देश-मेवाया कटिवद्वेनागी-
 कृतमरणेनानेन या अवतार-शोटी प्राप्ता मा न केवलमनुनयविचारदे
 स्वार्थ-नत्परैश्चाटुकारैरेव समर्पिता अपितु विश्व-विश्वानैर्लोक-नायकैः
 साहित्येतिहास-विज्ञान-राजनीतितत्त्वज्ञैरथ च पूर्वकृत-प्राण-विरोधै-

अर्थ—इस प्रकार सभी क्षेत्रों में पूर्ण अधिकार किया—महानुभाव
 जवाहर की अवतार शोटी में गणना होने लगी अर्जुन की भगवान् श्रीकृष्ण ने
 अपने मुखारविन्द में स्वयं कहा है—मगर मैं जो वा विभूतिमत् श्रीमान्
 ओत्रम्बो प्राणी है—उसमें मेरा तेज अग विशेष रूप में जान । मक्षोप न में जान
 में, रूप में, मोन्दर्य में स्वास्थ्य में, अच्छी प्रतिभा ज्ञाने प्रभाव में, वागगादि
 स्वानों में जिये अप्रतिम तपश्चरण में, अनुगामनमुत्त शामन में पूर्व-पदिचम
 के दोनो प्रकार के विशेष वेग विश्याम में, गत्याग्रह समरज-य मधर्ष में, ममस्य
 कुटुम्ब-ममर्षण प्रण के अमूष्य त्याग में, दीनोद्धारक प्रचार में पैर धरने में, त्यागी
 मन्वममाविष्ट इष्ट वृद्ध जनो के अनुमरण में, विपुल विपत्ति के समुद्र में पडे-
 गिरे हुआ का तारने में, दीन हीन, दारिद्र्य जनो के उद्धरण में, निर्धनो का
 समुद्र करने में, स्त्री, शूद्र, हरिजनो क अविद्या, दैन्य, अस्पृश्यतादि कटिन दोष
 क्षेण हरने में, देश मया म कटिवद्वे जीवन बलिदान तब का अमीकार करन
 में, जो अवतार पदवी प्राप्त की पर केवल अनुनय विचारदे, स्वार्थ-नत्पर
 तथा पाटुकारों न ही नहीं दी थी, अपितु विश्व विश्वान लोचनापकी, साहित्य-

ब्रिटेनादिदेशेशैरपि सादरमुपायनीकृता । अत्रैवेयमुक्ति-सफल-“शूरो
वैरि-प्रशसित ” इति । श्रीमद्भगवद्गीतानुसारञ्चाय मनस्वी-“ज्ञान
विज्ञानतृप्तात्मा, कूटस्थो विजितेन्द्रियः । युक्त इत्युच्यते योगी सम-
लोप्टाश्मकाचनः” ॥ इति सुलक्षणैलंक्षमणइव प्रतिदिन कृत-प्राणायामैः
शीर्षासनैश्च वशीकृत-सेन्द्रिय-साग-शरीरो विलक्षणो राज-योगी जातः
॥५१८-५२८॥

अमित-महिमावत श्रीमतो जवाहरस्य विषये पूर्वमेव विश्व-
कविना श्री रवीन्द्रनाथठाकुरेणोक्तम्—“श्रीजवाहरलालेन राजनैतिक
सघर्षक्षेत्रे—यत्र प्राय छल-छद्म-कूट-कपट-आत्मप्रवचनादिका दोषा-
ञ्चरित्र दूषयन्ति शुद्धाचरणस्याप्रतिम आदर्श स्थापित, सोऽस्ति
विकट-सकट-सघट्ट-पूर्णादपि सत्याद्दिमुखोनाभवत् । विविध-सुविधा-
सुख-विधायकेनाप्यसत्य-व्यवहारेण त-मनो मेलन न जातम् । तस्य
प्रतिभा प्रभावशालिनी प्रज्ञा कूटनीतिकादस-मार्गसर्वदावज्ञापूर्वक,
प्रतिनिवृत्ता, यत्र साफल्यमत्यल्प-मूल्य तुच्छ च भवति ॥५२९-५३४॥

इतिहास विज्ञान राजनीति-तत्त्वज्ञो तथा पहले प्राणो तक के शत्रु ब्रिटेन आदि
देशो के अधीनो ने भी सादर समर्पित की थी । यही पर यह उक्ति सफल हुई—
'शूरोवैरि वही है जिसकी वींगे भी प्रशमा करें ।' श्रीमद्भगवद्गीता के अनुसार
पह मनस्वी—“ज्ञानविज्ञान तृप्तात्मा, कूटस्थ विजितेन्द्रिय मिट्टी ने डेले, पत्थर
तथा सोने को समान समझने वाले युक्त पुरुष को ही योगी कहते हैं ।” इति
सुलक्षणो से लक्ष्मण के समान, प्रतिदिन किये प्राणायामो तथा शीर्षासनादि
प्राणायामो से, इन्द्रियो तथा अगो सहित शरीर को बश करके विलक्षण राजयोगी
बन गये ।

अमित महिमावान् श्रीमान् जवाहरलाल जी के विषय में विश्व-कवि
श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने पहले ही कहा था—श्री जवाहरलाल ने राज-
नैतिक क्षेत्र में—जहाँ पर प्राय छल छद्म, कपट कूट, आत्मप्रवचनादिक दोष
चरित्र को दूषित करते हैं, शुद्ध आचरण का अमूर्तिम आदर्श स्थापित किया ।
वे प्रति विकट सकट-सघट्ट-पूर्ण सत्य से भी विमुक्त नहीं हुए । विविध-सुविधा
सुख विधायक भी असत्य व्यवहार से उनका मन नहीं मिला, उनकी, प्रतिभा के
प्रभाव में शालिनी प्रज्ञा, कूटनैतिक अतन्मार्ग में अवज्ञा तथा अरुचिपूर्वक हट
जाती थी, जहाँ पर कि सफलता अल्प-मूल्य तथा तुच्छ बन जाती है ।

अनेन महानुभावेन स्वकीयाष्टादशाब्दात्मके एव शासन-
काले स्वस्वार्थमविचिन्त्य, स्वपक्षीयाणा महानामपि देशानां विरोधा-
विरोधमविगणय्य, स्वदेशमामर्थ्यानामर्थ्यमविचार्य, अन्याय-विपक्षो
कोश्या-कांगो-स्वेज-निघ्नतादि-म्यानेषु आक्रमणानां विरोध कृत,
स्मयोन्मीय देशयोर्व्ययोऽन्यस्या नीति. महिष्ठिम नादमुद्योपिता,
पानिता च, येनाचरणेनास्य महानुभावस्य देशस्य चामितममल च
यस्य सर्वत्र प्रसृतम् ॥५३५-५३७॥

भारतमातुश्चरणयोगनुक्षण प्रतिश्रवामममर्षण-मगायणेनापि श्री
जवाहरेण ज्ञान-निघयो विविधा ग्रन्थाः विष्कविवेकिन्यः प्रदत्ताः ।
तेषु केचिन्नघोनिधिताः—

“१ दिव्य इतिहास की भवत, २. हिन्दुस्थान की कहानी, ३. मह-
महाती दुनिया, ४ इतिहास के महापुष्प, ५ राजनीति में दूर, ६ राष्ट्रपिता,
७ पिता के पत्र पुत्री के नाम, ८ हिन्दुस्थान की गमग्याएँ, ९. कुछ पुरानी
चिट्ठियाँ ।”

इन महानुभाव जवाहर ने अपने अष्टाष्ट वर्षों के ही शासन-काल में
स्वार्थ को न सोचकर हुए, अपने पक्ष के बड़े-बड़े देशों के भी विरोधाविरोध का न
गिनते हुए, स्वदेश की सामर्थ्य-असामर्थ्य को न विचार, अन्याय के विरोध
कोशिया, कांगो, स्वेज एवं निघ्नतादि देशों में आक्रमणों का विरोध किया, स्म
तथा योरप के घड़ों में तटस्थ-नीति की महिष्ठिम नाद-घोषणा तथा पानना
की; जिस आचरण में इस महानुभाव तथा भारत का अमित विमल यम सर्वत्र
फैल गया ।

भारत माता के घरघों में प्रतिशय, प्रतिश्रवाम ममर्षण दिव्य हुए भी श्री
जवाहर ने—ज्ञान के समुद्र विविध यय, दिव्य के विवेकियों की दिये हैं, इनमें
कुछ के नाम नीचे लिखे हैं :—

१. दिव्य इतिहास की भवत, २ हिन्दुस्थान की कहानी, ३ मह-
महाती दुनिया, ४. इतिहास के महापुष्प ५ राजनीति में दूर, ६ राष्ट्रपिता,
७ पिता के पत्र पुत्री के नाम, ८ हिन्दुस्थान की गमग्याएँ, ९. कुछ पुरानी
चिट्ठियाँ ।

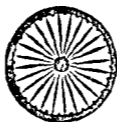
पचशील-प्रवर्तकेऽतिप्रतिष्ठितेऽस्मिन्महानुभावे प्रपच-सचय
विहाय पचत्व गते सति किमुत हिताना मित्राणामहितानाममित्राणा-
मपि देशाना ध्वजा मक्म्पा धारासारैरश्रुवर्षमधोमुखा धराया-
मलुठन् ॥५३८-५३९॥

नह्यन्तो दिव्य-भावाना चरिताना महीयस ।
अतोऽसमर्थो विरमेयम् लेखनादतिपावनात् ॥५४०॥
नान्तोऽस्त्यस्य विभूतीना महतीना विशेषतः ।
मयातु गुण सामुद्रात्कण-मात्र प्रदर्शितम् ॥५४१॥
जीवोपकार-निरत विरत विमोहात्—
वेदोक्त कर्मसु रत दुरितापहारम् ।
सर्वत्र-सर्व-मुख्यद विशद विशाल ।
दीनार्ति-दारण-पर सतत नमामि ॥५४२॥

पचशील प्रवर्तक, अति प्रतिष्ठित इस महानुभाव के प्रपच-सचय को छोड़ पचत्व में मिन जाने पर हितैषी मित्रों के तो क्या अहितैषी, अमित्र देशों के भी भण्ड कापते हुए, धारासार अश्रु बहाते हुए मुंह भुकाए धराशापी हो रहे थे ।

इस महान् चरित्र के दिव्य भावों का अन्त सम्भव नहीं, अत इस अत्यन्त पवित्र लग्न कर्म में विराम लेता हूँ । इस महानुभाव की विशेष रूप से महान् विभूतियों की समाप्ति कभी नहीं हो सकती, मैंने तो श्री जवाहर के गुणों के समुद्र में बचन कणपात्र दियाया है ।

जीवों के उपकार में सदैव, विविध मोह मुचन, वेदोक्त कर्मसलग्न, दुःख-दारिद्र्य पनेसों व अपहारक, सर्वत्र सर्व-मुख्य दाता, विशद विशाल, दीन दुःख-विनाश परायण प्रभु को सदा प्रणाम करता हूँ ।



श्रद्धाञ्जलयः

राष्ट्रपतिश्रीराधाकृष्णन्महोदयानां श्रद्धाञ्जलि

श्री जवाहरलालस्य नेतृत्व न यदा भवेत् ।
 सक्रिय सार्वभौम च, किं भवेत् भारतम्नदा ॥१॥
 भारतीयैतिहासस्य समाप्तः मुन्दरो युगः ।
 भुवं त्यक्त्वा दिवं याते प्रियेऽस्माक जवाहरे ॥२॥
 सम्भाषणेष्वपूर्वेषु सार्वभौमेष्वनेकशः ।
 शिक्षितोऽखिललोमाना मतः सद्भावतस्तथा ॥३॥
 आत्मन प्रियसिद्धान्तनिर्मितो भारत शुभ ।
 अहिंसा-मत्य-मद्भावगुरु-गान्धी-निदर्शितः ॥४॥

श्री जवाहर लालेन नव-भारत-निर्माणमुत्थान च कृतम् । ये
 सस्फारैर्भारतस्योन्नतिर्जाता तान् धारयितुं सक्रिया भवेम । कालस्य
 निर्मममाह्वान निवारयितुं कश्चिदपि समर्थो न भवेत्, अतोऽस्माक
 प्रियो नेताऽस्मामु नाद्य दृश्यते । श्री जवाहरस्य जीवनमनन्त-सेवायाः
 समर्पणस्य चाभूत् । अयमस्माक युगस्य महत्तमोऽद्वितीयो राजनीतिज्ञ
 आसीत् । मानव-मुक्तिं प्रति तत्कृता- सेवाः वयं सदा स्मरिष्याम ।

अर्थ—राष्ट्रपति राधाकृष्णन् जी की श्रद्धाञ्जलि—' यदि श्री जवाहरलाल जी
 वा सक्रिय सार्वभौम नेतृत्व न होता तो भारत का क्या वनता ? हमारे प्रिय
 जवाहर के भूमि को छोड़ स्वर्ग मिथारने पर भारतीय इतिहास का मुन्दर
 इतिहास समाप्त हो गया । उन्होंने अनेक बार अपने अपूर्व सार्वभौम
 सम्भाषण से सभी लोगों को अपना मत सद्भाव से मिखाया तथा श्री गान्धी
 गुरु द्वारा निर्दिष्ट अहिंसा-मध्य मद्भाव आदि अपने सिद्धान्तों से शुभ भारत
 का नव-निर्माण एक उत्तम किया । जिन तस्वारों से भारत उन्नत हुआ उन्हें
 धारण करने को हम सक्रिय रहे । काल के निर्मम आह्वान को कोई भी रोकने
 से समर्थ नहीं, इमीलिए हमारा प्रिय नेता आज हमारे से दिव्य नहीं देता ।
 श्री जवाहर का जीवन अनन्त सेवा एव समर्पण का था, यह हमारे युग का
 महत्तम, अद्वितीय, राजनीतिज्ञ था, मानव-मुक्ति के लिए उनकी सेवाएँ हम

आधुनिक-भारत-निर्माणे तेषामवदानमभूत्पूर्वम् । श्री जवाहर-जीवनस्य कार्याणां च गम्भीरः प्रभावोऽस्मदीयचिन्तने, सामाजिकसंगठने, बौद्धिक-विकासे चातिरामबलोक्यते । दुर्बल-हताश-व्यक्तीनां प्रति तद्दृष्टये महती सहानुभूतिरुद्भवतिस्म । श्री जवाहरस्य साहसेन, व्यक्तित्वेन, प्रत्युत्पन्नमतित्वेन चैक्यगतोऽस्मद्देशोऽप्ये सरति । स्वकीयमस्तित्वमिष्टं चेत् तदास्माभिस्तेषां त एव गुणाः सवर्द्धनीयाः । तेभ्योऽस्माकमेतैवोत्तमा श्रद्धाजलिर्यत्तेषामादर्शान्निगी-कुर्मः ॥५-१२॥

अमरीका-राष्ट्र-पति श्री जानसन महोदय सन्दिदेश—“श्री नैहरोरतोऽधिक कश्चित्स्मारको नास्ति यत्ससारे युद्धभयस्य विनाशस्य । विश्वस्मिन् विश्वे कदाचिदपि केनापि नायकेनैव मानव-शान्ति-भावना न प्रकटिता । अद्यास्मत्समक्षमयमग्रिमः प्रश्नोऽस्ति, युद्धरहित-विश्वस्यादर्श-प्राप्त्यर्थं श्रीजवाहरेणाखिलमानवता सेविता । राष्ट्रपितेवास्यापि मूल-मन्त्र शान्तिरेवासीत् । हार्दिक

सदा याद रखेंगे । आधुनिक भारत के निर्माण में उनकी देन अद्भुत है । जवाहर के जीवन तथा कार्यों का गम्भीर प्रभाव हमारे चिन्तन, सामाजिक संगठन एवं बौद्धिक विकासों में पूर्ण रूप से दिखाई देता है । दुर्बल तथा हताश व्यक्तियों के लिए उनके मन में बड़ी सहानुभूति थी ; उनके साहस, व्यक्तित्व एवं प्रत्युत्पन्नमतित्व से संगठित हमारा देश आगे बढ़ रहा है । हम यदि अपना अस्तित्व चाहते हैं तो उनके उल्लिखित गुणों को बढ़ायें । उन्हें हमारी बड़ी उत्तम श्रद्धाजलि है कि उनसे आदर्शों को स्वीकार करें ।”

अमरीका के राष्ट्रपति श्री जानसन ने सन्देश दिया—“श्री नेहरू का इससे बड़ा स्मारक नहीं होगा कि ससार में से युद्ध-भय का विनाश हो । सारे ससार में कभी भी किसी भी नेता ने ऐसी मानव-शान्ति की भावना नहीं प्रकट की । आज हमारे सामने यही सबसे बड़ा प्रश्न है । युद्धरहित विश्व की आदर्श-प्राप्ति के लिए श्री जवाहर ने सारी मानवता की सेवा की है । राष्ट्रपिता के समान जवाहर का भी मूल-मन्त्र शान्ति ही था । मेरी यह हार्दिक अभिलाषा है कि विश्व के नेता श्री जवाहर की स्मृति में उनके आदर्शों की वास्तविक रूप से

महामभिलषामि यज्जवाहर-ममृती विश्व-नायकान्तेषामादर्शान्निगीकुमुः
एतदर्थं कृत्स्नकल्पोज्ज्वलः सर्व-श्रद्धेयायाम्मै श्रद्धाञ्जलिमर्प-
यति ॥” १३-१७॥

इमस्य प्रधान मन्त्री श्री स्तुश्चेव साथुराह—“न केवल भारतीय
एव तादृशेन कुशल-विवेकिना नायकेन विमुक्ता येन देश-मेवार्थ
राष्ट्रस्य पुनरुद्धारार्थं चानिमर्षः कृत अपितु सर्वे प्रगति-प्रिया
जना एवविषयस्य महानुभावस्य वियोगेन शोक-निमग्ना भविष्यन्ति,
येनान्तिमक्षण यावत् मानवताया उच्चादर्शार्थं, शान्ति-प्रगत्यो
प्राप्त्यर्थं च स्वकीया सर्वा शक्तयः प्रयुक्ता ॥” १८-२२॥

काम-नायकः श्री डीगालो गलदक्षरेण-गलेनाह—“श्री जवाहरस्य
मृत्यो समाचार श्रुत्वा मया हार्दिकमतिक्रमण दुःखमनुभूतम् । ते
महान्तो राजनायका आसन् । अह स्वस्य कामस्य जनतायाश्च मम-
वेदना प्रकटयामि ॥” २३-२४॥

सोवियत राजदूत श्री वेनेदिकनोव रदन्नाह—“श्री
जवाहरनालो विश्वस्याप्रतिमो व्यक्ति , भारतीयो महान्नागरिक ,

प्रहण करें । इसके लिए कृत्स्नकल्प हमारा देश सर्वश्रद्धेय श्री मेहरू जी को
श्रद्धाञ्जलि भेंट करता है ।”

आमू बहते हुए इम के प्रधान मन्त्री श्री स्तुश्चेव बोले—“केवल
भारतीय ही उस कुशल, विवेकी, नायक से विमुक्त नहीं हुए, जिनने कि देश-मेवा
के लिए एव राष्ट्र के पुनरुद्धार के लिए अति सघर्ष किया, बल्कि सभी प्रगति-
प्रिय देश इम प्रकार के महानुभाव के वियोग से शोक-निमग्ना होंगे जिनने कि
अन्तिम क्षण तक मानवता के उच्च आदर्शों की प्राप्ति के लिए अपनी मारी
शक्तिया लगा दीं ।”

काम-नायक श्री डीगाल लहयटानी जवान मे, श्रुते हुए गले से बोले—
“श्री जवाहरकी मृत्यु के समाचार का सुनकर मैंने हार्दिक दुःख का अनुभव
किया । वे महान् राज-नायक थे । मैं अपनी तथा काम की जनता की ममवेदना
प्रकट करता हूँ ।

सोवियत राजदूत श्री वेनेदिकनोव ने रोते हुए कहा—“श्री जवाहरनाय

लोकेष्टशान्ति-स्थापनार्थमहर्निश सघर्षतः सर्वान्तिगः सेनानायक-
श्चामीन् ॥२५-२६॥

श्रीमता अब्दुल गफ्फार गान्धिना तारद्वारा सन्दिष्टेन्दिरा-
“कदाचिदहमस्मिन् राष्ट्रीय-शोक-सागरे तव समीपे भवेयम् ॥२७॥

राष्ट्र-पिता महात्मा गान्धी पूर्वमेवाह—“जवाहर लाल आत्मना-
नुपमो वीरः । देशानुरागक्षेत्रे जवाहरादधिक कोऽन्य ? यत्र अस्मिन्
सुभट इव माहमश्चापल्य चास्ति, तत्र राजनीतिज्ञ इव बुद्धिमत्ता
दूरदर्शितापि चास्ति । अनुशासनस्य अयं पूर्णभक्तोऽथ चैवविध काले
ऽपि यदनुशासनमपमानमिवाभातिस्म, अनेनानिदाहोचनास्य पालन-
मादर्शितम् । अयं स्फटिक इव शुद्ध । अस्य सत्यपालन विषये तु शत्रु
लेशोऽपि नास्ति, अयं निर्भयो निर्दोषो निष्कलकश्च नायकोऽस्ति,
जवाहरेण स्वदेशवेद्या स्वजीवनस्याग्निला अभिलाषा ममताश्च बलि-
कृता श्री जवाहर एकविधोऽमुत्तुट मन्त्राडस्ति यो भारत तु सेवितुम-
भिलषत्येव तद् द्वारा विश्वमपि सेवितुमीहते ॥”२८-३३॥

विश्व के अप्रतिम ध्यक्विन, भारत के महान् नागरिक लोकप्रिय शांति की
स्थापना के लिए अहर्निश सघर्षक तथा सर्वोच्च सेनानायक थे ।”

श्रीमान् अब्दुल गफ्फार गांधी ने इन्दिरा को तार द्वारा सन्देश दिया—
“काश, हम राष्ट्रीय शोक सागर में मैं तेरे पास होता ।”

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने श्री जवाहर की युवावस्था में ही कहा
था—“श्री जवाहर अपने आप अनुपम वीर हैं, देश-प्रेम के क्षेत्र में इतने
बढ़कर और कौन है ? जहाँ पर हम अच्छे योद्धा के समान साहस व चपलता
है वहाँ पर राजनीतिज्ञ के समान बुद्धिमत्ता और दूरदर्शिता भी है । अनुशासन
का यह पूरा भक्त है विशेषकर ऐसे समय—जबकि अनुशासन-पालन अपमान
के समान प्रतीत होता है इसने इसके पालन में पूरी दृढ़ता दिखायी है ।
यह स्फटिक मणि के समान शुद्ध है, इसके सत्य-पालन के विषय में तो कुछ भी
शत्रु नहीं । यह निर्भय, निर्दोष तथा निष्कलक नेता है । प० जवाहरलाल ने
स्वदेश की बेदी पर अपने जीवन की सारी अभिलाषाएँ तथा ममताएँ बलिदान
कर दीं । श्री जवाहर लाल इन प्रकार का बेतान बादशाह है जो भारत की सेवा
तो करना चाहता ही है, इसके द्वारा सारे विश्व की भी सेवा करना चाहता है ।”

ग्रन्थ-सारः

घटना या विशेषेण जीवनेऽस्य पुराभवन् ।

ताः प्रचक्ष्ये महाभागाः । शृणुध्व पुण्य-कारिकाः ॥१॥

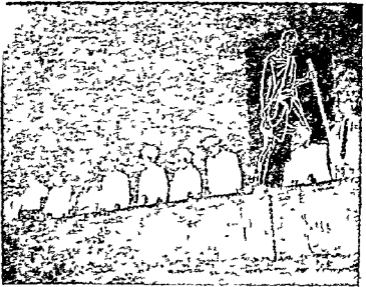
एकोनवत्युत्तर-अष्टदशे त्रिप्टाब्दे चतुर्दश-नवम्बरेऽस्य महात्मनो जनिरभूत् । कृतयज्ञोपवीतस्तु गगास्नान दिने-दिने । कृतवान् महमात्रा वै मत्सग चाकरोत्तथा ॥ पचोत्तरैकोनविशेऽब्दे शिक्षार्थंमान्त्र भूमिमगच्छत् द्वादशोत्तरैकोनविशे च लव्यशिक्षो भारतमागत । पौडशोत्तरैकोनविशे विवाहो गान्धिव-सगतिश्च । एक-विंशतिकैकोनविशे दिमम्बरे देशसेवानो बन्धनम्, द्वाविंशत्युत्तरैकोन-विशे-मार्चे मुक्ति, पञ्चविंशत्युत्तरैकोनविशे योत्पस्य हसस्य च यात्रा, अष्टाविंशत्युत्तरैकोनविशे लक्ष्मणपुरे जन-नेतृत्वम् साईमन कमीशन-विरोधार्थम्, एकोनविंशत्युत्तरैकोनविशे लवनगरे राष्ट्रमभाध्यक्षता, पचत्रिंशदुत्तरैकोनविशे चतुर्दश-फर्ब्रुअर्मल्मोडानगरस्य कारागारे आत्मकथा-पूर्ति, चत्वारिंशदुत्तरैकोनविशे, एकत्रिंशदकट्टवरे सत्या-ग्रहे बन्धनम्, द्विचत्वारिंशदुत्तरैकोनविशे सप्तमेऽगस्ते मुम्बय्या काग्रेस-अधिवेशने भाषणम्—'गौरा भारत त्यजत' इति प्रस्ताव-स्पष्टी-करणार्थम् । तदग्रिमदिने च गृहीतस्याहमदनगरदुर्गे निरोधस्तत्र च बहुलेखनम्, पञ्चत्वारिंशदुत्तरैकोनविशे मार्चे विमुक्ति, दक्षिण पूर्वीय एशिया-देशाना चतुर्थे भ्रमणञ्च । अस्मिन्नेवाब्देऽप्य काग्रेसस्य

अर्थ—श्री जयाहरमाल जी के जीवन में घटी कुछ विशेष पुण्यकारक घटनाओं को सुनाता हूँ, सुनिये । १८८६ ई० सन् के १४ नवम्बर को जन्म हुआ । यज्ञोपवीत होने पर वे प्रतिदिन माताजी के साथ गगा स्नान तथा सत्सग के लिए जाते थे । १९०५ में वे शिक्षार्थ इंग्लैंड गये, १९१२ में शिक्षा प्राप्त कर वापिस आये । १९१६ में कमला के साथ विवाह एवं महात्मा गान्धी जी से मिले हुए । १९२१ के दिमम्बर में देश सेवा के कारण पकड़े गये, १९२२ में मार्च में छूट कर १९२६ में रुस तथा योम्प की यात्रा की । १९२८ में लखनऊ में साईमन कमीशन के विरोध में जनता का नेतृत्व किया । १९२९ में साहौर में काग्रेस-सभा के अध्यक्ष बने । १४-२-३५ को अल्मोडा जेल में आत्मकथा पूरी की । ३१-१०-४० को सत्याग्रह में पकड़े गये । ७-८-४२ को बम्बई में काग्रेस के अधिवेशन में 'अग्नेजा, भारत छोड़ो' यह प्रस्ताव रखा, ८-८-४२ को पकड़कर अहमदनगर के किले में रखे गये, वहाँ बहुत कुछ लिखा । मार्च १९४६ को छूटने पर दक्षिण पूर्वी एशिया का चौथी बार भ्रमण किया, इसी वर्ष काग्रेस

चतुर्थोऽध्यक्ष, सप्तचत्वारिंशदुत्तरैकोनविंशे पचदशेऽगमते भारत-स्वाधीनता-काले प्रधानमन्त्रित्वम्, चतु पंचाशदुत्तरैकोनविंशे स्वयमा-विष्कृतपचशीलप्रयोगे विश्वसुखावहे चीनस्य प्रधान-मन्त्रिणा सह हस्ताक्षरकरणम्, पष्ठ्युत्तरैकोनविंशे भारत-प्रतिनिधिमण्डलस्य राष्ट्रसघ-गमनात्मक नेतृत्व तत्र विश्वशान्त्यर्थभाषणच । द्विपष्ठ्युत्तरैकोनविंशे प्रकटतो मित्राणामपि प्रच्छन्नामित्राणा, प्रत्यक्षे विश्वस्तानामपि, अप्र-त्यक्षेऽविश्वस्ताना, वचनवद्धानामपि कार्य-विरुद्धाना, राष्ट्रसघे तेषा प्रतिनिधित्वार्थं वार-वार योस्प-देशाना विरोधेऽपि भारत कृत-साहाय्येन, गलेन कृतज्ञाना, फलेन चाकृतज्ञाना वचकाना चीननीचा-नामाघातेनाप्रत्याशितो हृदयाघात । चतु पष्ठ्युत्तरैकोनविंशे भुवने-श्वर-काग्रेसधिवेशने हृदयरोगागतिः, अस्मिन्नेवाव्दे सप्तविंशतिमय्या-मतिविकलायामग्विलायामसहायाया शोक-मय्या दिव्या सर्वत्र जित-सत्य-समरोऽय जवाहरोऽमरोऽभवत् । हा ! हन्त ! हता मानवता,
गती जवाहरस्त्वद्य शरीरेण सुरालयम् ।
पर सदात्मना ज्योतिस्तम्भो मानव-मुक्तिदः ॥२-२०॥

के चौथी बार अध्यक्ष बने । १५-८-४७ को भारत के स्वतन्त्र होने पर प्रधानमन्त्री बने, १९५४ में बनायी पचशील-योजना पर चीन के प्रधान मन्त्री चाऊ ऐन लाई के साथ मिल कर हस्ताक्षर किये । १९६० में राष्ट्र मण्डल में जाने वाले प्रति-निधि-मण्डल का नेतृत्व किया तथा वहाँ पर विश्व-शांति के लिए भाषण दिया । १९६२ को प्रकट रूप से मित्र होते हुए भी प्रच्छन्न शत्रुओं, प्रत्यक्ष में विश्वस्तो तथा अप्रत्यक्ष में अविश्वस्तों, वचनों से प्रेम में बंधे हुए भी कार्य से विरुद्धों, राष्ट्र-सघ में उन्हींके प्रतिनिधित्व के लिए योरुपीय देशों के अति विरोध होने पर भी-भारत की ओर से की सहायता के कारण कहने मात्र में कृतज्ञों किन्तु फल में कृतघ्नों, वचक चीन के नीच शासकों द्वारा आक्रमण के अप्रत्याशित आघात से हादिक कष्ट हुआ । १९६४ में भुवनेश्वर के काग्रेस अधिवेशन में हृदय-रोग हुआ । इसी वर्ष अति विकल, अविल लोक म भ्रमहाय, शोकमयी दिल्ली में सत्ताईस मई को सर्वत्र सत्य समर को जीतने वाला भारतमाता के चरण-कमलों का भ्रमर, यह जवाहर भ्रमर हो गया ।

यह जवाहर आज शरीर से तो स्वर्ग चला गया, पर सदा की ही यह मानव की मुक्ति देने वाला ज्योति स्वम्भ बन गया ।



आशुवास्त्रविरोधार्थं प्रयतन्तो निरन्तरम् ।
 महान्तो विश्वनेतारः शान्तिं प्रापन् तपसा ॥



शान्तिम दशंनम्
 गणेश जयाद्वयम्पद्य रुद्ररिण्य सुरान्वयम् ।
 परं सदात्मना ज्योतिष्कम्भो मानवमुक्तिद ॥

ग्रन्थ-निर्माण-वृत्तम्

वरणालयमारभ्य श्रोत्रार्थं ताप-नाशिते ।
 सिंष्टाब्दे जूनमासे हि चतुःषष्टिमन्विते ॥१॥
 एतौर्नविंश-पूर्वे हि शोकाकुल - जनान्विते ।
 सप्तविंशतिथौ मय्या मध्याह्ने वन्धि-मग्निभे ॥२॥
 शोकोद्गारः समुद्भूता अस्ते भारत-भास्वरे ।
 जीवनं लोकायस्य देववाण्या लिखाम्यहम् ॥३॥
 विद्यालय-कार्येषु व्यस्तोऽसमर्थोऽस्म्यहम्परम् ।
 समयाभावतो भावा उत्पद्यन्ते क्षण-क्षणम् ॥४॥
 पूर्वं वै व्याधि-ग्रस्तोऽहमधुना त्वाधि-वाधितः ।
 सुख-शान्ति-विहीनोऽस्मि दीनो साधन-निर्धन ॥५॥
 मार्ग-निर्देशको यम्य गतो वीरः सुरालयम् ।
 चरित्रं तस्य यावद्धि न लिखामि महात्मनः ॥६॥
 तावन्न मानसी शान्तिं पश्याम्यत्र कदाचन ।
 अतोऽवकाशे श्रोत्रस्यागस्तमासे गति-प्रदे ॥७॥
 चैव गतोऽनुजावासे रामलाल-निमन्त्रितः ।
 प्रयासस्तत्र वालानां कृतोऽयं पाप-नाशनः ॥८॥
 पुण्यप्रदं शुभाधारः सर्व-लोक-सुखावहः ।
 यशदोऽलिललोकेषु चाल-वृद्धं हितावहः ॥९॥

इस पुस्तक का आरम्भ मैंने बरनाला में—श्रीष्म ऋतु में, गर्मी में तप रहे जून मास में, सन् १९६४ में जब कि सब लोग शोकाकुल थे—किया था । सत्ताईस मई को अग्नि के समान तपते हुए मध्याह्न में भारत-भास्वर श्री जवाहर के अस्त होने पर मेरे शोक उद्गार निकले कि लोकनाथ नेहरू का जीवन देव-वाणी में लिखूँ । विद्यालय के कामों में व्यस्त, समयाभाव से मैं सर्वथा असमर्थ था, पर भाव प्रतिक्षण उठते रहते थे । व्याधि ग्रस्त तो मैं पहले ही था । अब धाधि (मानसी व्यथा) से भी बाधित हुआ, सर्व साधनों से निर्धन सुख-शान्ति से हीन रहने लगा, जिसका कि मार्ग निर्देशक देव लोक चला गया । जब तक उस महात्मा का चरित्र नहीं लिखना, तब तक किसी प्रकार भी मान-सिक शान्ति नहीं प्राप्त कर सकता । इसनिष् अनुज रामलाल से निमन्त्रित उनके घर चैव में जाकर यह पाप-नाशन, पुण्यप्रद, सुखकर, सर्वलोक सुखा-वह सभी लोकों में मुग्य देने वाला, वाप-वृद्धों को हितकारी, स्त्रियों एवं हरिजनों

स्त्रीणा हरिजनानाञ्च वृद्धि-वृद्धि-प्रदायकः ।
 दीन-निघ्नंहीनाना ऋद्धि-मिद्धि-विधायकः ॥१०॥
 नर्व-पापहरो नित्य मत्य मगल-कारकः ।
 नष्टाना पय-भ्रष्टाना क्लिष्टाना धनेश-हारकः ॥११॥
 तथाच—मिष्टा-देज्जन्मामे हि चतुःपष्टिममन्विते ।
 एकोनविंशत्पूर्वे हि वर्षतावन्ति-वर्षानि ॥१२॥
 शीतानिल-जल-प्राये नर्व-जीव-मृत्वावहे ।
 मिद्धाश्रमे मिद्धि-प्रदे गमलान-गृहे शुभे ॥१३॥
 शीतादत्त-मसोपात्र-नेत्रनी-मनि-शोपकं ।
 चैतान्चलेऽह्मन्निश्च महामानव-जीवनम् ॥१४॥
 लिखनामगिलाधार पठना पापनाशनम् ।
 वदना मन्मदाकार मृष्वता शुभद परम् ॥१५॥
 वाचानामनिलोचनाना लीला-न्यास्यान्पद मुदम् ।
 विप्राणा मनि-वाहृत्य राजन्याना बल-प्रदम् ॥१६॥
 वैद्याना वश्यतावश्य धन-शान्त्र-विधायिनी ।
 स्त्रीणा हृन्जिनाना च शौर्य मुन्दनिनम् ॥१७॥
 एवं बाल-प्रप्रामोर्षि मफनो भाव-योगतः ।
 पात्र्य मगतो लौह काञ्चनम्बं प्रपद्यते ॥१८॥

जो वृद्धि ऋद्धि देने वाला, दीन निघ्न हीना का ऋद्धि मिद्धि विधायक, नित्य नर्व पापहारी, मत्य मगलकारी नष्ट, पयभ्रष्ट, वरदा भागी लोका क वरदा इतने वाता, उम युग पुरप के महान् जीवन लिखन का वाच प्रवाम मित किया है ।

जीर मन् १६६४ क बहुत वर्षों वात शीत जल वायु वात मद बीबा को मुषद अगस्त मास म मिद्धिप्रद मिद्धाश्रम म श्री रामतान क शुभ मृत् म उनका मुपुत्री शीता म नेत्रनी, दवान क म्यात्रीचूम नेकर—मैत यन्-विपुने वाता क शिगममन् आधार, पदन वाता का पारतागह करन वाता का मन्मन्ति दन वाता मुने वाता का परम मुन्द र्शः वात मानका को शीतादास्य तथा प्रमनि का म्याम, विद्या का मनिवाहृत्य उन वाला शशिर्षो का वनप्रद, देवता को प्रदस्य श्री धन शान्त्र विधायिनी वशीक प पुक्ति दन वाता, मिद्धा तथा हरिवर्तों को मायो मुष्ट डाग दर्शित शौर्य दन वाता 'महातानव जीवन' विद्या । दग प्रकार मरा वाच प्रवाम भीथी जराह जीवन के शुभ भावा मे मित कर मन्व हो गया कशाकि पारम मे मितकर तो साहा भी स्वण बन जाता है ।

ग्रन्थ-निर्माण-वृत्तम्

वरनालयमारभ्य ग्रीष्मर्तौ ताप-नापिते ।
 ख्रिष्टाब्दे जूनमासे हि चतुषष्टिसमन्विते ॥१॥
 एतौर्नविंश-पूर्वे हि शोनाकुल - जनान्विते ।
 सप्तविंशतिथौ मय्या मध्याह्ने बन्धि-सन्निभे ॥२॥
 शोकोद्गारा समुद्भूता अस्ते भारत-भास्करे ।
 जीवन लोक-नाथस्य देववाण्या निखाम्यहम् ॥३॥
 विद्यालय-कार्येषु व्यस्तोऽसमर्थोऽभ्यहम्परम् ।
 समयाभावतो भावा उत्पद्यन्ते क्षण-क्षणम् ॥४॥
 पूर्वं वै व्याधि-ग्रस्तोऽहमधुना त्वाधि-वाधितः ।
 सुख-शान्ति-विहीनोऽस्मि दीनो साधन-निर्धन ॥५॥
 मार्ग-निर्देशको यस्य गतो वीरः सुरालयम् ।
 चरित्र तस्य यावद्धि न लिखामि महात्मनः ॥६॥
 तावन्न मानसी शान्ति पश्याम्यत्र वदाचन ।
 अतोऽवकाशे ग्रीष्मस्यागस्तमासे गति-प्रदे ॥७॥
 चैल गतोऽनुजावासे रामलाल-निमत्रित ।
 प्रयामस्तेत्र वालाना कृतोऽय पाप-नाशनः ॥८॥
 पुण्यप्रद शुभाधारः सर्व-लोक-सुखावह ।
 यशदोऽखिललोकेषु बाल-वृद्ध हितावहः ॥९॥

इस पुस्तक का आरम्भ मैंने वरनाला में—ग्रीष्म ऋतु में, गर्मी में तब रहे
 जून मास में, मन् १९६४ में जब कि सब लोग शोकाकुल थे—किया था ।
 मसार्ईस मई को अग्नि के समान तपते हुए मध्याह्न में भारत-भास्कर श्री जवाहर
 के अस्त होने पर मेरे शोक उद्गार निकले कि लोचनाथ नेहरू का जीवन देव-
 वाणी में निखूँ । विद्यालय के कामों में व्यस्त, समयभाव से मैं सर्वथा असमर्थ
 था, पर भाव प्रतिक्षण उठते रहते थे । व्याधि-ग्रस्त तो मैं पहले ही था ।
 अब व्याधि (मानसी व्यथा) से भी वाधित हुआ सर्व साधनों से निर्धन सुख-
 शान्ति से हीन रहने लगा, जिसका कि मार्ग निर्देशक देव लोक चला गया ।
 जब तक उस महात्मा का चरित्र नहीं लिखता, तब तक किसी प्रकार भी मान-
 सिव शान्ति नहीं प्राप्त कर सकता । इसलिए अनुज रामलाल से निमत्रित
 उमके घर चैल में जाकर यह पाप नाशन, पुण्यप्रद, सुखकर, सर्वलोक सुखा-
 वह सभी सीवों में सुख देने वाला, बाल-वृद्धों को हितकारी, मित्रमो एव हरिजनो

म्नीषा हरिजनानां बुद्धि-वृद्धि-प्रदायक ।
 दीन निर्धनहीनानां ऋद्धि-मिद्धि-विधायक ॥१०॥
 सर्व पापहरो नियम्य मय्य मंगल-कारक ।
 नष्टानां पथ भ्रष्टानां क्लिष्टानां कनेका हारक ॥११॥
 तथाच—स्त्रिष्टान्दग्धममामे हि चतुःपष्टिममन्विते ।
 एकोनविंशपूर्वे हि वपन्तविति-वपेति ॥१२॥
 शीतानिल-जल-प्राये सर्व-जीव-मुखावहे ।
 मिद्धाश्रमे मिद्धि-प्रदे रामलाल-गृह शुभे ॥१३॥
 गीतादत्त-ममीपात्र-लखनी मनि-शोषके ।
 चैलाञ्चलेऽहमन्वित महामानव जीवनम् ॥१४॥
 लिखनामन्विताधार पठना पापनाशनम् ।
 वदता मन्वदावार शृण्वता शुभद परम ॥१५॥
 बालानामनिलोदना लीला-व्यास्याम्पद मुदम् ।
 विप्राणां मति साहस्य रातन्यानां बल-प्रदम् ॥१६॥
 वैद्यनां वय्यतावश्य धन-पान्य-विधायिनी ।
 म्नीषा हरिजनानां च गौरव गुणदर्शितम् ॥१७॥
 एत प्राल प्रयामोर्जि मपना भाव-यागल ।
 पान्म मननो लोह काञ्चनव प्रपद्यत ॥१८॥

का बुद्धि वृद्धि दन वाचा दीन निर्धन गीना का ऋद्धि मिद्धि विधाना, नित्य
 मय्य पापहारी मय्य मंगलकारी नष्ट पथभ्रष्ट वरग नागी रागा व वरग परम
 वाता उम युा पुत्र्य क मय्यन जीवन विपयन का वात प्रयाम मीन विद्या है ।

और मन १२६४ क वपुन वरपी वाय गीन जन वापु वात मय्य जीवा का
 गुणद अगन्त माम म मिद्धिप्र मिद्धाश्रम म श्री रामनाथ क गुन द् म उनका
 मुपुत्री गीना म लखनी दवान व म्यागीश्रम मकर—मैत य विपयन वाया व
 लिपममन्त आधार, पठन वाता रा पापनाशक कान वाता का गुणानि दन वाता
 गुनन वाता रा परम शुभद श्री चतन रातना का लीला-व्यास्य तथा प्रमति का
 मय्यद, विद्या का मन्विताधार न्न दाना मन्विता का वचन, शैला का अस्त्र
 हो यत रा य विधायिनी यथाकरण बुविन दन वाता, मिथया तथा हरिजनो का
 राधी गुण द्वारा दर्शित गौरव दन वाता महामानव जीवन विद्या । दम
 प्रकार मरा वात प्रयाम भीषी जवाहर जीवन क गुन भावा म मित कर मय्य
 हा मया वरार्जि पारम म मितकर तो ताहा भी मय्य वन ज्ञाना है ।

किंचिदात्म-परिचयः

सादापत्तां जयस्वास्थ्ये पुरे परमशोभने ।
 वश सारस्वतीयानां विप्राशामतिपात्रनः ॥१॥
 तत्रामुदुत्तमोरामं पूज्य. पण्डित मण्डनः ॥
 धार्मिक सत्य संकल्पो नित्यं मन्मार्गं दर्शक ॥२॥

तत्रानिपूज्यानां सद्ग्राह्य-गुणप्रगयवानां धीमतामुत्तमरामाणां
 गृहे—श्री माणाराम, श्री ठाकुरदत्त, श्री आणारामरचेनि पुत्र त्रयमुत्पन्नम् ।
 तेषु—मध्यमाना विद्वद्भोजना, कर्म काण्ड कोविदानां, गीतोक्त—' शमो-
 दमस्तपः शौच क्षान्तिरात्रैरमेत च । ज्ञान विज्ञानमास्तिक्य ब्रह्म कर्म-
 स्त्रभावजम् ।' इति गुणविशिष्टानां, विज्ञे सामान्यानामपि वृत्तेऽसामान्यानाम्,
 वृत्त्या साधारणानामपि धृत्यासाधारणानाम्, स्वभावेन शान्तानामप्य-
 सद्भावेपु विक्रान्तानाम् प्रकृत्या सौम्यानामपि शास्त्रसम्मतमतपालनानुशासन-
 कठोरानाम् गुरु देव द्विजातिधिपूजनमदृश्ये सदोद्गाराणामपि व्यसनाप्यय-
 कृपणानाम्, धर्म-धुरन्धराणाम् अधर्म-विधुराणाम्, दीनजनोदारेऽहर्निश सत्यना-
 नाम्, प्रतिक्षणं हरि हर-स्मरणपरायणानाम्, सुर-त्राण्यो गुरु गणयाञ्च्यतितरा
 लम्ब रहस्यानाम्, श्रुति स्मृति दर्शन-धर्मशास्त्र राजनीतिशास्त्र अर्थशास्त्र
 श्रीमद्भागवत रामायण महाभारत ज्योतिषायुर्वेद — श्रीगुरुधन्य-साहित्य-शास्त्र-

परम सुन्दर अती नगरी की सादापत्ति मे सारस्वत ब्राह्मणों का अति
 पवित्र वन है । उस वन मे पण्डित मण्डल की शोभा, धार्मिक, सत्य-सङ्कल्प,
 नित्य-सन्मार्ग दर्शक पूज्य श्री उत्तमराम जी हुए । उनके घर मे श्री माणा राम
 जी, श्री ५० ठाकुर दत्त जी तथा श्री ५० थावण राम जी—नाम से तीन
 पुत्र उत्पन्न हुए । उन तीनों मे मे मध्यम, विद्या धन से धनवान् कर्म वाण्ड-
 कोविद, गीतोक्त वन, दम, तप, शौच, क्षमा, सरलता, ज्ञान विज्ञान, एव आस्ति-
 कता-गुणों को धारण करनेवाले, सम्पत्ति मे सामान्य होते हुए भी चरित्रम असा-
 मान्य, वृत्ति मे साधारण होते हुए भी धृति मे असाधारण, स्वभाव से शान्त होते
 हुए भी अगद्व्याधो मे आश्रमण क्षीन, प्रकृति से सौम्य होते हुए भी शास्त्र सम्मत
 मत पालने के लिए अनुशासन मे कठोर, गुरु, देव, द्विज एव अतिधि पूजनार्थ
 मध्यम मे गदा उदार होने हुए भी ध्यमनार्थ अपव्ययो मे शृणु, धर्म-धुरन्धर,
 अधर्म-रहित दीन-जना के उदार मे रात दिन मनेष्ट, प्रतिक्षण हरि-हर स्मरण-

नाटक-साहित्येतिहास्य शारीरार्थीनीन प्रास्य नागरिक-गाथा ग्रन्थेषु च पारङ्गना-
नाम्, पूज्यपादानां श्री १० टाकुररत्न शर्मणा गृहे—ब्रह्मा-पारकथ गुमा मन्थी
पूज्याया मातृदेव्या पन्चमनाशचतस्रश्चात्मना टपन्ना । साधनार्थकानुजा
पूणादेवी पन्चध्यानरत्न उनेम । तत्रापि च पूज्या श्री रामप्रताप वेद धार्या
देव-वाण्या सुर-वाण्या गुरु-वाण्या गौर-वाण्याश्च पारङ्गता एम ए वी डी,
इत्युपाधिसिद्धि, इदानीं एम ए वी डी इत्युपाधि सङ्गतया म्यानुष्य म्
पन्था निरुत्तमया मद् विरता गिता मन्थाने रिताम्यामत्यान मृत्तिसर्त-
कुर्वन्ति । तेषामनुचोऽहमस्मि ! मदनुची रामनाथ रामनाथयन्त्री कृपि कर्मणा
जीवत । पन्चमन्थ श्री रामनाथ विन्दी प्रभाकर, विशारद, श्री डी
एम ए वी एड टपारिसिद्धि, सुर-वाण्या, गुरु-वाण्या, गौर-वाण्या शारिणी
प्रदण्योऽनुनाङ्गल भूमिमपियमिति ।

परायण, मस्कृत तथा गुरु-वाणी के पूर्ण स्मरण, श्रुति स्मृति, दर्शन, धर्म-शास्त्र,
रात्रनीति शास्त्र, अर्थ शास्त्र, श्रीमद्भागवत, रामायण, महाभारत, योगशास्त्र,
ब्राह्मवेद, श्री गुरु ग्रन्थ साहित्य, वाच्य, नाटक, साहित्य, इतिहास, प्रार्थना,
अर्वाचीन, ग्राम्य एवं नागरिक माया-ग्रन्थो न पारङ्गा, पूज्य पाद श्री १० टाकुर
दन शर्मा जी के घर खदा, मरतना एवं श्रमामयी पूज्य देवी-पदपदा माया
इन्देवी में पाच पुत्र तथा चार पुत्रिण उल्लेख हैं । एवं श्री श्री ब्रह्मि पुर्ण देवी
और पाच नाई हैं ।

तेषु च धार्य एव गोपालने चोपक्रमणि च संगतः महेश्व-श्री गुरु ग्रन्थ
गाह्य पर्यन्तो गुरु वाणीम् धीमद्भागवतपर्यन्ताच्च मुरवाणी गृह एव
परम-पूज्य-विष्णुसादेशपठन उपाध्याय-दृश्यमपि चाकरयम् । तदनु शान्तेकामु
संस्कृत पाठशालामु—विरला संस्कृत-महाविद्यालये पिलान्याम्, देहरादूनस्थे
श्री लक्ष्मण संस्कृत महाविद्यालये च परीक्षा-प्रणालीमनुगृह्याध्ययनं समाप्त्या-
धुनाध्यापनद्वया वर्तमानं । पञ्चाशत्तर्दीयोऽपि लेखन-कर्मणि यत्न एवाम्मिन्
महत्प्रयासानुभवमाध्ये गुरुतर-कार्ये प्रवृत्तोऽस्मि । तथापि जागर्यैव विरसामो यत्—

एवं बाल-प्रयायोऽपि सुलभो भारयोगतः ।

पारसं संगत्वे लौहं काष्ठचनस्य प्रपद्यते ॥

ओ३म्

'शंकर शं करोतु वः'

इन्ही मे से मे बनपन मे ही गोपालन तथा कृपि कर्म मे लगा हुआ माथ
ही गुरु ग्रन्थ गाह्य पर्यन्त गुरु-वाणी एव श्रीमद्भागवत पर्यन्त मुरवाणी को
घर मे ही पूज्यपाद श्री पिताजी से पठ कर उपाध्याय-कार्य भी करता रहा ।

उसके बाद अनेको संस्कृत पाठशालाओ मे—विरला संस्कृत-महा-विद्यालय,
पिलानी तथा श्री लक्ष्मण संस्कृत-महा-विद्यालय, देहरादून मे परीक्षा-प्रणाली
से अध्ययन समाप्त कर अब संस्कृत अध्यापक के रूपमे पचास के पास पहुँचते
हुए भी लेखन-कार्य मे बाल बुद्धि ही इस बड़े प्रयास एव अनुभव माध्य गुरुतर
कार्य मे प्रवृत्त हुआ हूँ । फिर भी यह विश्वास बना हुआ है कि मेरा यह बाल-
प्रयास भी शुभ भावो के योग से सफल होगा, क्योंकि पारस से छूकर लोहा भी
स्वयं बन जाता है ।

ओ३म् भगवान् श्री शंकर आपका कल्याण करें ।



आभार-प्रदर्शनम्

यो देव-सर्व-भूतेषु व्याप्तः सर्वत्र सर्वदा ।
नमस्तस्मै नमस्तस्मै नमस्तस्मै नमोनमः ।

मैं पञ्जाब राज्य में—उच्च विद्यालय का, अनेको बभावो से ग्रस्त पसुन अध्यापक हूँ : इसीलिए मेरी यह छोटी सी रचना भी—“वर्ष द्वय रहि मम गृह-काँना, जैसे परम रूपन कर मोना ॥”

अब कुछ देश-भवन, सस्कृति एव मस्कृति के अनुरागी सज्जनों द्वारा प्रेरित तथा प्रोत्साहित इस प्रकाशन के गुह्यतर कार्य में प्रवृत्त हुआ हूँ ।

बड़ी ही शुभ-भावनाओं से चुन चुन कर भोली में रखे हुए, भी इन गद्द-पुण्यो को अपने इष्ट स्थान पर पहुँचाने में सर्वथा असमर्थ था, यदि मेरे ब्रह्मालु, सहृदय, सज्जनपित्र, महयोगी एव महापुरुष न बनते । सो मैं इन आदरणीय महा-शुभाशों का हादिक धन्यवाद करते हुए अनन्त-भक्ति भगवान् से प्रार्थना करता हूँ कि इन के मन में भारतीय सस्कृति एव सभ्यता के पुनीत ध्योन, सस्कृत-के प्रति यद्वा प्रेम तथा शुभ कार्यों में महयोग की सादर्य भी निरन्तर भावनाओं का साथ दिन दिन बढ़ती रहे ।

जिन पूज्य समादरणीय, पुष्प विभूतियों में शुभाशीर्वाद तथा बहुमूल्य मम्मतिर्यो देवर कृतार्थ किया है, उन्हें अत्यन्त कृतज्ञता पूर्वक प्रणाम करता हूँ ।

पुस्तक में दिये हुए चित्रों तथा नामों वाले सज्जनों के सज्जाओं की पुष्पाहृतियों के आशय से ही इस पुस्तक-प्रकाशन रूपी पत्र-कुण्ड से उठी पुष्प-पुञ्ज धूम-राशि विमत-विपाकत निरव-को निविष, निर्दोष तथा सौरभान्वित करने में समर्थ होगी ।

मान्यवर सहयोगी-वर्ग में मैं कुछ के नाम सादर लिख रहा हूँ :—

अनन्त श्री विभूषित परम पूज्य दादा जी श्री स्वामी वर्ण प्रकाश जी, पूज्य अर्द्रय श्री प० नाथुरामजी शास्त्री, दर्शनाचार्य, आराधमर्ग-पूज्य प० श्री-वाशीराम जी आपुर्वेदाचार्य, श्री मुन्शीलाल जी शास्त्री, एम० ए०, एम० बी० एल०, आपुर्वेदाचार्य, श्री ओम प्रकाशजी शास्त्री, एम० ए०, बी० टी०, श्री जगन्नाथ जी शास्त्री, ओ० टी०, श्री प० विजोरी दावजी शास्त्री, श्री बंध

धानू राम जी आयुर्वेदाचार्य, श्री पं० हरिदेव जी दासरी, वैशम्पायण, श्री पं०
 मोहन लाल जी कालिया, एम० ए०, एल० एच० बी०, एम० पी० (रात्र०)
 प्र० अ० श्री गदानन्द जी, एम० ए०, बी० टी०, प्र० अ० श्री म० मन्मथगिह जी,
 एम० ए०, बी० टी०, प्र० अ० श्री म० जलीर गिह जी, एम० ए०, बी० टी०,
 श्री म० जानकी दास जी, श्री म० पञ्चम दास जी, श्रीमती दुर्गादेवी, धर्मपत्नी,
 मेजर डा० लालचन्द जी अग्रवाल, श्रीमती शकुन्तला देवी, धर्मपत्नी श्री
 दरबारी लाल जी एडवोकेट, प्रधान स० ध० बॉनेज, धरनाभा, श्रीमती
 मसवन्त कौर, धर्मपत्नी, श्री स० हर्नामगिह जी आहलुवालिया, श्रीमती कला-
 देवी धर्मपत्नी, श्री प० ओम् जी अग्नि, ज्योतिषी, श्री डा० मन्तोपतिह जी, श्री
 स० गुरु देवसिंह जी आहलुवालिया, पञ्चायत ऑफीसर, पञाब, श्री मा० प्यारा-
 लाल जी, श्री ला० रामचन्द्र ऊषाराम जी, श्री नारायण दत्त जी, श्री
 जगदीशचन्द्र जी जौहर, भाई शान्ति लाल जी बनमानी शेठ, श्री पं० मुलशर्मा
 जी हीजरीवाले, श्री बलदेव कृष्णजी जिन्दल एम०, ए० ।

अन्त मे—इतना सश्रिय सहयोग होते हुए भी, इस पुस्तक के सम्पादन-कार्य
 को—अनेको हिन्दी-अंग्रेजी गद्य-पद्य मय पुस्तकों के लेखक श्रेण्य श्री ब्रह्मदेव जी
 शास्त्री विशेष व्यस्त रहते हुए भी, यदि अपने हाथ मे न लेते तो दिल्ली पहुँच कर
 भी मेरे लिए दिल्ली दूर ही थी । ऐसी अवस्था मे उन्ही के कार्य के लिए मैं
 उनका हार्दिक धन्यवाद करते हुए अत्यन्त आभारी हूँ ।

इन सज्जनों के पवित्र आश्रय होने पर भी यदि किसी पारदर्शी
 त्रिकालज्ञ महानुभाव को इस रचना मे मेरी कवित्व-कामना, रचना—रुचि, एव
 सामर्थ्य भावना की गन्ध आ जाय तो वहाँ पर तो केवल यही कहना युक्ति-
 समत होगा कि—

दीव्यन्तं भास्करं ध्रुवा रक्षोतोऽप्याह गवित ।

लोका मानपि पश्यन्तु सुप्रकाशमतिद्युतिम् ॥

अर्थ—चमकते हुए सूर्य के तेजस्वी रूप को प्रशंसा सुन कर, अभिमान
 मे आया हुआ जुगनू भी कहने लगा कि ऐ लोगो ! आप मेरे सुन्दर प्रकाश एव
 विशेष चमक वाले रूप को भी ध्यान से देखें ।

ओ३म् नमोऽस्तु सर्व-त्रिद्वय्य ।



लेखक (मध्य में) के साथ प्रेसराज श्री लोना राम (दाएँ), मिलनी राम ना
 आयुर्वेद मास्टर, भारती-भूषण अखिल साह मेरठ औद्योगिक परिसर
 (बाएँ) पीछे वि० कुलदीपचन्द्र खन्ने हैं ।

आप आरम्भ में ही दानु उदार, दण्डमय परमपथ भारतीय संस्कृति व मूल
 आपार मूल्य के अन्वय उपासक और नात हैं । आपकी पीछे यही यहाँ की तरह हस्त
 म पत्र-पत्रों आयुर्वेदिक प्रयोगों द्वारा लाया वस्तु, स्थिति तथा अथ अनाद्य राधा
 स्वस्थ मान मनी जा न पौरुष पावन कर रहे हैं ।

परम शादरणीय सर्वेभ्यः
तपोनिष्ठ श्री १०८

श्यामामा वृष्णानन्दजी महाराज
उदासीन उदांग

आप ५० वर्षों के निरंतर देश-
सेवा समाज गुधार एवं अपने
अचूक दिव्य आयुर्वेदिय प्रयासों
से दीन दुःखी रोगियों के उद्धार
में सतत हैं। असहाय रोगियों
को निःशुल्क चिकित्सा के साथ
अप्य उपयोगी सहायता भी
देंगे हैं।



ज्ञानवीर श्री सठ
श्रगनलाल जी, प्रधान
ध्या सं० सं० ध०
गौता भवन ममिति,
घरनाला (सगरूर)

आप सर्वे प्रभु
भक्त दंग सेवक
विद्यानुरागी भारतीय
संस्कृति तथा सभृत
के उपासक हैं।
विश्वशांति के लिए
आप अनेकों बड़े बड़े
यज्ञ करा चुके हैं तथा
प्रति वष करारते रहते
हैं।

धरद्वेय स्व० पण्डित
मन्मथ राम जी वैद्य-भूषण,
धरनाला (मंगरूर)

आपने आजीवन जायु-
वैदिक मिथ प्रयोगों द्वारा
दीन-दुःखी, अनाथ रोगियों
की सेवा की है। आपके
ही अमृत-वर्षा योगों द्वारा
आपके सुयोग्य पुत्र वैद्य
श्री राकेश कमान जी तथा
श्री मोहनलाल जी जन-
सेवा कर रहे हैं।



श्री आत्माराम जी, चतु-रोग-
विशेषज्ञ, भीरवी (बडिडा)

आपने लाखों आँवों की रक्षा
कर, अमित यश एवं पुण्य उपा-
जन किया है। आप विशेष
उत्साही, दयालु, देव-भेदक तथा
विद्यानुरागी चारुकर्ता हैं।
पञ्चाद में आँवों के मफल
चिकित्सकों में आपका नाम
जादर में लिया जाता है।

श्रद्धय श्री १० भक्तराम
जी प्रधान ब्राह्मण सभा
बरनाला (सगरूर)

आप भृगु महिना की
चमकारी वृत्ता द्वारा न
केवल भारतीया को ही
अपितु अनेको विदेशियो
को भी विद्वान के
समाधान कारक फला
देश से भारत एव भारतीय
संस्कृति के अनय उपा
सरु बना चुके है ।



श्री पवन कुमार
जी कासल प्रधान
श्री वृष्णसकीतन
मण्डल बरनाला
(सगरूर) ।

आप विनेष
उ माही देण
धम संस्कृति एव
संस्कृत व मेवक
सभाज सुधारक
तथा विद्यानुरागी
ना पुवन है ।
पारमिष प्रचार
वायो म आपयो
उपन मराणीय
है रिना । व
रगुना म आपक
मा म नगीमश्रद्धा
भक्ति और मरा
भारत का उपा
होना है ।